हरियाणा विधान सभा

की

कार्यवाही

28 नवम्बर, 1974

खंड 4, अंक 3

अधिकृत विवरण

विशय–सूची

वीरवार, 28 नवम्बर, 1974

	पृश्ठ संख्या
तारांकित प्रश्न एंव उत्तर	(3)1
बहिर्गमन	(3)42
गैर सरकारी संकल्पः–	
भारत सरकार से बिजली उत्पादन बढ़ाने के लिए हरियाणा राज्य की पर्यापत निधियां एलोकेट करने तथा आवश्यकता अनुसार पूरी बिजली उत्पादन करने के योग्य होने तक अन्य राज्यों से बिजली एलोकेट करने के लिए निवेदन करने के सम्बन्ध में।	(3)43
अध्यक्ष द्वारा निरूपण –	
न्यूजीलैंड से हाउस आफ रिप्रेजैटेटिव्ज के स्पीकर की अध्यक्षता में आए शिष्टमंडल के सम्बन्ध में।	(3)57
गैर–सरकारी संकल्प –	

भारत सरकार के बिजली उत्पादन बढ़ाने के लिए हरियाणा राज्य को पर्याप्त निधियां एलोकेट करने तथा आवश्यकता अनुसार पूरी बिजली उत्पादन करने के योग्य होने तथा अन्य राज्यों से बिजली एलोकेट करने के लिए निवेदन करने के सम्बन्ध में (पुररारम्भ)।	(3)58

हरियाणा विधान सभा

वीरवार, 28 नवम्बर, 1974

विधान सभा की बैठक, हरियाणा विधान सभा हाल, विधान भवन, सैक्टर–1, चण्डीगढ़ में 9:30 बजे हुई। अध्यक्ष (चौधरी सरूप सिंह) ने अध्यक्षता की।

तारांकित प्रश्न एंव उत्तर

Mr. Speaker:- Question hour.

Government Agricultural Farm

***968. Ch. Ram Lal Wadhwa**: Will the Minister for Agriculture be pleased to state –

(a) the district-wise number and names of Government Agricultural Farms in the State and the amount of income derived therefrom during the last three years, separately; and

(b) the Farm-wise details of production of wheat, gram and sugar-cane during the said period togetherwith commodity-wise yield per acre.?

कृशि मंत्री (चौ. भजन लाल):

(क) वर्श 1971–72, 1972–73 एवं 1973–74 में हरियाणा राज्य में राजकीय कृशि फार्मों की जिला वार संख्या तथा उनसे हुई आय का विवरण विधान सभा के पटल पर अनैक्स्चर 'ए' पर रखा जाता है।

(ख) वर्श 1971–72, 1972–73 एवं 1973–74 में गेहूं, चना एवं गन्ने की फसल का उत्पादन एवं प्रति औसत उपज के आंकड़े विधान सभी के पटल पर एनैक्स्चर 'बी' 'सी' तथा 'डी' पर रखे जाते हैं।

एनैक्स्चर –ए

वर्श 1971–72, 1972–73 एवं 1973–74 मे इन फार्मो से प्राप्त होने वाली आय की सूची

क्रम. स.	फार्म का नाम	जिला	वर्शो में होने वाली आय (रूपए)		
			1971–72,	1972–73	1973–74
1	2	3	4	5	6
1	बुड़िया	अम्बाला	6329.70	5754.93	कृशि विश्वविद्यालय को स्थानांत्रित किया
2	फतेहपुर	अम्बाला	2628.17	5301.46	35913.52
3	नबीपुर	अम्बाला	8892.51	18674.43	70830.92
4	छछरौली	अम्बाला	6881.54	3238.00	फलदार पौधों की नर्सरी स्थापित

					की गई
5	अम्बाला	अम्बाला	64614.75	62621.62	59713.53
6	दौलतपुर (नसीराबाद)	गुड़गावां	11991.85	25608.72	75608.10
7	सारूर पुर	गुड़गावां	4510.00	9109.36	3187.80
8	दुलेहरा कलां	नारनौल	2874.54	2398.95	6095.75
9	टेहपा	नारनौल	2468.89	4332.92	7981.65
10	रायपुरा	नारनौल	854.21	1509.19	3816.24
11	भूपानी	गुड़गावां	5028.00	9726.15	32980.58
12	सुओली	गुड़गावां	9562.60	4769.95	15301.78
13	सुवानी	गुड़गावां	4304.92	13331.90	19878.00
14	फिरोजपुर झिरका	गुड़गावां	2993.00	3634.38	4656.91

15	पिंगवान	गुड़गावां	6198.10	23847.56	57343.00
16	नूह	गुड़गावां	3084.50	3760.91	7228.43
17	करनाल	करनाल	129608.98	94403.34	लाभ हानि लेखा संकलित नहीं हुआ
18	श्यामगढ़	करनाल	110712.84	156703.85	172950.04
19	रामनगर	करनाल	5550.02	6356.32	24340.19
20	कलूलपुर खेड़ा	करनाल	1801.00	3363.60	3990.79
21	शेखपुर	करनाल	14932.00	10393.07	14929.99
22	चीका (गुला)	करनाल	7300.02	3987.61	14799.27
23	पुण्डरी	करनाल	73735.02	77388.04	171384.33

24	सेवाखेड़ी	करनाल	7231.00	9050.54	12016.92
25	श्रतगल	करनाल	9716.04	10415.00	13315.29
26	संतोख माजरा	करनाल	5771.38	6984.04	लाभ हानि लेखा संकलित नहीं हुआ
27	फतेहपुर	करनाल	97973.49	87468.29	119627.55
28	लाडवा	करनाल	20936.00	11461.45	8869.34
29	श्रोहतक	रोहतक	82730.25	66634.00	लाभ हानि लेखा संकलित नहीं हुआ
30	नया बांस	रोहतक	81.00	2286.00	लाभ हानि लेखा संकलित नहीं हुआ
31	खरखोदा	सोनीपत	4207.87	13619.39	18939.86

32	पंछी गुजरां	सोनीपत	6851.45	11339.51	1962.44
33	समर गोपालपुर	सोनीपत	66515.11	5413.95	कृशि विश्वविद्यालय को स्थानांत्रित किया
34	बीर सुनाल वाला	सोनीपत	5440.39	9974.38	10660.00
35	गुगाहेड़ी	सोनीपत	20410.16	39217.68	67668.42
36	नवान	महेंन्द्रगढ़	284.10	153.74	166.20
37	महेन्द्रगढ़	महेंन्द्रगढ़	969.73		कृशि विश्वविद्यालय को स्थानांत्रित किया
38	कोलावास	महेंन्द्रगढ़	56824.37	52787.27	133438.64
39	गोकुल पुर	हिसार	932.04	1992.23	5375.65
40	हांसी फार्म (जी.एस.	हिसार	328428.	301255.17	लाभ हानि लेखा संकलित नहीं

	एस.)		28		हुआ
41	हांसी (वी.एस.एफ.)	हिसार	79802.33	103635.65	लाभ हानि लेखा संकलित नहीं हुआ
42	बरवाला	हिसार	8510.30	15390.67	लाभ हानि लेखा संकलित नहीं हुआ
43	नतार	हिसार	3320.00	10242.65	6537.97
44	अंकबवाली	हिसार	8244.00	7634.45	लाभ हानि लेखा संकलित नहीं हुआ
45	फतेहाबाद	हिसार	9373.57	7674.17	5226.54
46	ड्डहुना	हिसार	8061.00	11584.00	13804.78
47	भगीयाना	हिसार	24839.00	56361.39	96134.95

48	हिसार	हिसार		1830052.76	लाभ हानि लेखा संकलित नहीं हुआ
49	सिरसा	हिसार	210846.31	210367.54	302514.17
50	किशनपुरा	जींद	198155.36	116127.00	लाभ हानि लेखा संकलित नहीं हुआ
51	अमृतसर	जींद	5654.86	8733.28	लाभ हानि लेखा संकलित नहीं हुआ

एनैक्स्चर –बी

वर्श 1971–72, की फार्म वार/फसलवार प्राप्त की गई कुल उपज तथा औसत उपज प्रति एकड़ की सूची

क्षेत्र एकड़ों में उपज तथा औसत उपज क्विंटलों में

क्र. स.	जिला/फार्म का नाम	गेहूं			चना			गन्ना		
		बोया गया कुल क्षेत्र	कुल उपज	औसत उपज	बोया गया कुल क्षेत्र	कुल उपज	औसत उपज	बोया गया कुल क्षेत्र	कुल उपज	औसत उपज
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
	अम्बाला									
1	अम्बाला	77.80	480.82	6.18	24.35	48.13	1.78			
2	फतेहपुर	16.44	62.40	3.80	14.25	24.18	1.74			
3	न्बीपुर	23.50	169.50	7.20						
4	बुड़िया	9.00	64.05	7.116	5.00	20.87	4.174	5.90	1169.33	198.02

5	छछरौली	14.40	102.00	7.09				8.06	823.00	122.00
	करनाल									
6	करनाल	65.40	634.41	9.70	2.38	6.50		3.01	638.81	212.94
7	शामगढ़	44.54	719.30	16.15	4.77	9.85	2.08	2.87	574.00	200.00
8	फतेहपुर	55.92	585.00	10.46						
9	पुण्डरी	47.66	478.60	10.04						
10	काबुल खेडा	8.12	35.70	4.40						
11	संतोख माजरा	15.95	108.72	6.82	7.47	18.90	2.53			
12	रतगल	23.15	292.68	12.64						
13	चीका	13.71	93.90	6.85	4.50	19.47	4.32			
14	शेखपुरा	21.91	187.42	8.55						

15	सेवा खेड़ी	27.09	290.65	10.78						
16	राम नगर	24.54	161.40	6.58						
17	लाडवा	32.48	370.20	11.40						
	रोहतक									
18	रोहतक	46.00	386.86	8.40				5.37	959.58	178.77
19	समरागोपालपुर	43.40	365.23	8.42				1.00	214.05	214.05
20	गुगांहेड़ी	29.11	151.05	5.19	10.36	11.70	1.13			
21	नयाबांस	0.25	1.41	5.64						
22	वीर सुनारवाना				19.20	104.30	5.43			
	सोनीपत									
23	खरखोदा	20.96	123.39	5.89	2.00	2.01	1.00			

24	पंछीपुजरां	20.70	226.02	10.92						
	हिसार									
25	हिसार फार्म	701.00	6348.84	9.05	110.00	381.27	3.47	(रवी 1971–72 को उपज के साथ हरियाणा कृशि उद्यो निगम लिया गया।)		
26	कृशि स्टेशन हांसी	218.85	2316.02	10.58	165.65	456.26	2.75			
27	ब्लाक सीड़ फार्म हांसी	27.36	414.34	15.14	30.00	77.20	2.57			
28	अकांवाली	10.50	65.25	6.21	14.50	27.66	1.91			
29	बरवाला	7.82	84.00	10.74	11.82	59.04	4.99			
	सिरसा									
30	सिरसा फार्म	86.37	978.23	11.33	27.25	75.95	2.79			
31	मगोयाना	24.00	180.60	7.53	29.00	55.20	1.90			

32	नतार	11.66	121.35	10.41						
33	फतेहाबाद	11.44	139.50	12.19	11.77	83.68	7.11			
34	भूना	15.37	122.42	7.96	4.40	5.92	1.35			
	गुड़गावां									
35	पिंगवान	9.00	80.94	8.99	8.57	10.62	1.24			
36	दौलतपुर (नसीराबाद)				37.50	49.20	1.30			
37	सोली	25.42	255.00	10.03						
38	सिवारी	24.12	184.73	7.66						
39	सरूरपुर	22.88	158.06	7.09		2.21	5.50	2.49		
40	नूह	4.40	10.41	2.37	2.35	11.60	18.30	1.58		

41	फिरोजपुर झिरका	12.07	28.38		8.37	1.37	1.53	1.12		
42	भोपनी	15.45	129.24			4.05	15.56	3.87		
	जींद									
43	किशनपुरा	89.10	947.65		10.66					
44	अमृतसर	12.46	115.60		9.28	11.70	44.20	3.78		
	भिवानी									
45	क्योहलावास	9.96	113.49		11.39	26.15	97.17	3.72		
46	नवन					5.00	2.32	0.46		
	महेन्द्रगढ़									
47	दुलहेरा कलां	6.50	35.58		5.47	16.35	10.20	0.62		
48	टेहरा	12.20	39.31		3.22					

49	गोकलपुर					22.04	1.98	0.09		
50	रामपुरा					5.94	3.73	0.63		
51	महेन्द्रगढ़	2.32	14.10		6.08	3.50	1.84	0.53		

एनैक्स्चर –सी

वर्श 1972–73, की फार्म वार/फसलवार प्राप्त की गई कुल उपज तथा औसत उपज प्रति एकड़ की सूची

क्षेत्र एकड़ों में उपज तथा औसत उपज क्विंटलों में

क्र. स.	जिला/फार्म का नाम	गेहूं			चना			गन्ना		
		बोया गया कुल क्षेत्र	कुल उपज	औसत उपज	बोया गया	कुल उपज	औसत उपज	बोया गया	कुल उपज	औसत उपज

					कुल क्षेत्र			कुल क्षेत्र		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
	अम्बाला									
1	अम्बाला फार्म	50.00	144.11	2.88	22.00	36.06	1.64			
2	फतेहपुर	27.18	171.79	6.32	7.62	3.00	0.39			
3	नबीपुर	20.70	79.00	4.30	4.06	10.55	2.60			
4	बुड़िया	हरियाणा कृषि विश्वविद्यायल को बदला गया।								
5	छछरौली	11.25	76.35	6.78						
	करनाल									
6	करनाल फार्म	45.75	377.15	8.24	7.00	10.80	1.54	3.00	5.64	188

7	शामगढ़	72.67	507.63	6.98				4.80	754.31	156.64
8	फतेहपुर	54.95	509.92	9.26	4.50	27.15	6.03			
9	पुण्डरी	37.25	350.55	9.41	5.62	37.16	6.60			
10	कबुलपुर खेडा	10.75	33.00	3.07						
11	संतोष माजरा	14.43	60.99	4.23	12.70	30.26	2.39			
12	श्रतगल	23.25	200.07	8.60	0.30	0.75	2.26			
13	चीका	10.75	35.00	3.26	9.45	15.80	1.67			
14	शेखपुरा	16.75	81.95	4.89						
15	सेवा खेड़ी	25.30	206.37	8.16						
16	राम नगर	22.50	123.10	5.47						
17	लाडवा	34.10	284.07	8.33						

	रोहतक									
18	रोहतक फार्म	41.72	347.14	8.32				2.35	131.45	55.94
19	समरागोपालपुर	56.78	400.53	7.05				3.00	737.65	250.88
20	गुगांहेड़ी	25.90	53.73	2.45	9.56	8.60	0.90	1.00	290.00	280.00
21	नयाबांस							1.90	16.14	8.35
22	वीर सुनारवाना	5.85	25.75	4.26	19.12	109.89	5.74	9.75		
	सोनीपत									
23	खरखोदा	21.00	69.60	3.11						
24	पंछीपुजरां	21.35	140.00	6.56						
	हिसार जोन									
25	थ्हसार फार्म	710.75	2485.80	3.50	106.00	312.79	2.85			

26	कृशि स्टेशन हांसी	248.88	1618.25	6.50	34.55	42.75	1.24			
27	ब्लाक सीड़ फार्म हांसी	39.62	475.51	12.00	12.22	41.00	3.40			
28	टकांवाली	15.00	41.03	2.74	10.50	15.50	1.48			
29	बरवाला	8.70	96.70	11.12	1.37	5.49	4.00			
	सिरसा जोन									
30	सिरसा फार्म	69.25	427.00	6.17	39.50	57.87	1.48			
31	मगोयाना	24.06	122.08	5.07	16.72	26.70	1.60			
32	न्तार	12.00	54.15	4.50						
33	फतेहाबाद	9.55	45.00	4.71	12.50	11.97	8.96			
34	भूना	8.23	43.12	5.24						

	गुड़गावां									
35	पिंगवान	28.62	138.22	4.85						
36	दौलतपुर	11.00	43.52	3.96	19.91	5.54	0.28			
37	सोअली	25.50	121.88	4.78						
38	सिवारी	27.02	213.14	7.90						
39	सरूरपुर	24.50	81.70	3.34						
40	नूह				12.27	12.75	1.04			
41	फिरोजपुर झिरका	7.20	38.22	5.31	1.25	2.64	2.11			
42	भोपनी	17.35	134.58	7.76	4.13	18.66	4.52			
	जींद									
43	किशनपुरा	93.97	621.10	6.61						

44	अमृतसर	10.37	96.72	9.33	8.92	14.12	1.53			
	भिवानी									
45	कोहलावास	20.50	123.13	6.00	41.95	68.16	1.63			
46	मवन									
	महेन्द्रगढ़									
47	दुलहेरा कलां	13.00	66.12	5.09	2.35	6.69	2.85			
48	टेहरा	10.80	40.02	3.71						
49	गोकलपुर	6.70	63.01	9.40	1.97	2.45	1.24			
50	रामपुरा				5.37	8.61	1.68			
51	महेन्द्रगढ़	हरियाणा कृषि विश्वविद्यायल को हस्तानान्तरण कर दिया गया।								

एनैक्स्चर –डी.

वर्श 1973–74, की फार्म वार/फसलवार प्राप्त की गई कुल उपज तथा औसत उपज प्रति एकड़ की सूची

क्षेत्र एकड़ों में उपज तथा औसत उपज क्विंटलों में

क्र. स.	जिला/फार्म का नाम	गेहूं			चना			गन्ना		
		बोया गया कुल क्षेत्र	कुल उपज	औसत उपज	बोया गया कुल क्षेत्र	कुल उपज	औसत उपज	बोया गया कुल क्षेत्र	कुल उपज	औसत उपज
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11

	अम्बाला									
1	अम्बाला फार्म	46.10	246.10	5.34	14.82	23.63	1.59			
2	फतेहपुर	22.44	153.20	6.83	2.40	0.70	0.29			
3	नबीपुर	13.97	75.01	5.37	2.30	6.11	2.66			
4	बुड़िया	हरियाणा कृशि विश्वविद्यायल का बदलना।								
5	छछरौली	डिफैंस परसनल विडोज कालोनी तथा नर्सरी प्रोडैक्शन कार्य का स्थानान्तरण किया जाना।								
	करनाल									
6	करनाल फार्म	47.37	447.15	9.44	5.12	18.40	3.59			
7	शामगढ़	77.29	51.00	6.60						
8	फतेहपुर	52.74	489.50	9.20	4.68	18.10	3.87			

9	पुण्डरी	39.85	450.76	11.31	4.09	17.22	4.21	1.00	254.42	254.42
10	कबुलपुर खेडा	6.12	43.25	7.07						
11	संतोष माजरा	15.40	46.00	2.99	11.17	20.70	1.85			
12	रतगल	23.75	197.89	8.33						
13	चीका	13.20	87.20	6.81	7.97	17.20	2.16			
14	शेखपुरा	24.25	313.52	12.93						
15	सेवा खेड़ी	25.40	256.00	15.98				3.00	455.70	151.90
16	राम नगर	24.50	139.27	5.88						
17	लाडवा	32.16	222.77	6.93						
	रोहतक									
18	रोहतक फार्म	37.97	427.32	11.25						

19	समरागोपालपुर	हरियाणा कृशि विश्वविद्यायल, हिसार को स्थानान्तरण किया गया।								
20	गुगांहेड़ी	30.66	197.61	6.45	14.70	35.06	2.39			
21	नयाबांस	14.11	8.40	0.60						
22	वीर सुनारवाना				12.36	52.00	4.21			
	सोनीपत									
23	खरखोदा	17.55	130.80	7.45						
24	पंछीपुजरां	8.87	74.44	8.39						
	हिसार									
25	हिसार फार्म	532.10	4340.69	8.15	71.40	244.32	3.42			
26	कृशि स्टेशन हांसी	288.60	1556.87	5.55	69.93	82.16	1.18			
27	ब्लाक सीड़ फार्म	46.35	494.99	10.68	20.84	20.20	0.97			

	हांसी									
28	टकांवाली	11.53	68.74	5.96	12.37	20.98	1.63			
29	बरवाला	10.00	99.00	9.90	9.32	41.94	4.47			
	सिरसा जोन									
30	सिरसा फार्म	13.75	764.55	9.13	17.00	70.23	4.13			
31	मगोयाना	28.75	179.09	6.23	17.00	42.40	2.49			
32	नतार	11.50	88.00	6.96						
33	फतेहाबाद	7.61	55.40	7.28	14.00	24.90	1.78			
34	भूना	15.35	183.70	11.97	1.45	4.95	3.41			
	गुड़गावां									
35	पिंगवान	10.65	158.85	14.92						

36	दौलतपुर	5.20	17.20	3.31	17.27	0.85	0.05			
37	सोअली	2.50	147.00	7.17						
38	सिवारी	24.50	190.00	7.76						
39	सरूरपुर	15.17	112.48	7.41						
40	नूह				9.90	9.03	0.91			
41	फिरोजपुर झिरका				1.00	2.70	2.70			
42	भोपनी	16.22	91.20	5.63	4.17	7.58	1.82			
	जींद									
43	किशनपुरा	88.35	519.00	5.87						
44	अमृतसर	15.70	141.47	9.01	9.01	42.47	4.67			
	भिवानी									

45	कोहलावास	14.00	126.08	9.01	38.52	56.05	1.46			
46	मावन				11.05	5.09	0.46			
	महेन्द्रगढ़									
47	दुलहेरा कलां	3.45	17.10	4.96	1.40	1.44	1.08			
48	टेहरा	10.20	20.00	1.96						
49	गोकलपुर	5.90	24.78	4.20	6.80	1.01	8.15			
50	रामपुरा	– उपलब्ध नहीं है –								
51	महेन्द्रगढ़	हरियाणा कृशि विश्वविद्यालय को स्थानातरित।								

चौ. राम लाल वधवा: क्या मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि इन्होंने जो स्टेटमैंट्स दी हैं, उसक हिसाब से 1937–74 में 1971–72 के मुकाबले में पैदावार कम क्यों हुई है? मैं जिला करनाल की बात कर रहा हूं। आप हीट को ही ले लीजिए। शामगढ़ की ऐवरेज ईल्ड 16.15 है, जबकि 1973–74 में यह 6.60 रह गई है, मेरे ख्याल में ये क्विंटल प्रति एकड़ के हिसार से ही होंगे?

चौ. भजन लाल: स्पीकर साहब, जो 1971–72 की फिग्र्ज हैं, वे प्रति हैक्टेयर के हिसार से हैं, और जो 1973–74 की फिग्र्ज हैं, ये प्रति एकड़ के हिसाब से हैं।

चौ. भजन लाल: आपको भी तो कुछ हिसार लगाना चाहिए था। 16 और 6 को देखकर ही आपको समझ जाना चाहिए था कि अढ़ाई गुना के बराबर है इसीलिए हैक्टेयर ही होगा। (व्यवधान)

Mr. Speaker: He has now replied and you may put the supplementary which arises out of the answer.

चौ. राम लाल वधवा: उस हिसाब से भी देखा जाए, तो थोड़ा सा डिफ्रैन्स पड़ता है।

चौ. भजन लाल: यह तो कुछ भी नहीं बनता।

चौ. राम लाल वधवा: इसी तरीक से फतेहपुर की ऐवरेज ईल्ड देख लीजिए। 1971–72 और 1973–74 की ऐवरेज

ईल्ड 2.40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर और 3.80 क्विंटल प्रति एकड़ है। इसमें आप हिसाब लगाकर देख लीजिए काफी डिफ्रैंस है। क्या मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि प्रोडक्शन में जो कमी हुई है, इसका क्या कारण है?

चौ. भजन लाल: अध्यक्ष महोदय, इसमें कोई शक की बात नहीं है कि 1971–72 की प्रोडक्शन के मुकाबले में पिछले दो सालों की प्रोडक्शन घटी है। इसके दो मेन रीजन्ज हैं। 1972–73 में जो गर्म हवा चली, उससे हमारी फसलों को काफी नुक्सान हुआ, जिस वजह से यह प्रोडक्शन घटी है। इसी तरह से 1973–74 में भी ठण्डी हवा की वजह से फसलों को काफी नुक्सान पहुंचा, जिसकी वजह से प्रोडक्शन घटी है। इसमें कोई शक की बात नहीं है कि प्रोडक्शन थोड़ी सी घटी है।

चौ. दल सिंह: स्पीकर साहब, इस सवाल में सरकार से यह भी पूछा गया है कि गवर्नमैंट ऐग्रीकल्चरल फार्म्ज की इन्कम क्या है सरकार ने जो स्टेटमैंट दी है, इसमें डिस्ट्रिक्ट जींद के किशनपुर फार्म की इन्कम के बारे में कोई फिग्र्ज नहीं दी हैं। क्या इसका मतलब यह हुआ कि कोई इन्कम नहीं हुई? अगर यह मतलब नहीं है, और इन्कम हुई है तो कितनी इन्कम हुई है?

चौ. भजन लाल: स्पीकर साहब, बात ऐसे है कि 1973–74 के अकाउन्टस अभी तक आडिट नहीं हुए इसलिए उसमें

इन्कम नहीं दी है उन सब फार्मों की, जिनका आडिट हो गया है, इन्कम हमने स्टेटमैंट में दी हुई है।

चौ. दल सिंह: मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि उन्होंने जिस गवर्नमैंट फार्मों की लिस्ट दे रखी है, और उसके अन्दर इन्कम शो कर रखी है, उनकी इन्कम और खर्चे का हिसाब निकालकर कोई नुक्सान भी हुआ है या सिर्फ इन्कम ही इन्कम होती रही है?

चौ. भजन लाल: 1968 के बाद से जब से यह गवर्नमैंट बनी है, इन सरकारी फार्मों में काफी प्रोफिट हुआ है। वर्श 1972–73 में जिसका ऑडिट हो चुका है, 10 लाख 70 हजार के करीब प्रोफिट रहा है। हमारा अन्दाजा यह है कि वर्श 1973–74 में 15 लाख रूपए का प्रोफिट रहेगा।

चौ. मेहर चन्द: क्या ऐग्रीकल्चर मिनिस्टर साहब यह बताएंगे कि हीट प्रोडक्शन पर प्रोबेबली प्रति एकड़ कितना ऐक्सपैन्डीचर होता है, जिसके अन्दर फार्म के ऐम्प्लाइज के वेजिज भी शामिल हों, उनके कुनबे का खर्च भी शामिल हो, मशीनरी का डैप्रीसीएशन भी शामिल हो और लाईव–स्टाक का डैप्रीसीएशन भी शामिल हो?

चौ. भजन लाल: अध्यक्ष महोदय, सारा जितना भी खर्चा है, डालकर किसान को एक क्विटल गेहूं 101 रूपए के भाव से पड़ता है। इस टोटल खर्चे की ब्रेक–अप भी मैं इनको बता देता

हूं। इसमें हमने सारे खर्चे डाले हैं जो इस तरह हैं। बैलों की जोत का 176 रूपए खर्च आता है जिसमें 6 बांघ शामिल हैं। यह खर्चा मैं प्रति हैक्टेयर के हिसार से बता रहा हूं। लेबर चार्जिज 462 रूपए, बीज का खर्चा 282 रूपए, पानी देने का खर्चा 347 रूपए और खाद का 541 रूपए है। लैण्ड टैक्स साढ़े बाईस रूपए, जमीन पर मुआवजा 500 रूपए, ट्रैक्टर का डैप्रीसीएशन 109 रूपए, कैपिटल पर सूद 110 रूपए लगाते हैं और डैप्रीसीएशन साढ़े बानवे रूपए, स्टाफ का खर्चा 394 रूपए है। इस तरह से सारा खर्चा लगाकर 101 रूपए के भाव से किसान को पड़ती है।

श्रीमती चन्द्रावती: जनाब, मिनिस्टर साहब ने जो अभी नफा बताया था, क्या उसको देखते वक्त जो गवर्नमैंट सर्वेट इन फार्मों की देखभाल करते हैं, उनकी तनख्वाह वगैरा भी हिसाब में काउन्ट की जाती है?

चौ. भजन लाल: अध्यक्ष महोदय, जो स्टाफ वहां रहता है और दूसरा सारा खर्चा निकालकर 1972–73 में 10 लाख 70 हजार रूपए के करीब प्रोफिट रहा है और हमारा अन्दाजा यह है कि 1973–74 में 15 लाख रूपए के करीब सारा खर्चा निकाल कर प्रोफिट रहेगा।

श्री ओम प्रकाश गर्ग: मिनिस्टर साहब ने बताया है कि एक साल तो गर्म हवा की वजह से और एक साल सर्द हवा की

वजह से फसल की उपज में फर्क पड़ा है। क्या वे यह बताएंगे कि बारिश न होने का भी उपज पर कोई असर पड़ा है?

चौ. भजन लाल: यह तो नेचर पर डिपैन्ड करता है। देश का सारा काम ही बारिश से चला है।

चौ. राम लाल वधवा: मंत्री महोदय ने जो 101 रूपए प्रति क्विंटल का भाव निकाला है वह तो उन्होंने हरेक चीज कन्ट्रोल रेट लगाकर निकाला होगा, यदि खाद या दूसरी चीजें, जो कन्ट्रोल रेट पर आम किसान को मिलती नहीं हैं और ब्लैक में मिलती हैं, उनका ब्लैक का रेट लगाकर हिसाब लगाया जाए तो किसान को किस भाव पर गेहूं पड़ता होगा?

चौ. भजन लाल: अध्यक्ष महोदय, स्टेट में इतनी खाद पड़ी हुई है कि किसान ले नहीं रहा। फिर ब्लैक की बात कैसे सच हो सकती है?

श्रीमती चन्द्रावती: क्या यह सच है कि बद–इंतजामी की वजह से फार्मों में नुक्सान हुआ है?

चौ. भजन लाल: 1968 से पहले जरूर होता था, लेकिन अब कोई बद–इंतजामी नहीं है, इसलिए प्रोफिट हो रहा है।

चौ. जोगेनद्र सिंह श्योरग: अध्यक्ष महोदय, मिनिस्टरा साहब ने अभी एक क्विंटल हीट के लिए खर्चा बताया है। वह यह

खर्चा किस तरह निकालते हैं और यह कैसे पता चलता है कि एक हैक्टेयर में इतने क्विंटल गेंहू पैदा हुई है?

चौ. भजन लाल: हम ऐवरेज निकाल लेते हैं। पिछले साल ठण्डी हवा चलने के बावजूद हमारे इन फार्मों की उपज 15 क्विंटल 44 किलो प्रति हैक्टेयर है। इससे पिछले साल हमारी औसत 18 क्विंटल के करीब थी। उपज की औसत का हिसार लगाकर और खर्चे का हिसार लगाकर औसत निकालकर एक क्विंटल हीट का खर्चा निकाल लेते हैं।

चौ. मनफूल सिंह: मिनिस्टर साहिब ने बताया है कि किसान को सारा खर्चा डाल कर 101 रूपए प्रति क्विंटल के भाव से गेहूं पड़ती है। गवर्नमैंट ने जो 105 रूपए प्रति क्विंटल स्पोटिंग प्राईस रखी हुई है, क्या वह कम नहीं है?

चौ. भजन लाल: अध्यक्ष महोदय, स्पोर्टिग प्राईस का प्रश्न तो इससे अराईज ही नहीं होता।

Mr. Speaker: Yes, it does not arise.

लाला रूलिया राम: क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि स्टेट के अन्दर जो वेजिटेबल फार्म हैं, वे भी इन फार्मों के अन्दर शामिल होते है?

चौ. भजन लाल: स्टेट के सारे फार्म इसमें आ गए हैं चाहे वे वेजिटेबल फार्म हैं या दूसरे है।

चौ. राम लाल वधवा: मंत्री महोदय ने बताया है कि 101 रूपए प्रत क्विंटल के भाव किसान को गेहूं पड़ता है। इस बात को सामने रखते हुए हरियाणा सरकार इस बात पर विचार करेगी कि किसान को ठीक भाव मिले और क्या मंत्री महोदय बताएंगे कि वे सैन्ट्रल गवर्नमैंट को रिकमैंड करेंगे कि 105 रूपए का भाव ठीक नहीं है।

Mr. Speaker: This is not a supplementary to this question.

चौ. राम लाल वधवा: स्पीकर साहब, मेरा प्रश्न यह है कि क्या यह भारत सरकार को रिकमैंड करेंगे कि 105 रूपए का भाव ठीक नहीं है?

श्री अध्यक्ष: आपने क्वैश्चन में खर्चा पूछास है, उसका जवाब दे दिया है।

मलिक सतराम दास बतरा: क्या मिनिस्टर महोदय बताने की कृपा करेंगे कि मैकेनाइजड फार्मिग, सबसिडी और ऐग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी हिसार की तरफ से किसानों को जो पैदावार बढ़ाने के लिए शिक्षा दी गई है, उससे पैदावार में कितना इजाफा हुआ है?

चौ. भजन लाल: अध्यक्ष महोदय, जैसा कि मैंने अभी बताया है कि पिछले दो साल में ईल्ड कम रही है लेकिन महकमें की तरफ से पूरी कोशिश रही है। हमने ऐग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी के विशेषज्ञ ओर अपने डिपार्टमैंट के एक्सपर्टस की डयूटी लगाई कि

वे किसानों को पूरी जानकारी दें। इसके साथ ही साथ हाल ही में हमने एक सीड कार्पोरेशन बनाई है और वह किसानों को हर तरह की पूरी जानकारी देंगे कि किस तरह से सीड बनाया जाए। इसके लिए वे किसानों को उनके घर जाकर, उनके खेतों पर जाकर जानकारी देते हैं और देते रहेंगे।

चौ. मेहर चन्द: मंत्री महोदय के जवाब से पता चलता है कि एक क्विंटल गेहूं पैदा करने के लिए किसान का 101 रूपए खर्चा आता है। क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि यह 101 रूपए का खर्चा किस साल का है और उस साल किसान को उसके गेहूं का क्या भाव दिया गया था?

चौ. भजन लाल: अध्यक्ष महोदय यह जो 101 रूपए खर्चा मैंने बताया है वह 1973–74 का है और इसके लिए गवर्नमैंट आफ इंडिया ने किसान को 105 रूपए फी क्विंटल दिया है। वैसे इस साल किसान का गेहूं 120/125 रूपए प्रति क्विंटल बिका है, क्योंकि गवर्नमैंट ने 50 रूपए छूट दी हुई थी कि 50 प्रतिशत गेहूं व्यापारी सारे देश में जहां मर्जी हो, ले जा सकता है मगर भाव 150/152 से ज्यादा न हो। इस तरह से 120/125 रूपए से किसान का गेहूं कम नहीं बिका।

चौ. पीर चन्द: क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि सीड फार्मों में जो वे मुनाफा बता रहे हैं वे फार्म किस भाव पर सीड बेचते हैं।

चौ. भजन लाल: अध्यक्ष महोदय, जहां तक फार्मो का ताल्लुक है, यह प्रोफिट के लिए नहीं हैं ये सीड पैदा करने के लिए हैं, लेकिन जैसा मै।ने पहले बताया है हर साल हमारे फार्म प्रोफिट में चलते रहे हैं। जहां तक भाव का ताल्लुक है, गवर्नमैंट आफ इंडिया ने जो भाव मुकरर्र किया, उसी भाव पर हमारे फार्मो ने गेहूं का सीड बेचा है। पहले 76 रूपए बेचा था और .....

चौ. राम लाल वधवा: उस ह्वीट का भाव मुकरर्र था?

चौ. भजन लाल: अध्यक्ष महोदय, पिछले साल हमने 160 रूपए में बेचा था और इस साल 200 रूपए में बेचा है।

चौ. मनफूल सिंह: मंत्री महोदय ने बताया है कि गेहूं किसान को 101 रूपए प्रति क्विंटल पड़ती है। जिस समय फर्टीलाईजर की कीमत काफी कम थी उस समय किसान को 101 रूपए में पड़ती थी, लेकिन अब फर्टीलाईजर के दाम दुगने हो गए हैं। इस बात को देखते हुए क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि हरियाणा सरकार भारत सरकार को रिकमैंड करेगी कि किसान को 105 रूपए से ज्यादा भाव मिलना चाहिए।

चौ. भजन लाल: अध्यक्ष महोदय, किसानों की हर चीज को ध्यान में रखकर हम गवर्नमैंट आफ इंडिया को रिक्मैंड करते हैं और किसान की हर जायज मांग को हर समय गवर्नमैंट आफ इंडिया के नोटिस में लाते हैं और भारत सरकार किसान और गरीब मजदूर दोनों का ध्यान रखकर भाव तय करती है।

चौ. राम लाल वधवा: मंत्री महोदय ने बताया है कि किसान को 101 रूपए प्रति क्विंटल गेहूं घर पर पड़ती है। क्या मंखी महोदय बताने की कृपा करेंगे कि क्या यह ठीक नहीं है कि ऐग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी हिसार ने दो साल पहले खोज की थी उसके मुताबिक 110–115 रूपए प्रति क्विंटल गेहूं पर खर्च आता है?

चौ. भजन लाल: स्पीकर साहब, यह बिल्कुल ठीक नहीं है। ऐग्रीकल्चरल युनिवर्सिटी हिसार ने तो इससे भी कम बताया था।

चौ. पीर चन्द: क्या मंत्री महोदय इस बात पर विचार करेंगे कि किसान को फायदा पहुंचाने के लिए 100 रूपए प्रति क्विंटल सीड दिया जाए, चाहे इससे सरकार को कुछ नुक्सान ही क्यों न हो?

श्री अध्यक्ष: यह सप्लीमैंट्री इससे पैदा नहीं होता।

मलिक सतराम दास बत्तरा: क्या मंत्री महोदय एक कमेटी बनाने पर विचार करेंगे जो यह देखे कि इंडस्ट्रियलिस्ट्स की इन्वैस्टमैंट पर कितने परसैन्ट और किसान की इनवैस्टमैंट पर कितने परसैन्ट मुनाफा होता है।

Mr. Speaker: It is not a supplementary to this question.

Nurses in E.S.I. Hospital

***984. Sh. K.N. Gulati**: Will the Minister for Industries be pleased to state –

(a) the total strength of staff Nurses in the E.S.I. Hospital, Faridabad at present;

(b) whether the present strength of staff is short according to the number of beds and wards in the said Hospital; and

(c) if so, the time by which the strength of staff nurses in the said Hospital is likely to be increased in proportion to the number of beds?

गृह तथा स्वास्थ्य राज्यमंत्री (श्रीमती शारदा रानी):

(क) नर्सिग सिस्टर 1

स्टाफ नर्सिज 11

(ख) जी, हां।

(ग) यथा–सम्भव शीघ्र अति शीघ्र

श्री के.एन. गुलाटी: क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगी कि यह स्टाफ कब से कम है?

श्रीमती शारदा रानी: स्पीकर साहब, वैसे देखा जाए तो स्टाफ शुरू से ही कम है पहले नार्म निश्चित नहीं थी। सन् 1972

में ESI Corporation द्वारा नार्म निश्चित किया गया और तब अधिक स्टाफ की जरूरत पड़ी उसको जल्दी ही पूरा कर दिया जाएगा।

चौ. फूल सिंह कटारिया: क्या मंत्री महोदया बताने की कृपा करेंगी कि यह कमी सिर्फ फरीदाबाद के अस्पताल की ही पूरी की जाएगी या दूसरी जगहों पर जो कमी है, उसको भी पूरा किया जाएगा?

श्रीमती शारदा रानी: सन् 1975 के अन्त तक सब जगह कमी पूरी कर देंगे।

Ex-Sarpanches in Jind District

***994. Ch. Dal Singh**: Will the Minister for Development be pleased to state –

(a) the number and names of ex-Sarpanches together with their addresses in Jind District against who cases, if any, of misappropriation of Panchayat funds were pending on 1st April, 1974; and

(b) the action taken or proposed to be taken against ex-Sarpanches as referred to in part (a) above?

Development Minister (Col. Maha Singh): (a) and (b) A statement (Annexure) is laid on the table of the House.

Statement

Sr. No.	(a) the number and namees of ex-sarpanches together with their addresses in Jind District against whom cases, if any, of misappropriation of Panchayat funds were pending on 1-4-1974.	(b) the action taken or proposed to be taken against ex-Sarpanches as referred to in part (a)
1	2	3
	Sarvshir	
1	Kanshi Ram, Ex-Sarpanch Gram Panchayat Gogrian.	Case under seciton 409 I.P.C. has been registered with the police. Action under section 105(2) of Gram Panchayat Act, 1952 is also being taken.
2	Molu Ram, Ex-Sarpanch Gram Panchayat Shamlo Khurd.	Action is being taken under section 105 (2) of the Punjab Gram Panchayat Act, 1952 to assess and recover the loss to the Panchayat from the Ex-Sarpanch.
3	Surat Singh, Ex-Sarpanch Gram Panchayat Nandgarh.	The Sarpanch has been removed and the Block Development and Panchayat Officer has been asked to take action under section 105 (2) of the Punjab

		Gram Panchayat Act, 1952 to assess and recover the losses to the Gram Panchayat from the ex-Sarpanch.
4	Ram Kala, Ex-Sarpanch Gram Panchayat Julani.	Case under section 409 I.P.C. has been registered with the police.
5	Chandan Singh, Ex-Sarpanch Gram Panchayat Tarkha.	Case under section 409 I.P.C. has been registered with the police.
6	Ram Dhari, Ex-Sarpanch Gram Panchayat Ahirka.	Case under section 409 I.P.C. has been registered with the police.
7	Harnam Singh, Ex-Sarpanch Gram Panchayat Asrafgarh.	Case under section 409 I.P.C. has been registered with the police.
8	Kala Singh, Ex-Sarpanch, Gram Panchayat Kharkra.	Case under section 409 I.P.C. has been registered with the police.
9	Sundra, Ex-Sarpanch, Gram Panchayat Sahanpur.	Case under section 409 I.P.C. has been registered with the police.
10	Sant Ram, Ex-Sarpanch, Gram Panchayat Gangoli	Case under section 409 I.P.C. has been registered with the police.

11	Dalip Singh, Ex-Sarpanch, Gram Panchayat, Aftabgarh.	Case under section 409 I.P.C. has been registered with the police.
12	Boghal Ram, Ex-Sarpanch, Gram Panchayat, Nidani.	Case under section 409 I.P.C. has been registered with the police.
13	Rai Singh, Ex-Sarpanch, Gram Panchayat, Budha Khera.	Case under section 409 I.P.C. has been registered with the police.
14	Deep Chand, Ex-Sarpanch, Gram Panchayat, Malar.	Case under section 409 I.P.C. has been registered with the police.
15	Bir Singh, Ex-Sarpanch, Gram Panchayat, Bhadana.	Case under section 409 I.P.C. has been registered with the police.
16	Kali Ram, Ex-Sarpanch, Gram Panchayat, Bhadana.	Action is being taken under section 105 (2) of the Punjab Gram Panchayat Act, 1952 to assess and recover the loss to the Panchayat from the Ex-Sarpanch.
17	Risal Singh, Ex-Sarpanch, Gram Panchayat, Badanpur.	Action under section 105 (2) of the Punjab Gram Panchayat Act, 1952 has been taken to assess and recover the loss to the Panchayat. Appeal is pending with the Deputy Director of

		Panchayats.
18	Devi Singh, Ex-Sarpanch, Gram Panchayat, Shamdoo.	Action under section 105 (2) of the Punjab Gram Panchayat Act, 1952 has been taken to assess and recover the loss to the Panchayat. Appeal is pending with the Deputy Director of Panchayats.
19	Risal Singh, Ex-Sarpanch, Gram Panchayat, Gangatheri.	Action is being taken under section 105 (2) of the Punjab Gram Panchayat Act, 1952 to assess and recover the loss to the Panchayat from the Ex-Sarpanch.

चौ. दल सिंह: क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि ये केस कब दर्ज हुए और अब तक क्या ऐक्शन लिया गया है?

कर्नल महा सिंह: स्पीकर साहब, दफा 409 आफ इंडिया पैनल कोड के अन्दर 13 केसिज रजिस्टर हुए हैं। उसमें से एक केस का चालान हो चुका है और 12 केसिज में अभी तक तफतीश जारी है।

चौ. दल सिंह: स्पीकर साहब, मेरा सवाल यह था कि कितने केसिज एक साल पुराने हैं, कितने केसिज दो साल पुराने

हैं और कितने केसिज तीन साल पुराने हैं और क्या ऐक्शन ले रहे हैं?

कर्नल महा सिंह: स्पीकर साहब, इस इन्फर्मेशन को कुलेक्ट करने के लिए टाईम चाहिए। सवाल में यह पूछा ही नहीं गया है।

चौ. दल सिंह: अध्यक्ष महोदय, मैं आपके द्वारा यह सूचना देना चाहता हूं कि इस सरपंच के 539 रूपए अभी पंचायत की तरफ बकाया हैं, इसलिए उसको हटाया गया है।

श्री अध्यक्ष: आर्डर प्लीज।

चौ. दल सिंह: स्पीकर साहब, मेरा कहने का मतलब यह था कि इस कारण उसे हटाया गया कि उसने किसी कांग्रेसी एम. एल.ए. के खिलाफ इलैक्शन में कार्य किया है – इस भावना के तहत तो ऐसा नहीं किया गया?

Mr. Speaker: The honourable Member cannot supply information through a supplementary question.

मुख्यमंत्री (चौ. बंसी लाल): स्पीकर साहब, चौधरी दल सिंह भी तो पुरानी कांग्रेस के हैं।

चौ. दल सिंह: स्पीकर साहब, मैं सप्लीमैंट्री के द्वारा गवर्नमैंट से यह पूछना चाहता हूं कि क्या इस भावना के तहत तो

ऐसा नहीं किया गया कि किसी सरपंच ने किसी कांग्रेसी एम.एल.ए. के खिलाफ इलैक्शन में कार्य किया हो?

कर्नल महा सिंह: ऐसी भावना के तहत ऐसी कोई कार्यवाही नहीं की जाती।

श्री गौरी शंकर: क्या मिनिस्टर साहब यह बतलाते की कृपा करेंगे कि जितने केसिज इन्होंने अपने रिटन रिप्लाई में दिए हैं क्या उनके इलावा और भी कोई केसिज एक्स–सरपंचों के खिलाफ बकाया पड़े हैं?

कर्नल महा सिंह: स्पीकर साहब, एक्स–सरपंचिज के खिलाफ जितने केसिज दर्ज किए जा चुके हैं, उन सबकी इतलाह दे दी गई है।

Cases of Kidnapping and Abduction

***969. Ch. Ram Lal Wadhwa**: Will the Minister for Home be pleased to state –

(a) the total number of cases of kidnapping and abduction, separately, registered with the police in the State during the years 1973-74 and 1974-75 (to-date); and

(b) the total number of such cases out of those referred to in part (a) above traced out during these years separately?

Home Minister (Sh. K.L. Poswal): (a & b) A statement is laid on the table of the house.

Statement

Statement showing number of cases of kidnapping and abduction registered and traced during the years 1973-74 and 1974-75.

(a) Number of cases registered.

Year	Kidnapping	Abduction	Total
1973-74	69	50	119
1974-75 (up to 15.11.74)	47	32	79

(b) Number of cases traved out of the cases referred to in part (a) above.

Year	Kidnapping	Abduction	Total
1973-74	36	24	60
1974-75 (up to 15.11.74)	25	9	34

चौ. राम लाल वधवा: स्पीकर साहब, होम मिनिस्टर साहब ने अपने जवाब में बताया है कि 1973–74 में किडनैप के केजिस जो हुए हैं, वे है 69 एबडक्शन के 50, कुल 119 केसिज हैं और इनमें से रिकवरी केवल 60 की हुई है। क्या वे बतलाने का कश्ट करेंगे कि ट्रेस आउट करने की उनकी प्रोग्रैस इतनी कम क्यों है या वे ट्रेस आउट करने में असमर्थ रहे हैं?

श्री के.एल. पोसवाल: स्पीकर साहब, किडनैप के कुछ केसिज 69 रजिस्टर हुए जिनमें से 19 केसिज कैन्सल हो गए, 38 केसिज का चालान हुआ और 5 को सजा हुई। बाकी 24 ट्रायल के लिए कोर्ट में हैं और इसके इलावा 10 केसिज में इनवैस्टीगेशन बाकी है।

श्री के.एन.गुलाबी: स्पीकर साहब, पिछले साल फरीदाबाद में दो केसिज किडनैप के हुए और वह दोनों लड़कियां बरामद हो गई, इसके लिए तो मैं पुलिस का बड़ा मशकूर हूं, पर अभी जो 16 नवम्बर, 1974 को किडनैप का केस हुआ है, उसकी क्या पोजीशन है?

श्री के.एल.पोसवाल: जनाब, इससे यह सप्लीमैंट्री अराइज नहीं होता।

Safai Karamcharis in E.S.I. Hospital

***985. Sh. K.N. Gulati**: Will the Minister for Industries be pleased to state –

(a) the total strength of 'Safai Karamcharis' in the E.S.I. Hospital at Faridabad at present;

(b) whether the present strength of Safai Karamacharis is inadequate keeping in view the number of beds and wards in the said Hospital; and

(c) if so, the time by which the adequate staff of Safai Karamacharis is likely to be posted there?

गृह तथा स्वास्थ्य राज्य मंत्री (श्रीमती शारदा रानी):

(क) 11 सफाई कर्मचारी।

(ख) 92 बिस्तरों (80 सामान्य 12 टी.बी.) के हस्पताल के लिए 11 सफाई कर्मचारी काफी नहीं हैं।

(ग) अतिरिक्त पदों की स्वीकृति का प्रस्ताव सरकार के विचारधीन है।

श्री के.एन. गुलाटी: क्या मिनिस्टर महोदया यह बतलाने की कृपा करेंगी कि जो सफाई कर्मचारियों का स्टाफ काम करता है, उनको कितना अलाउंस दिया जाता है?

श्रीमती शारदा रानी: स्पीकर साहब, बाकी क्लास फोर इम्प्लाइज से उनको 15 रूपए ज्यादा अलाउंस मिलता है।

श्री के.एन. गुलाटी: क्या मंत्री महोदया यह बतलाने की कृपा करेंगी कि फोर्थ क्लास इम्पलाइज जो रैगुलर काम करते हैं, सबको 15 रूपए महावार दिया जाता है?

श्रीमती शारदा रानी: स्पीकर साहब, जो 6 सैक्शंड पोस्ट्स हैं, उनके अगेन्स्ट काम करने वालों को अलाउंस दिया जाता है, बाकी पांच क्ज़ै भी दिया जाने लगा है और जो शेश नए आदमी लगाए जाएंगे, उनकी भी दिया जाएगा।

Death Occurred to Animals due to Electricity

***995. Ch. Dal Singh**: Will the Minister for Irrigation and Power be pleased to state –

(a) the district-wise number of cases pending with Haryana State Electricity Board as on 30th June, 1974, in which animals were killed due to Electricity accidents alongwith the names and the addresses of the owners of such animals;

(b) the number of pending compensation cases as referred to in part (a) above, which are one year, two years and three years old;

(c) the number of pending cases in respect of animals killed due to electricity accidents decided by the Haryana State Electricity Board in the year 1973-74; and

(d) the amount of compensation paid to each owner of animals as referred to in part (c) above?

State Minister for Irrigation and Power (Sardar Harmohinder Singh Chatha): (a, b, c, and d). A statement containing the requisite information is laid on the Table of the House.

STATEMENT

(a) The total number of pending cases of accidents due to Electricity in which animals were killed as on 30th June, 1974 were 138. The division-wise detail, is as under :-

Sr. No.	Name of Division	Cases
1	Hisar	6
2	Hansi	8
3	Sirsa	6
4	Fatehbad	3
5	Bhiwani	1
6	Narnaul	5
7	Jhajjar	7
8	Rohtak	2
9	Jind	16
10	Dadri	1
11	Shahbad	3
12	Kurukshetra	4
13	Ambala	1

14	Jagadhri	2
15	Panipat	9
16	Karnal	17
17	Kaithal	7
18	Pehowa	8
19	Faridabad	2
20	Ballabgarh	2
21	Palwal	1
22	Delhi	7
23	Gurgaon	4
24	Rewari	11
25	Sonepat	5
	Total	138

The names and addresses of the owners of such animals is as per Annexure 'A'.

(a) The details of total number of pending compensation cases as referred to in part (a) above, which are one year, two years and three years old, are as under:-

Sr. No.	Name of Division	One year old	Two years old	Three years old
1	Hisar	4	1	1
2	Hansi	7		1
3	Sirsa	5	1	
4	Fatehbad	1	1	1
5	Bhiwani	1		
6	Narnaul	4		1
7	Jhajjar	2	4	1
8	Rohtak	1	1	
9	Jind		7	
10	Dadri	9	1	
11	Shahbad	2		1
12	Kurukshetra	4		
13	Ambala	1		
14	Jagadhri	2		
15	Panipat	9		
16	Karnal	13	4	

17	Kaithal	7		
18	Pehowa	2	5	1
19	Faridabad	2		
20	Ballabgarh	2		
21	Palwal	1		
22	Delhi	6		1
23	Gurgaon	2		2
24	Rewari	10	1	
25	Sonepat	4		1
	Total	101	26	11

(c) 50. Compensation paid in 12 cases.

Cases closed. 38 cases.

(d) The total amount of compensation paid to 12 owners of animals as referred to, in part (c) above, is Rs. 16,430.

The detail is as under :-

Sr.No.		
1	Sh. Matu Ram Village Jharli, Distt. Rohtak	700
2	Sh. Man Singh, Village Nalvi, District	2200

	Ambala	
3	Sh. Ratti Ram, Village Gigaon, District Gurgaon	1200
4	Sh. Ranjit Singh, Village Dhondri, District Gurgaon	600
5	Sh. Molar Village Sagwan, District Hisar	200
6	Sh. Mansa Ram, Village Madodan, District Hisar	3730
7	Sh. Balbir Singh, Village Habri, District Karnal	3160
8	Sh. Amar Singh, Village Fatehpur, District Karnal	600
9	Sh. Lal Singh, New Colony, Gurgaon	1060
10	Sh. Narain Dass, Village Hathin, District Gurgaon	650
11	Sh. Kanshi Ram, Village Kalrewas, District Gurgaon	1330
12	Sh. Sher Singh, Village Jagmalera, District Hisar	1000
	Total	16430

ANNEXURE 'A'

Date of Accident	Name of the owner & Address	Description of animal
1	2	3
	HISAR DIVISION	
15-8-70	Ghanisham Dass sor of Goraya Ram, Gandhi Nagar, Hisar	Buffalo
6-6-72	Ad Ram, Mohalla Saini, Hisar	Buffalo
9-8-73	Sh. Mangel S/o Sh. Ram Nath, Village Satrod Khurd, Distt. Hisar	Buffalo
18-10-73	Shankar Dass S/o Nayamat Ram, Housar No. 299/12, Mohalla Kasala, Distt. Hisar	Buffalo
1-12-73	Sharat Singh S/o Masta Ram, Village Juglan, Distt. Hisar	Buffalo
21-4-74	(Awaited) Village Daha, Distt. Hisar	Buffalo
	HANSI DIVISION	
10-6-71	Sh. Prem Singh S/o Pritam Village Handa Kheri, Distt. Hisar	Buffalo
1-12-73	Sh. Sher Singh S/o Maru Ram, Village Kharkara, Distt. Hisar	Buffalo
21-1-73	Sh. Bhag Rai S/o Sh. Udey Ram Village Kheri Berhi, Distt. Hisar	Buffalo
11-9-73	Sh. Daleep Singh Village Murdapur, Distt.	Buffalo

	Hisar	
10-10-73	Sh. Sunder Singh S/o Sh. Man Singh Village Narnaund, Distt. Hisar	Buffalo
3-6-74	Sh. Jai Dev S/o Udey Ram, VPO. Bass Akbarpur, Distt. Hisar	Buffalo
22-6-74	Sh. Ganpat Ram S/o Sh. Sant Ram, VPO. Narnaul, Distt. Hisar.	Buffalo
25-6-74	Sh. Bhagwan S/o Mam Raj, VPO. Majra, Distt. Hisar	Buffalo
	SIRSA DIVISION	
20-9-72	Sh. Kehar Singh S/o Sh. Partap Singh, Village Khairpur, Distt. Hisar	Buffalo
9-8-73	Sh. Ganga Ram S/o Dasu Ram, Village Bhuna, Distt. Hisar	Buffalo
18-12-73	Jangir Singh S/o Maggar Singh, VPO. Chotha, Distt. Hisar	Buffalo
24-2-74	Chuni Lal S/o Mulkh Raj, Band Gate Sirsa, Distt. Hisar	Buffalo
26-1-74	Sh. Hari Ram, Village Kusal, Distt. Hisar	Camel
9-4-74	Harjit Singh, Village Rori Sirsa, Distt. Hisar	Buffalo
	FATEHABAD DIVISION	

27-6-71	Sh. Wazir Chand S/o Sh. Dasa Ram, Village Shakarpura, Distt. Hisar	Buffalo
27-7-72	Sh. Ram Kumar S/o Sh. Mokh Ram, VPO. Fatehabad, Distt. Hisar	Buffalo
17-2-74	Telu Ram Saini, Tohana, Distt. Hisar	Buffalo
	BHIWANI DIVISION	
10-6-74	1. Surjit Ram S/o Dayala Ram, Village Fartia Ral, Distt. Bhiwani	2 Buffalo
	2. Amar Singh S/o Sukhi Ram, Village Fartia Ral, Distt. Bhiwani	
	NARNAUL DIVISION	
17-7-71	Sh. Basti Ram S/o Jai Dayal, Village Dhanouda, Distt. Mohindergarh	Buffalo
16-8-73	Sh. Deena Ram S/o Sh. Onkar, Village Bhojawas, Distt. Mohindergarh	Buffalo
10-3-74	Sh. Balbir Singh S/o Chuni Lal, Village Hajipur, Distt. Mohindergarh	Buffalo
7-3-74	Sh. Nand Lal, Village Bhushan Khurd, Distt. Mohindergarh	Camel
11-6-74	Awaited	Buffalo
	JHAJJAR DIVISION	
16-7-72	Sh. Dalip Singh S/o Harphool Singh,	Buffalo

	Village Kiloi, Distt. Rohtak	
7-10-72	Sh. Dalip Singh S/o Harphool Singh, Village Kiloi, Distt. Rohtak	Buffalo
15-10-72	Sh. Mam Raj S/o Sh. Sallah Singh, Village Lohari, Distt. Rohtak	Buffalo
29-1-73	Sh. Bhai Ram S/o Chhaju Ram, VPO. Sham Nagar, Distt. Rohtak	Buffalo
16-7-71	Sh. Kali Ram Village Bhambera, Distt. Mahindergarh	Buffalo
11-6-73	Sh. Jeet Ram, VPO. Juddi, Distt. Rohtak	Buffalo
8-6-72	Sh. Hira Singh S/o Sh. Subha Village & P.O. Machhrauli	Buffalo
	ROHTAK DIVISION	
8-6-72	Sh. Daryo Singh S/o Sh. Har Nand, Village Chamni, Distt. Rohtak	Camel
29-3-74	Sh. Mir Singh, Village Chimni, Distt. Rohtak	Buffalo
	JIND DIVISION	
17-6-72	1. Ram Singh S/o Sh. Shabhu 2. Molu Ram S/o Sh. Devatia R/o Village Mahil Kheri, Distt. Jind	Buffalo
12-7-72	Sh. Sukh Chan Singh S/o Sh. Gurbachan	Buffalo

	Singh, VPO. Dharamgarh (Jind)	
10-7-72	Sh. Durga Singh S/o Sh. Dhan Singh, Village Pokher Kheri, Distt. Jind	Buffalo
14-8-72	Sh. Phool Singh S/o Sh. Gita Ram, Village Nagura, Distt. Jind	Buffalo
23-10-72	Sh. Chatru S/o Sh. Bichna Village Lachits, Distt. Jind	Buffalo
29-6-72	Sh. Sunder Singh S/o Sh. Arjun Singh Village Raju Kala, Distt. Jind	Buffalo
20-5-73	Sh. Tara Chand S/o Sh. Risal VPO. Darawala, Distt. Jind	Buffalo
12-6-73	Sh. Gurdeep Singh S/o Sham Singh Village Kihnana, Distt. Jind	Buffalo
29-6-73	Sh. Baldu Ram S/o Sh. Mushi Ram Village Dubal, Distt. Jind	Buffalo
13-7-73	Sh. Ruldu Ram S/o Sh. Ami Lal Village Rajpura, Distt. Jind	Buffalo
13-8-73	Sh. Ruldu Ram S/o Sh. Ami Lal Village Rajpura, Distt. Jind	Buffalo and Calf
30-7-73	Sh. Onkar Dass Garg Sectional Officer Canal Rest House, Baroda Distt. Jind	Buffalo
2-9-73	Sh. Girdhala S/o Sh. Singh Ram VPO. Sagatpur, Distt. Jind	Buffalo

6-8-73	Sh. Chand Ram S/o Sh. Ram ji lal Village Bara Bas, Distt. Jind	Buffalo
17-6-72	1. Sh. Ran Singh S/o Sh. Shbhu Village Mohil Khera, Distt. Jind 2. Sh. Malu Ram S/o Jawatia Village Mohil Khera, Distt. Jind	Buffalo
25-6-74	Sh. Prithvi Singh S/o Sh. Shanker VPO. Anta, Distt. Jind.	Buffalo
	DADRI DIVISION	
13-6-72	Sh. Behran Singh S/o Sh. Chander Bhan, Village Badra, Tehsil Dadri, Distt. Mohindergarh	Camel
	SHAHBAD DIVISION	
4-6-71	Sh. Jaswant Singh S/o Sh. Gurnam SinghVillage Dhangali, Distt. Kurukshetra	4 Buffaloes
3-11-73	Ratti Ram S/o Sh. Mangal Ram, VPO. Jagdholi, Distt. Ambala	Buffalo
18-5-74	Sh. Diwan Chand S/o Sukhram Dass, Village Mulana, Distt. Ambala	Buffalo
	KURUKSHETRA DIVISION	
29-7-73	Jeewan Ram Village Kaltari, Distt. Kurukshetra	2 Buffaloes

31-7-73	Sh. Ram Dass, Village Atwan, Distt. Kurukshetra	Buffalo
3-2-74	Sh.Bhula Singh S/o Sh. Narang Singh, Village Nawarsi, Distt. Kurukshetra	Buffalo
10-2-74	Pal Singh S/o Sh. D. Sadhu Singh, Mohalla Misran, Distt. Kurukshetra	Buffalo
	AMBALA DIVISION	
4-7-73	Sh. Prem Singh, Village Kanwala, Distt. Ambala	Buffalo
	JAGADHRI DIVISION	
28-6-73	Chander Mahta, House No. 212, Model Town, Yamuna Nagar	Buffalo
2-4-73	Mohinder Singh S/o Sh. Kabil Singh, Village Akbarpur, Distt. Ambala	Buffalo
	KAITHAL DIVISION	
26-5-73	Sh. Gulzar Singh, S/o Sh. Narain Singh, Village Manda Sadra, Distt. Kurukshetra	Buffalo
21-6-73	Sh. Neki Ram S/o Sh. Khem Chand, VPO. Pundri, Distt. Kurukshetra	Buffalo
6-8-73	Sh. Beni Parshad S/o Sh. Mohan Lal Village Pai, Distt. Kurukshetra	Ox
5-9-73	Sh. Magat Ram S/o Sh. Chanda Singh,	Buffalo

	Village Pai, Distt. Kurukshetra	
7-10-73	Sh. Suraj Bhan S/o Sh. Daya Ram, Village Fatehpur, Distt. Karnal	Buffalo
10-2-74	Sh. Lachhman Dass S/o Sh. Mama Ram, Village Mudli, Distt. Kurukshetra	Buffalo
4-6-74	1. Sh. Roshan Lal S/o Sh. Shiv Sahai 2. Arjan Dass S/o Sh. Lilu Ram 3. Sh. Sadhu Singh S/o Sh. Deva Singh 4. Arjan Dass S/o Sh. Dadha Ram, R/o Kaithal, Distt. Kurukshetra	Buffalo
	PEHOWA DIVISION	
27-7-72	Sh. Darbara Singh Village Thol, Distt. Kurukshetra	Buffalo
12-7-72	Sh. Balbit Singh S/o Sh. Harnam Singh, Village Dera Fateha Singh Pehowa, Kurukshetra	Cow & Buffalo
4-7-73	Sh.Joga Singh S/o Sh. Balkar Singh Village Talheri, Distt. Kurukshetra	Buffalo
3-7-73	Sh. Man Singh S/o Sh. Ram Singh Village Nalri, Distt. Kurukshetra	Cow
27-7-72	Sh. lakshmi S/o Sh. Puran Village Darupur, Distt. Ambala	Buffalo

5-7-71	Sh. Gurbachan Singh S/o Sh. Singara Singh Village Gagheri, Distt. Kurukshetra	Buffalo
27-6-72	Sh. Sant Singh S/o Sh.Chana Singh, Village Ismailabad, Distt. Karnal	Buffalo
17-5-72	Sh. Subhwant Singh S/o Sh. Sarain Singh, Village Gagheri, Distt. Kurukshetra	Buffalo
	KARNAL DIVISION	
3-7-72	Sh. Dina Nath Chopra Village Kuj Pura, Distt. Karnal	Buffalo
15-7-72	Smt. Kapoor Kaur W/o Sh. Darshan Singh, Village Mahilpur, Distt. Karnal	Buffalo
30-6-72	Sh. Kukam SinghS/o Chatru Village Sahahpur, Distt. Karnal	Buffalo
16-3-73	Sh. Swaran Dutt Village Samli, Distt. Karnal	Buffalo
15-5-73	Sh. Ram Chander S/o Multan Singh Village Kailash, Distt. Karnal	Buffalo
18-5-73	Sh. Sukh Ram S/o Gopi Ram Village Trori, Distt. Karnal	Buffalo
25-6-73	Sh. Chanan Singh S/o Sh. Khazan Singh, Village Drar, Distt. Karnal	Buffalo
5-6-73	Sh. Avtar Singh S/o Sh. Man Singh,	Buffalo

	Village Dachar, Distt. Karnal	
21-1-73	Sh. Ajit Singh S/o Sh. Prit Pal Singh, Village Budhan Pur, Distt. Karnal	Buffalo
2-7-72	Sh. Dhana Singh S/o Sh. Lachhman Singh Village Bakhli, Distt. Karnal	Buffalo
23-9-73	Sh. Dewan Singh S/o Sh. Sucha Singh Village Lalyani, Distt. Karnal	Buffalo
19-12-73	Sh. Jaswant Singh Neel Nagal Nilokheri, Distt. Karnal	Buffalo
3-12-73	Sh. Arjun Singh S/o Sh. Inder Singh Village Nissing, Distt. Karnal	Cow
22-5-74	Sh. Ram Chander S/o Sh. Kesar Dass Village Nagla Megha, Distt. Karnal	Buffalo
12-5-74	Sh. Iqbal Singh S/o Sh. Karam Singh, Village Nadhana, Distt. Karnal	Buffalo
27-6-74	Sh. Bali Ram S/o Sh. Naria Ram Village Bijana, Distt. Karnal	Buffalo
28-6-74	Sh. Rathi S/o Ganga Ram Village Daha, Distt. Karnal	Buffalo
	SUB-URBAN DIVISION PANIPAT	Buffalo
1-8-73	Sh. Raj Pal Singh Village Pabna Hanspur, Distt. Karnal	Buffalo

27-1-73	Sh. Sunder Lal Village Samalkha, Distt. Karnal	Buffalo
2-8-74	Sh. Darya Resident of Village Madloda, Distt. Karnal	Buffalo
4-12-73	Sh. Gopal Singh. R/o Village Madloda, Distt. Karnal	Mare
6-5-74	Sh. Isher Sing S/o Sh. Nagina, VPO. Bastara, Distt. Karnal	Buffalo
5-6-74	Sh. Rameshwar S/o Sh. Asha Ram VPO. Bastara, Distt. Karnal	Buffalo
13-6-74	1. Sh. Molar S/o Sh. Kanya 2. Sunder Singh S/o Sh. Mathura Village Bastara, Distt. Karnal	Buffalo
5-6-74	Sh. Anunodh Kumar S/o Sh. Jati Ran Village Sethana, Distt. Karnal	Buffalo
25-6-74	Sh. Balwant Singh S/o Sh. Takhat Singh Village Asandh, Distt. Karnal	Buffalo
	FARIDABAD DIVISION	
11-5-73	Sh. Ramesh Jindal Electric Strip Industry, Faridabad (Gurgaon)	Buffalo
23-7-73	Sh. Mohan Lal S/o Sh. Piara Lal Village Angwanpur, Distt. Gurgaon	Buffalo

	BALLABGARH DIVISION	
28-6-73	Sh. Jodha Ram S/o Sh. Rumal Village Sihi, Distt. Gurgaon	Buffalo
3-6-74	1. Sh. Chida S/o Sh. Ganga Lal 2. Sh. Mohan Singh S/o Sh. Ragubir Singh R/o Village Chhansa Distt. Gurgaon	Buffalo & Calf
	PALWAL DIVISION	
25-6-74	1. Sh. Tek Ram S/o Sh. Mansuk 2. Sh. Ratti Ram S/o Sh. Biku Sh. Ganeshi S/o Sh. Kalu R/o Village Kandal, Distt. Gurgaon	Buffalo & Calf
	REWARI DIVISION	
25-6-73	Sh. Ram Dial S/o Sh. Kalu Ram Village Kalaka, Distt. Gurgaon	Buffalo
16-7-73	Sh. Duli Chand Village Dharuhera, Distt. Gurgaon	Buffalo
28-6-73	Smt. Kamla Devi Village Budana, Distt. Mohindergarh	Buffalo
24-6-72	Sh. Jagmal Singh S/o Sh. Ramji Lal Village Chand Pur Dhani, Distt. Mohindergarh	Buffalo

2-7-73	Sh. Duli Chand S/o Sh. Kalu Ram VPO. Daru Khera, Distt. Mohindergarh	Buffalo
22-7-73	Sh. Nihal Chand S/o Mool Chand Village Ram Bas, Distt. Mohindergarh	Buffalo
31-8-73	Sh. Shiv Charan S/o Sh. Gopal Village Daruhera, Distt. Mohindergarh	Buffalo
25-6-74	Sh. Shiv Narain Singh VPO. Jesat, Distt. Gurgaon	Buffalo
26-6-74	Sh. Shiv Narain Singh VPO. Jesat, Distt. Gurgaon	Buffalo
7-8-73	Sh. Dev Raj Advocate Village Alamgirpur, Distt. Mohindergarh	Buffalo
10-9-73	Sh. Shiv Charan S/o Gopal Village Dahruhera, Distt. Mohindergarh	Buffalo
	SONEPAT DIVISION	
20-8-71	Sh. Ram Pal Village Panchi, Distt. Sonepat	Buffalo
15-3-72	Sh. Sadhu Ram Village Kheritage	Buffalo
14-7-72	Sh. Chatru S/o Sh. Kheri Village Mohti Distt. Sonepat	Buffalo
12-8-72	Sh. Shri Ram S/o Sh. Hukan Chand, Distt. Sonepat	Buffalo

13-8-73	Sh. Hukmi R/o Batra Colony, Dev Nagar, Sonepat	Buffalo
	DELHI DIVISION	
7-1-74	Sh. Randhir Singh S/o Sh. Gokhal Singh VPO. Dadhodha Kalan	Buffalo
7-4-74	Sh. Kushiar Singh S/o Sh. Dhan Ram Village Liwea, Distt. Sonepat	Buffalo
16-5-74	Sh. Inder Singh S/o Maha Singh Vilage Nangal Kalan, Distt. Sonepat	Buffalo
24-6-70	Sh. Ram Sarup Village Nahri, (Rohtak)	Buffalo
11-7-73	Sh. Shadi Ram S/o Sh. Shera Village Nathupur (Sonepat)	Buffalo
24-7-73	Sh. Rameshwar S/o Sh. Bhartu Village Sera (Sonepat)	Buffalo
7-1-74	Sh. Randhir Singh S/o Sh. Bhagwan Singh VPO. Dabodha Kalan (Rohtak)	Buffalo
17-7-71	Sh. Ismaikha Village Kherla Jalal Pur Distt. Gurgaon	Camel
16-7-73	Sh. Sukhbir Singh 12 Biswa Near Bari Chopra, Distt. Gurgaon	Bullock
16-4-74	Sh. Deep Chand S/o Sh. Shadi Village Nathu Pur, Distt. Karnal	Camel

23-7-71	Sh. Charan Singh S/o Sh. Mona Village Suphrali (Gurgaon)	Buffalo

चौ. दल सिंह: स्पीकर साहब, मिनिस्टर साहब ने मेरे सवाल के जवाब मैं फरमाया है कि कुली 50 केसिज डिसाइड किए गए हैं, जिसमें से 38 केसिज को बन्द कर दिया गया है, और 12 केसिज में कम्पैन्सेशन दिया गया है। तो मै। यह पूछना चाहता हूं कि जिन 12 केसिज में कम्पन्सेशन दिया गया है, उनमें जींद जिले के कितने केसिज हैं?

सरकार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठा: स्पीकर साहब, हम जो इनफर्मेशन देते हैं वह डिवीजन वाईज और सकर्मल वाईज होती है, डिस्ट्रिक्ट वाईज नहीं होती है।

चौ. दल सिंह: स्पीकर साहब, मिनिस्टर साहब ने एक लिस्ट दी हैं, उसमें इन्हीं ने फरमाया है कि कोई केस एक साल पुराना है, कोई दो साल पुराना है, कोई 7 साल पुराना, कोई 9 साल पुराना है, तो मैं इनसे यह पूछना चाहता हूं कि यह जो इतने पुराने केसिज हैं इनको अब तक क्यों नहीं डिसाइड किया गया है, जिन लोगों के पशु वगैरह मर गए हैं, उनको अब तक क्यों नही कम्पनसेट किया गया है? इसका क्या कारण है?

सरदर हरमोहिन्दर सिंह चट्ठा: स्पीकर साहब, इसके कई कारण हैं। सबसे पहले तो हम मैडीकल रिपोर्ट, फिर पुलिस

की रिपोर्ट, चीफ इलैक्ट्रिकल इस्पैक्टर की रिपोर्ट परचेज रसीद ओर क्लेम पैटीशन वगैरह, यह सारी सूचनाएं इकट्ठी करते हैं, जब फाइल कम्पलीट हो जाती है, तो जो कम्पनसेशन लेने के काबिल होते हैं, उनको दिया जाता है, दे भी रहे हैं।

चौ. दल सिंह: स्पीकर साहब, क्या मिनिस्टर साहब बतलाने की कृपा करेंगे कि जब ऐसे कई केसिज कम्पलीट ही नहीं होते हैं, तो फिर वे ऐसे केसिज को यहां हैडक्वार्टर पर लेते ही क्यों हैं। ऐसे केसिज को वापिस ही क्यों नहीं किया जाता?

सिंचाई तथा विद्युत मंत्री (श्री बनारसी दास गुप्ता): अध्यक्ष महोद, 30 जून, 1974 को जो 138 केसिज पैंडिग थे, उनमें से 52 केसिज का फैसला कर दिया गया है, शेश 86 केसिज को निपटाने के लिए हम कोशिश कर रहे हैं।

चौ. दल सिंह: स्पीकर साहब, मिनिस्टर साहब ने फरमाया कि 138 केसिज पैंडिग हैं, यह सवाल मैंने पिछली बार भी असैम्बली में किया था, उस वक्त भी इन्होंने फरमाया था ....

श्री अध्यक्ष: कौन से सैशन में किया था?

चौ. दल सिंह: एक साल हो गया है जी, उस वक्त तो इन्होंने कहा था कि 200 केसिज पैडिंग हैं, और अब कह रहे हैं कि 138 केसिज पैडिंग हैं, तो मैं इनसे यह पूछना चाहता हूं कि कौन सी इनकी बात को सच मानें पहले बात ठीक है यह कि पिछली बात ठीक है?

श्री बनारसी दास गुप्ता: दोनों ही ठीक हैं आप हिसाब लगाकर देखें, दोनों ही ठीक हो सकती हैं।

चौ. दल सिंह: स्पीकर साहब, मिनिस्टर साहब ने कहा है कि हम कोशिश कर रहे हैं, क्या वह बताएंगे कि किस प्रकार की कोशिश कर रहे हैं, उसका नतीजा क्या है?

श्री बनारसी दास गुप्ता: अध्यक्ष महोदय, हम यह कोशिश कर रहे हैं कि हमारे पास जो 5 तरह से सबूत आने चाहिएं वे शीघ्र ही जा जाएं, ताकि केस डिसाइड हो सकें।

10.00 बजे

पहले तो क्लेम पैटीशन आना चाहिए ओनर की तरफ से, फिर परचेज रसीद आनी चाहिए, उसके बाद पुलिस की इनवैस्टीगेशन की रिपोर्ट आनी चाहिए, चौथे नम्बर पर पोस्ट मार्टम रिपोर्ट आनी चाहिए तथा पांचवी चीफ इलैक्ट्रिकल इंस्पैक्अर की रिपोर्ट अपनी चाहिए। तो अध्यक्ष महोदय, मैं अर्ज कर रहा था कि कुछ तो बाते ऐसी होती हैं, जिनमें ओनर्ज की तरफ से ही देर हो ती है। या तो वे परचेज रसीद प्रोडयूस नहीं करते या कोई और रिपोर्ट प्रस्तुत नहीं करते। लेकिन जो ज्यादा केस पैंडिंग हैं, उनमें चीफ इलैक्ट्रिकल इन्सपैक्टर की रिपोर्ट न आने के कारण हैं। हमने जब इसका पता किया तो मालूम हहुआ है कि जो फील्ड में एक्सीयन हैं, उनको चीफ इलैक्ट्रिकल इंस्पैक्अर ने रिपोर्ट देने के लिए अथोराइज किया हुआ हैं। लेकिन चूंकि एक्सीयन के पा पहले ही

बहुत काम होता है, इसीलिए एक्सीयन से यह पावर विद्ड्री कर ली गई है ओर चीफ इलैक्ट्रिकल इंस्पैक्अर को इस काम के लिए और स्टाफ देने का निर्णय किया गया है।

चौ. दल सिंह: स्पीकर साहब, मैं यह पूछना चाहता हूं कि चीफ इलैक्ट्रिकल इंस्पैक्टर तो चण्डीगढ़ में बैठता है और यह रिपोट्ट नहीं देता है और देसरी तरफ जो एक्सीयन है वह मौके पर बैठता है, तो एक्सीयन से पावर विद्ड्रा कर लेने से तो और भी बड़ा गर्क हो जाएगा?

Mr. Speaker: No arguments. Please put a supplementary.

चौ. दल सिंह: स्पीकर साहब, यह बड़ी हैरानी की बात है .....

Mr. Speaker: This is not a supplementary.

चौ. दल सिंह: स्पीकर साहब, मैं यह कहना चाहता हूं कि चीफ इलैक्ट्रिकल इंस्पैक्टर जो चण्डीगढ़ में रहता है, वह तमाम जिलों का दौरा नहीं कर सकता .....

Mr. Speaker: No speech during question hour. I will not allow any speech. Put a supplementary question.

चौ. दल सिंह: स्पीकर साहब, मैं यही कहना चाहता हूं कि चूंकि चीफ इलैक्ट्रिकल इंस्पैक्अर सारे जिलों में दौरा करने

नहीं जा सकता इसीलिए एक्सीयन से यह पावर विद्ड्रा नहीं करनी चाहिए।

श्री बनारसी दास गुप्ता: अध्यक्ष महोदय, मेरे साथी को बात समझनी चाहिए। मैंने पहले भी यह बात कही है। इंडियन इलैक्ट्रिसिटी रूल 1956 सारे भारतवर्श के लिए है, उसके अनुसार जितनी चीजें केसिज को डिसाइड करने के लिए जरूरी होती हैं, वे हमें पूरी करनी होती हैं। इसीलिए चीफ इलैक्ट्रिकल इंस्पैक्टर की रिपोर्ट भी हमें जरूर लेनी पड़ती है। एक्सीयन के बारे में मैंने अभी निवेदन किया है कि उसके पास काम इतना अधिक होता है कि वह इस काम के लिए अधिक समय नहीं निकाल सकता। जहां तक चीफ इलैक्ट्रिकल इंस्पैक्टर का ताल्लुक है, वह चण्डीगढ़ में बैठा रिपोर्ट नहीं करेगा, रिपोट्र वह स्टाफ करेगा, जो फील्ड में काम करने के एिल उसे अतिरिक्त दिया जाएगा।

चौ. फल चन्द (मुलाना): स्पीकर साहब, मरे हुए पशु का जो कम्पनशेसन दिया जाता है, वह उसकी कीमत से कहीं कम होता है तो मैं जानना चाहता हूं कि क्या उनका मुआवजा उनकी कीमत के बराबर दिया जाएंगा?

श्री बनारसी दास गुप्ता: ओनर जो परचेज रसीद पेश करता है, मुआवजा उसके मुताबिक दिया जाता है।

चौ. पीर चन्द: अभी मंत्री महोदय ने रसीद पेश करने के बाबत कहा तो मै। यह पूछना चाहता हूं कि अगर कोई जानवर घर में पैदा होता है, तो उसकी रसीद कहां से बनवाई जाए?

श्री बनारसी दास गुप्ता: कीमत का कोई न कोई प्रमाण तो देना होगा।

चौ. दल सिंह: जैसे जवाब में अभी बताया गया कि इतने केसिज पैंडिंग पड़े हैं, तो क्या सरकार ऐसा विचार रखती है कि ऐसे केसिज को एक्सीयन 6 महीने के अन्दर–अन्दर निकाल दे ओर फिर एक साल के अन्दर अन्दर बोर्ड की उसे निकालने की जिम्मेदारी हो?

श्री बनारसी दास गुप्ता: स्पीकर साहब, इसमें कई विभाग इनवाल्वड हैं, यह केवल एक्सीयन के बस की बात नहीं है कि वह 6 महीने में पूरा कर दे। मालिक की रसीद, पुलिस की इनवैस्टीगेशन रिपोट्र तथा पोस्ट मार्टम रिपोर्ट वगैरह जरूरी हैं। यह सारा प्रोसीजर पूरा करना पड़ता है इसलिए केवल एक्सीयन के ऊपर यह भार नहीं डाला जा सकता।

चौ. फूल सिंह कटारिया: क्या मंत्री महोदय बताएंगे कि पशुओं का तो रसीद से साबित करते हैं अगर कोई इन्सान मर जाता है तो उसके लिए क्या प्रोसीजर है?

Mr. Speaker: Order please. This is not a supplementary to this question.

Question Hour is over.

चौ. राम लाल वधवा: स्पीकर साहब, मेरा एक एडजर्नमैंट मोंशन था .....

Mr. Speaker: Order please. That has been ruled out of order.

चौ. राम लाल वधवा: * * * *

Mr. Speaker: Nothing to be recorded without my permission.

चौ. राम लाल वधवा: * * * *

Mr. Speaker: Nothing should form part of tghe proceedings.

चौ. राम लाल वधवा: * * * *

Mr. Speaker: When a motion has been ruled out of order by the Chair, it cannot be allowed to be raised.

चौ. राम लाल वधवा: * * * *

Mr. Speaker: Order please. Nothing should come on record what has been said in this House without my persmission.

चौ. राम लाल वधवा: * * * *

Mr. Speaker: I have ruled out the motion and I cannot allow it ot be raised again in the House (Interruptions).

चौ. चांद राम: स्पीकर साहब, अगर कोई इम्पौर्टैंट मसला हो, उसको किस तरीके से उठाया जाए उसके लिए तो कोई तरीका बता दें (शोर)

Mr. Speaker: When the motion is not in order, how can I allow it to be raised on the floor of the House?

चौ. राम लाल वधवा: * * * *

Mr. Speaker: Order please.

चौ. राम लाल वधवा: स्पीकर साहब, वह जो बात कह रहे हैं, उसको सुन तो लीजिए वह यह कह रहे है, (शोर)

Mr. Speaker: Order please. It is a mmater of ordinary administration of law and it has been admitted even in your own motion I

*अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

cannot allow it to be raised on the floor of the House when I have ruled it out of order.

चौ. राम लाल वधवा: * * * *

Mr. Speaker: Nothing to form part of the record.

चौ. चांद राम: आप किस आधार पर कहते हैं कि नथिंग टू बी रिकार्डिड – (शोर) * * * * कोई तरीका बताएं कि किस तरह से बोलें। (शोर)

Mr. Speaker: Please read sub-clause(x) of rule 68.

चौ. चांद राम: * * * *

Mr. Speaker: Order please. Nothing to form part of the record what has been said without my permission.

चौ. चांद राम: * * * *

चौ. राम लाल वधवा: * * * *

Mr. Speaker: When your conduct is becoming disorderly. I shall have to name you.

चौ. चांद राम: * * * *

चौ. राम लाल वधवा: * * * *

Mr. Speaker: Your conduct is becoming disorderly. You are interrupting the business of the House. I shall have to name you. Please resume your seat.

बहिर्गमन

चौ. चांद राम: अगर आप हमार बात नहीं सुनते तो हम सारे चले जाते हैं।

चौ. राम लाल वधवा: हम वाक आउठ करते हैं।

(इस समय चौ. राम लाल वधवा, चौ. पीर चन्द तथा चौ. चांद राम वाक आउट कर गए।)

Mr. Speaker: Tikka Jagjit Singh may please move his resolution.

*अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

चौ. दल सिंह: * * * *

Mr. Speaker: Order please. I have already called Tikka Jagjit Singh to move his resolution. He may please do so.

श्री गणपत राम: * * * *

Mr. Speaker: Nothing to form part of the record what has been said without my permission.

श्री गणपत राम: तो फिर हम वाक आउट करते हैं।

(इस समय श्री गणपत रात तथा चौ. दल सिंह वाक आउट कर गए।)

श्री जगजीत सिंह टिक्का: स्पीकर साहब, इन्होंने अखबरों में अपना नाम लाना था .....

Mr. Speaker: Order please. Move your resolution.

मुख्यमंत्री (चौ. बंसी लाल): स्पीकर साहब, यह पार्ट आफ प्रोसीडिंग्ज है, या नहीं?

Mr. Speaker: Nothing.

गैर–सरकारी संकल्प

भारत सरकार से बिजली उत्पादन बढ़ाने के लिए हरियाणा राज्य को पर्याप्त निधियां एलोकेट करने तथा आवश्यकता अनुसार पूरी बिजली उत्पादन करने के योग्य होने तक अन्य राज्यों से बिजली एलोकेट करने के लिए निवेदन करने के सम्बन्ध में।

Sh. Jagjit Singh Tikka (Naraingarh): Sir I beg to move –

This House recommends to the State Government to approach the Government of India to allocate adequate funds to the State of Haryana for increasing the power generation. In the life of present day world, power plays a great role in every sphere such as Agriculture, Industry, Health, Trade etc. etc. Therefore generation of power, the the extent that it can satisfy complete needs of all sectors is very necessary. Haryana State was progressing in Agriculture and Industry in an exemplary way but this year the shortage of power has brought down the produciton in Agriculture and Industry to a great extent which also affected the employment of labour. Therefore adequate provision of funds for power generation is necessary and till Haryana State is able to produce power to the full satisfaction of its power need, the Government of India may allocate power from other States so that the tempo of progress is not affected in Haryana.

स्पीकर साहब, यह प्रस्ताव जो मैंने पेश किया है इसके जरिए मेरा ख्याल है कि केवल मैं ही नहीं, इस सदन का हर मैंबर साहब चाहे कोई इधर बैठा है, चाहे उधर बैठा है, यह चाहता है कि हमारी यह सरकार भारत सरकार से यह निवेदन करे कि पावर

जनरेट करने के लिए जब तक हमारे पास अपने फंडज नहीं, वह हमें फन्डज दें ओर जब तक हम अपनी

*अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

जरूरत के मुताबिक पावर पैदा न कर सकें, उस वक्त तक हमें भारत सरकार अपने रिसोर्सिज से और दूसरी स्टेटस से बिजली दिलाए और वह इतनी दिलाए कि हमारी तमाम जरूरत पूरी हो सके। बिजली आज के जमाने में एक ऐसी चीज है कि इसके बगैर जिन्दगी के हर सफीयर का काम ठप्प हो जाता है और खास तौर पर दो सफीयर्ज एक इंडस्ट्रीज और दूसरे ऐग्रीकल्चर का कमा तो बिल्कुल ही ठप्प हो जाता है।

श्रीमती चन्द्रावती: आन ए प्वायंट आफ आर्डर सर। मेरी आपसे रिक्वैस्ट है कि आप अपने सैक्रेटेरिएट को गाइड करें कि ... ...

Mr. Speaker: Order please. This is not a point of order. Yesterday I had also requested the honourable Member to read rule 112 first and then raise a point of order.

श्रीमती चन्द्रावती: मेरी आपसे रिक्वैस्ट है और मैंने यह बात कहनी है कि .....

Mr. Speaker: This is not a point of order.

श्रीमती चन्द्रावती: हम आपसे ही गाइडैंस चाहते हैं और .....

Mr. Speaker: A point of order can be raised regarding a business before the House at the moment.

श्रीमती चन्द्रावती: मैं वही बात करत रही हूं जो ऐट दी मोमैंट हाउस के सामने है, और ऐजंडा पर है और .....

Mr. Speaker: Question are not before the House.

श्रीमती चन्द्रावती: जो बात आज के ऐजंडा पर है, उसी के बारे में मेरी रिक्वैस्ट है कि क्वैश्चन आवर टाइम से पहले ही खत्म हो जाता है और मैंने बहुत सारे क्वैश्चन्ज के नोटिस भेजे हुए हैं .....

Mr. Speaker: Order please. Same repetition again. This is not a point of order.

श्री जगजीत सिंह टिक्का: मैं अर्ज कर रहा था कि यह जो बिजली है इसका रोल हमारी जिन्दगी में इतना अहम हो गया है कि इसके बगैर गुजारा नहीं हो सकता और खास तौर पर इंडस्ट्री और ऐग्रीकल्चर के काम तो अब चल ही नहीं सकते हैं। मैं बताना चाहता हूं कि पहले हम लोगों को कितनी बिजली देते थे और अब कितनी दे रहे हैं। हरियाणा की यह छोटी सी स्टेट हर सफीयर में नुमायां तरक्की करती चली आ रही है और 1968 क बाद जब से यह सरकार आई है इतनी तरक्की इसने कर दी है कि हिन्दुस्तार के लोग तो क्या दुनियां के लोग यह देख कर हैरान होते है कि हरियाणा ने इतनी जल्दी इतनी तरक्की कैसे कर ली है जबकि दूसरे बड़े–बड़े इलाके पीछे रह गए हैं। हमारी इस

सरकार ने जो इतने सराहनीय काम किए हैं उनकी वजह से इतनी तरक्की हुई। 1973 में हम लोगों को 53.8 लाख यूनिट्स बिजली देते थे, लेकिन उसके मुकाबले में आज हम सिर्फ 41 लाख यूनिट बिजली लोगों को दे रहे हैं। यह देखकर तो यही कह सकते हैं कि यह तरक्की नहीं, बल्कि हम नीचे की तरफ आए हैं, लेकिन यह हमारे बस की बात नहीं है और यह इसलिए हुआ है क्योंकि हमारे पास फंड्स अवेलेबल नहीं है और बगैर फंडज के हम कैसे काम कर सकते हैं, हमारे में तरक्की करने की अर्ज है तरक्की करने के पोटैशियल हैं, लेकिन फंडज की कमी हमारे रास्ते में आ रही है और हमारे कदम आगे नही बढ़ने देतीहै। इसलिए भारत सरकार को चाहिए कि वह हमें फंडज दे ताकि हमारे तरक्की के कदम आगे ही बढतें रहें। इस वक्त हमारी मौजूदा बिजली की डिमांड 75 लाख यूनिट्स है, लेकिन हमें मिल सिर्फ 41 लाख यूनिट्स रही है, जो कि बहुत बड़ा गैप है। हमारी डिमांड घटती नहीं है आगे ओर बढ़नी है। पावर जररेट करने के काम बहुत खर्चीले होते है और हम इन अखराजात को अपने रिसोर्सिज से मीट नहीं कर सकते हैं। हमें इतने ज्यादा फंडज की जरूरत है कि हम भारत सरकार की मदद के बगैर उनको पूरा नहीं कर सकते हैं। मिसाल के तौर पर मैं बताना चाहता हूं कि हमें कितने फंडज की जरूरत है जो हमें जो यह प्रोजैक्ट्स चल रहे है उनको पूरा करने और उनका शेयर मीट करने के लिए चाहिएं। जैसे ब्यास प्रोजैक्ट बन रहा है उसे बनाने के लिए हमारा शेयर 62 करोड़ रूपए बनता है। इसी तरह से डैहर स्कीम के लिए हमारा शेयर 49 करोड़ रूपए बनता है

जो हमें देना हे ओर अगर हम उसे नहीं देंगे तो हमें वहां पर पावन का शेयर नहीं मिल सकेगा। फिर फरीदाबाद के थर्मल यूनिट्स के लिए 30 करोड़ रूपये की जरूरत है। एक यूनिट तो बन गया है और चालू होने जा रहा है और दूसरा बनना बाकि है। इसी तरह से दो थर्मल प्लांट्स पानीपत में लगाए जाने हैं और उनके लिए 13.5 करोड रूपए की जरूरत है। अगर यह पैसा हमारे पास नहीं होता, तो बगैर पैसे के यह काम ओर स्कीमें पावर जररेट करने की पूरी नहीं होगी ओर इस वजह से हमारा सारा ऐग्रीकल्चर और इंडस्ट्री का काम ठप्प हो जाएगा। पहले ही यह हालत हो रही है कि जो प्रोग्रैस का हमारा पेस था, वह ढीला पड़ रहा है, क्योंकि पावर की शार्टेज है और यह पूरी नहीं मिल रही है फैक्ट्रीज पर पावर कट लग रहे हैं। पहले यह हालत था कि दूसरी स्टेट्स से लोग आकर हरियाणा में इंडस्ट्रीज लगाते थे लेकिन जब सोचते हैं कि देहली चले जाएं क्योंकि वहां बिजली की इतनी कमी नहीं है और पावर ज्यादा मिलती है। पावर शार्टेज की वजह से ऐग्रीकल्चर पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है। हमने ऐग्रीकल्चर में कितनी तरक्की की है, उसकी मिसाल देना चाहता हूं। पहले आप टयूबवैल कनैक्शन्ज की ही बात ले लो। 1968 में हमारे पास 29 हजार टयूबवैल कनैक्शन्ज होते थे और 1974–74 में यह 130853 हो गए और अब यह और बढ़ गए हैं। अब पावर का यह हाल है कि प्राईवेट इंडीविजुअल की बात तो छोड़ो ऐम.आई.टी.सी. के जो टयूबवैल हैं, जिन पर एक–एक पर एक लाख से भी ज्यादा खर्चा हुआ है, बगैर पावर के चल नहीं पा रहे हैं ओर सैकड़ों की तादाद

में बिजली न मिलने की वजह से चल नहीं पा रहे हैं। अगर यही हाल रहा तो हमारी तरक्की ठप्प हो जाएगी। इसी तरह मैं अब इंडस्ट्री की तरफ आता हूं। हरियाणा में 1968–69 में 471 स्माल इंडस्ट्रियल यूनिटस रजिस्टर्ड थे ओर यह बढ़कर 1973–74 में 14308 हो गए और आज तकरीबन यह 15 हजार तक पहुंच गए हैं। आप देखें कितनी तरक्की इस सफीयर में हरियाणा ने की है और कर रहा है कि इतने थोड़े से अर्से में 471 यूनिट्स से चलकर 15 हजार यूनिट्स तक पहुंच गए है जोकि रजिस्टर्ड है। लेकिन अब बिजली का संकट आ गया है। अगर हम इन यूनिट्स को पूरी बिजली न दे पाए तो सारा काम ठप्प हो जाएगा। इसका अगर न र्सि इंडस्ट्रियल प्रोडक्शन पर ही पड़ेगा बल्कि हजारों की तादाद में मजदूर बेकार हो जाएंगे। मैं अर्ज करता हूं कि अगर अकेले फरीदाबाद बल्लभगढ़ कम्पलैक्स में ले आफ हो जाए, तो 75 हमार मजदूर लेबर बेकार हो जाती है।

ऐसी हालत में उनको रोजी कौन देगा? इंडस्ट्रियलिस्ट्स तो देंगे नहीं, क्योंकि उन्होंने तो काम ही नहीं लिया। इससे जो हमारी इंडस्ट्रीज को लांस हुआ है उसका अगर हम अन्दाजा लगाएं, तो वह तो पता नहीं कहां पहुंचे, लेकिन एक छोटी सी मिसाल मैं देता हूं। मेरे ख्याल के मुताबिक जुलाई से अक्तूबर तक चार महीनों में तकरीबन 80 करोड़ रूपए के प्रोडक्शन लांसिज हैं। इनमें से अकेले फरीदाबाद में तकरीबन 60 करो़ड़ के लासिंज हैं। (इस समय उपाध्यक्षा पदासीन हुई) एक

दिन में वहां पर डेढ़ दो करोड़ के लौसिज हो जाते हैं। इसी तरह सोनीपत का हाल है। वहां पर तकरीबन चार करोड़ के लासिज हैं। अम्बाला में तकरीबन एक करोड़ के लॉसिज हैं। अगर यही हाल चलता रहा और इसी तरह हमारा नुक्सान होता रहा, तो हमारा बहुत बुरा हाल हो जाएगा। लेकिन उसके लिए हमारी सरकार अपने आप कुछ नहीं कर सकती भारत सरकार जब तक फंडज न दे। इस पर कुछ आदमी यह कह सकते हैं कि इसकी बजाय डीजल सैट्स लगाकर पावर पैदा कर ली जाए। ठीक है कुछ अमीर आदमी ऐसे भी हैं जो जनरेटिंग सैट्स लगा लेते हैं, लेकिन मै। बताना चाहूंगा कि जहां पानी से बिजली पैछा करने पर 22 पैसे पर–यूनिट खर्चा आता है, वहां जैनरेटर लगाकर बिजली पैदा करने में तकरीबन चौगुना खर्चा पड़ जाता है। यही नहीं फिर डीजल भी नहीं मिलता। उसक लिए दूसरा जो सामान चाहिए, वह भी नहीं मिलता है। तो यह चीज अगर हमारी सरकार के वश में होती तो हम सरकार से कहते कि आप ऐसा करें, लेकिन यह सरकार के वश की चीज नहीं है। डिप्टी स्पीकर साहिबा, हमारे पास कुछ ऐसी भी इंडस्ट्रीज हैं, जिनका कन्टीन्यूअस प्रोसैस होता है। मिसाल के तौर पर आपकी ग्लास फैक्ट्रीज हैं और सीमेंट फैक्ट्री हैं। इनकी फरनेसिज (भट्टियां) ऐसी होती हैं कि वे हर वक्त चलती रहनी चाहिएं। अगर पावर कट हो जाए तो वे बन्द हो जाती हैं जिससे उनको बहुत बड़ा डैमेज होता है। अल्टीमेटली इसका स्टेट की प्रोग्रैस में प्रभाव पड़ जाता है। इन चीजों को दूर करने के लिए जब तक साधन नहीं होंगे, उस समय तक हमारी

स्टेट कुछ नहीं कर पाएगी। ठीक है, बिजली की कुछ बढ़ोत्तरी हो सकती है, यदि जैनरेटिंग सैट्स के लिए हम लोन दें। लेकिन इसके लिए भी ऐसा प्रबन्ध करना पड़ेगा कि यह लोन बहुत से लोगों को मिले, वरना फायदा कोई नहीं होगा, यह बात भी प्रशंसनीय होगी यदि ऐग्रीकल्चरल सैक्टर में भी और इंडस्ट्रियल सैन्टर में भी कुछ हौर्स पावर तक की कन्जम्पशन पर ऐग्जम्पशन दे दें। मैं जानता हूं कि यह होना बहुत मुश्किल है, क्योंकि पावर ही हमारे पास बहुत कम है, लेकिन फिर भी यदि किसी तरीके से यह हो सके तो पांच या सात हौर्स पावर तक कन्जम्पशन करने वाले यूनिट्स को चाहे, वे ऐग्रीकल्चरल सैक्टर में हों, या इंडस्ट्रियल सैक्टर में हो, बिजली के कट से ऐग्जम्पशन दे दी जाए ताकि इंडस्ट्रियल सैक्टर में भी कुछ प्रोडक्शन होती रहे, गरीब मजदूर लोग अफैक्ट न हों, और छोटे काश्तकार भी जरूरत के समय अपने टयूबवैल्ज आदि को चला सकें।

इसके अलावा, डिप्टी स्पीकर साहिबा हमारे पास पावर के लिए जो सोर्सिज हैं, उनको टैप करना पड़ेगा। राणा प्रताप सागर, बदरपुर और दूसरे जो पावर प्लांट्स हैं, इनसे अगर हमें ज्यादा पावर मिले, तब तो गुजारा चलेगा वरना हरियाण में डिवैल्पमैंट का जो टैम्पों बना हुआ है, वह बना नहीं रह सकेगा और हमें नुक्सान उठाना पड़ेगा। इंडस्ट्रियल सैक्टर में डिवैल्पमैंट करने के लिए कई जगहों पर सरकार काफी कुछ कर रही है। फरीदाबाद, सोनीपत, गुड़गांव और रोहतक आदि स्थानों में

सरकार और इंडस्ट्रीज लगाने के लिए जमीन एक्वायर कर रही है ओर इंडस्ट्रियल कालोनीज अम्बाला कैन्ट, करनाल, जींद, रिवाड़ी नरवाना और टोहाना में बनाने की योजना है, लेकिन ये सारी स्कीमें यदि पैसा न हुआ तो पेपर्ज पर ही रह जाएंगी। यही हाल ऐग्रीकल्चर सैक्टर में है। जब हरियाणा बना था, उस समय यह स्टेट एक लाख टन के करीब अनाज बाहर से मंगवाया करती थी, लेकिन पिछले साल तक 13 लाख टन तक अनाज हम बाहर भेजते रहे हैं। इस साल इसमें कुछ कमी हुई है। इसके और कारण भी हैं, लेकिन सबसे बड़ा कारण बिजली का न होना है क्योंकि जब बारिश न हो, तो किसान टयूबवैल्ज आदि का पानी देकर गुजारा कर सकता है। इस वर्श पैडी में हमें तकरीबन चालीस परसैन्ट लॉस हुआ है। बाजरा और मेज में भी तकरीबन इतना ही नुक्सान है। गेहूं जितनी ऐक्सपैक्ट करते थे, उससे बहुत कम है। अभी मिनिस्टर साहब ने बताया और वैसे भी मुझे मालूम है, क्योंकि अखबारों में यह बात निकली थी कि पहले हाल यह था कि फर्टीलाइजर को ब्लैक में बेचा जाता था, लोग ब्लैक में पैसा कमाते थे, लेकिन आज हमारे पास 70 लाख टन से ज्यादा स्टॉक पड़ा है, लोग खरीद नहीं रहे हैं। इसकी एक वजह कीमत है, लेकिन दूसरी वजह बिजली है। कीमत तो कम्पनसेट हो जती है, क्योंकि प्रोडयूस के भाव बढ़ जाते हैं, लेकिन बिजली के बगैर किसान सोचता है कि खाद देकर यदि वह पानी न दे सका तो उसको फायदा की बजाय नुक्सान हो जाएगां डिप्टी स्पीकर साहिबा, पानी न होने की वजह से इस बार सोईग भी किसी–किसी जिले में इतनी कम हुई

है कि मेरे अन्दाजे के अनुसार तकरीबन 33 परसैन्ट लॉस सोईग का होगा। जब सोईग ही कम हो, तो प्रोडक्शन क्या होगी? इन सब बातों का इलाज बिजली है। डिप्टी स्पीकर साहिबा, मुझे यह बात बार–बार दोहरानी पड़ती है, लेकिन क्या करूं इसके बगैर चारा भी नहीं है। जब तक हमारी सरकार इस काबिल नहीं होती, कि वह बिजली पैदा कर सके, हम अपने आपको सैल्फ सफिशिएंट नहीं कह सकते। वैसे तो हरियाणा ने अब तक जितनी तरक्की की है, उतनी आज दिन तक कोई नहीं कर पाया है, लेकिन अगर अब हमें बिजली नहीं मिलती, तो हम हर तरह से पीछे चले जाएंगे।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, एक और चीज मैं यहां बताना चाहता हूं। यह भी कई आदमी कहते हैं कि इलैक्ट्रिसिटी से हमें कोई रिटर्न नहीं है। अगर इलैक्ट्रिसिटी की रिटर्न को हम देखें, तो 1967–68 में यह 7.30 परसैन्ट थी। और सन् 1972–73 में आकर वह 5.3 परसैन्ट हो गई। इसका मतलब यह नहीं कि यह रिटर्स कम है। जो इतना ऐक्सपैन्डीचर हुआ है, वह आहिस्ता–आहिस्ता ही कम होगा। अगर हमारी स्टेट के मुकाबले में दूसरी स्टेट को देखें, तो आन्ध्र और राजस्थान की कुछ ज्यादा है।

श्री के.एन. गुलाटी: आन ए प्वांयट आफ आर्डर डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैंने मैडिकल चैक–आप के लिए पी.जी.आई. जाना है। इसलिए आप बोलने के लिए टाईम फिक्स कर दें ताकि जल्दी से दूसरों का नम्बर भी आ सके।

श्री जगजीत सिंह टिक्का: मूवर पर तो कोई टाईम लिमिट नहीं होनी चाहिए उसने तो सारा डिटेल में बताना होता है।

उपाध्यक्षा: आपको मालूम होना चाहिए कि मूवर के लिए टाईम लिमिट नही होती है। दूसरे आप तो सारा दिन पड़ा है। यदि आप बोलना चाहते हैं, तो आपको टाईम मिलेगा।

श्री जगजीत सिंह टिक्का: मैं बता रहा था कि हमारे सूबे का और दूसरे सूबों की रिटर्न का मुकाबला करें, तो सिर्फ आन्ध्र प्रदेशन और राजस्थान की थोड़ी सी ज्यादा है। राजस्थान की रिटर्न 6.5 परसैन्ट है और आन्ध्र की 7.5 परसैन्ट है, बाकि जितने भी सूबे हैं चाहे कोई बड़ा है या छोटा है या तो हमारे बराबर है या हमारे से बहुत कम है। मिसाल के तौर पर आसाम की एक परसैंट, बिहार की दो परसैन्ट और यू.पी. की 4.5 परसैन्ट रिटर्न है। उड़ीसा की भी इसी तरह से 2.2 परसैन्ट रिटर्न है। पंजाब का सूबा हालांकि हमारे से बड़ा है। वहां तरक्की भी हमारे बराबर ही है, लेकिन वहां की रिटर्न भी 5.1 परसैन्ट है। केरल ओर वैस्ट बंगाल की रिटर्स हमारे बराबर सी ही है। उनकी 5.3 परसैन्ट आ जाती है। इससे यह जाहिर हो जाता है कि हमारे यहां बिजली में इतना कट लग जाने के बावजूद भी हम सबको यह बता सकते हैं कि हम ठीक हैं। हमारी रिटर्स ठीक ही है। सन् 1968 में हरियाणा में 1262 गांवों को बिजली दी हुई थी, लेकिन आज 6669 गांवों को बिजली दी हुई है। यह हम फख्र के साथ सिर

ऊंचा करके कह सकते हैं कि इस तरह से किसी भी स्टेट के अन्दर बिजली नहीं दी गई। हमें एक बात में शर्मिन्दा होना पड़ रहा है कि एन् 1973 में 53 लाख यूनिट थी और अब 48 लाख यूनिट बिजली है। अब हमारे यहां पूरी बिजली नहीं है। हम चाहते है कि हम बिजली खर्च करें। हमारी जो इंडस्ट्रियल यूनिट्स हैं, ऐग्रीकल्चर यूनिट्स हैं, उन पर बिजली खर्चा करें। जो भी दूसरे साधन है। जिसके लोगों को रोजगार मिले, उस पर बिजली खर्च करें ताकि हरियाणा को आगे ले जाएं। जब तक हरियाणा में बिजली ज्यादा पैदा नहीं होगी, तब तक उन्नति नहीं हो सकती। हमारे यहां अब कन्ज्यूमर्ज की तादाद बहुत ज्यादा बढ़ गई है। हमारी ट्रेड को फायदा तभी पहुंच सकता है, जब ज्यादा बिजली हो। बिना बिजली के कोई भी धन्धा नहीं चल सकता। अन्धेरे में बैठाकर वे अपना धन्धा नहीं चला सकते। इसके बगैर गुजारा नहीं है। किसान को भी आज बिजली की आवश्यकता है, उसके बगैर उसका कोई काम नहीं हो सकता। मैं दूसरी तरफ तो नहीं जाऊंगा, क्यों कि कहने को और भी काफी बातें हैं, मैं बिजली के बारे में ही कहूंगा। ऐग्रीकल्चर इंडस्ट्री और जो दूसरे ट्रेड हैं, उन्हीं के बारे में बोलने का मेरा विचार है। कल मेरे भाई राम लाल जी वाक आउट कर गए थे। उन्होंने इसलिए वाक–आउट किया था कि उनको बिजली के बारे में बोलने के लिए टाईम नहीं मिला। आज जब यह प्रस्ताव हाउस के सामने है, बिजली के विशय में उनको बोलने का मौका मिला है, आज पता नहीं वे हाउस से गायब हैं। जो सिनसियोरिटी की बातें किया करते हैं, आज उनको

यहां हाउस में होना चाहिए। जो बात वे कल नहीं कह सकते थे, वे आज दिल खोल कर कह सकते हैं। मुझे उम्मीद तो है कि वे हाउस में वापिस आ जाएंगे वरना एक प्वायंट और उसके खिलाफ जाता है।

अब जितनी हरियाणा में वाटर सप्लाई की स्कीमें हैं उनके बारें में भी अर्ज करना चाहता हूं, क्योंकि वे भी बिजली से ही सम्बन्ध रखती है।

उपाध्यक्षा: आप अभी कितना टाईम और लेंगे आपको बोलने हुए आधा घन्टा हो गया है।

श्री जगजीत सिंह टिक्का: जो रूरल वाटर स्कीम्ज हैं, वे हमारे एरिया में भी हैं और दूसरे एरिया में भी हो सकती हैं। बिना बिजली के ये स्कीमें चल नहीं सकती है। मेरा अपना सब–डिवीजन नारायणगढ़ है और कुछ अम्बाला जिला का हिस्सा है और मोरनी हिल्ज वगैरह का एरिया आता है। हमारे इस इलाके में केवल बिजली से टयूबवैल्ज चल सकते है, वह भी जब पानी लिफ्ट करके जमीदारों को देंगे तभी खेतों को पानी मिल सकता है, वरना नहीं। लिफ्ट स्कीम के लिए बिजली चाहिए। अगर सरकार सब को पानी नहीं दे सकती तो लोगों के दिलों में बड़ा ख्याल आता है कि इस सरकार ने भी हमें पानी नहीं दिया और इससे पहले जो सरकार थी, उसने भी नहीं दिया तो इसलिए हर गांव को पानी मिलना अत्यन्त आवश्यक है। सरकार ने काम तो बहुत किया है।

सरकार बहुत स्कीमें चला रही है। मेरे अपने नारायणगढ़ मे भी बहुत स्कीमे चल रही है। यह मैं मानता हू कि आजकल सरकार के पास पैसे की भार्टेज है लेकिन उसके बावजूद भी हरियाणा में काफी स्कीमें चल रही है। पैसे की कमी के कारण इतनी ज्यादा नही चल रही है, जितनी चलनी चाहिए। हमारे ऐरिया में अब भी ऐसे गांव है, जहां पर पानी की बहुत ज्यादा ही तंगी है। अज भी वे गांव जोहड़ों का पानी पीते है। जोहड़ों का पानी पीते है। जोहड़ों में कीड़े पड़ जाते है, वे बेचारे छान कर पानी पीते है। जब तक सरकार के पास पैसा नही होगा उतने तक पूरी तरह से काम नही कर सकती। हमारे यहां अब भी एक पानी की स्कीम चल रही है, जिससे 20–30 गांवों को पीने का पानी मिलेगा। इसी प्रकार से हमारे इलाके में टयूबवैल्ज का खासतौर से जिक्र आता है। वैसे तो सरकार की बड़ी मेहरबानी है कि जो चीज हम स्पप्न में ख्याल नहीं करते थे वह हमारे इलाके में होने जा रही है। हमारे अम्बाल जिले का बहुत–सा इलाका है, जिसमें नहरों से पानी नहीं आ सकता है, इस इलाके में टयूबवैल्ज से ही पानी देना पड़ेगा। टयूबवैल्ज के लिए बिजली की आवश्यकता पड़ेगी। हमारे इलाके में बहुत से टयूबवैल्ज एम.आई.टी.सी. ने भी गलाए हैं, बहुत से अपने आप भी लोगों ने लगाए हैं, लेकिन वे सभी बिजली की कमी के कारण नहीं चल रहे हैं। मैं आपकी मार्फत सरकार से भी और बिजली बोर्ड से यह निवेदन करूंगा कि चाहे हरियाणा में बिजली की कमी है, लेकिन ऐग्रीकल्चर टयूबवैल्ज को कहीं न कही से काटकर टाप प्रायरिटी देकर बिजली दी जाएं उनको सोईग के

लिए आवश्यक पानी मिलना चाहिए। सरकार ने जब इतने बड़े–बड़े प्रोजैक्ट बनाए हैं, ब्यान प्रोजैक्ट है, डेहर प्रोजैक्ट है, क्लेसर प्रोजैक्ट है। जब तक इन प्रोजैक्टस से हमें पानी नहीं मिल जाता तब तक हमारा काम पूरा नहीं चल सकता। यह काम सरकार तक तक नहीं कर सकती, जब तक हमें भारत सरकार से पैसा नहीं मिलेगा। पैसे बिना ये प्रोजैक्टस और दूसरे काम पूरे नहीं हो सकते। यह किसी से छिपी हुई बात नहीं है कि हरियाणा तरक्की कर रहा है, लेकिन पैसा नहीं मिला, तो इसकी तरक्की रूक जाएगी। हमारे हरियाणा के लोगों में जो पहले उत्साह पैदा हुआ था वह कम होता जा रहा है, क्योंकि यहां पर बिजली की कमी होती जा रही है। पहले पंजाब में काफी इंडस्ट्री थी और लोग लगाते थे लेकिन फिर दिल्ली में चली गई लेकिन जब हरियाणा में बिजली की काफी सुविधा हुई, तो इंडस्ट्रीज हरियाणा में फरीदाबाद में लग गई। अब हरियाणा में फरीदाबाद में बिजली की कठिनाई है, इसीलिए वे चाहते हैं कि वापिस दिल्ली चले जाएं।

फिर सवाल वही आ जाता है कि जब तक पैसा नहीं है, पावन अवेलेबर नहीं हो सकती। हम मानते है कि सरकार के पास भी उतना पैसा नहीं हो सकता जितना चाहिए और इतने सोर्सिज नहीं हैं कि वह सारी जरूरत को खुद पूरा कर सके। मैं यह कहना चाहूंगा कि राणा प्रताप सागर का जो औटोमैटिक पावर स्टेशन है, हमें उससे ज्यादा बिजली मिलनी चाहिए। इसके अलावा बदरपरु पावर स्टेशन है दूसरे हाइड्रो–इलैक्ट्रिक प्रोजैक्टस हैं, रावी–व्यास

प्रोजैक्ट हैं, इन सब में हमारा हिस्सा काफी से ज्यादा होना चाहिए। रावी–ब्यास प्रोजैक्स के बारे में पोजीशन यह है कि अभी तक हमें यह भी पता नहीं चला कि हमारा पानी का कितना हिस्सा होगा। इसलिए मेरी अर्ज यह है कि हमें इस बारे में पता लगना चाहिए कि उसमें हमारा कितना–कितना पानी और बिजली का हिस्सा होगा। हमें किसी भी हालत में कम हिस्सा नहीं मिलना चाहिए, हमें हमारा पूरा हिस्सा मिलना चाहिए। अगर हमारा पानी और बिजली का हिस्सा कम कर दिया गया तो हम तरक्की किस तरह कर सकेंगे। जब तक हमारे पास बिजली के पूरे साधन नहीं होंगे, पानी के पूरे साधन नहीं होंगे, हम कुछ नहीं कर सकते। जैसा कि मैंने पहले भी बताया है कि हमें 41 लरख यूनिट्स पर–डे बिजली सप्लाई की जा रही है जबकि हमारी डिमांड 75 लाख यूनिट्स पर–डे की है। अगर थोड़ा सा इसी तरह का ट्रैन्ड चलता रहा तो यह डिमांड जल्दी ही एक करोड़ यूनिट्स हो जाएगी। मैं इस हाउस की तरफ से अपनी सरकार से फिर दोबारा पुरजोर अपील करूंगा कि वह गवर्नमैंट आफ इंडिया को रिकमैंड करे और उनसे यह दरखास्त करे कि पूरे फन्ड्ज एलोकेट किए जाएं, ताकि हमारा जो डिवैल्पमैंट का काम है, वह न रूके और हम उसमें पीछे न रहें। इमारे इलैक्ट्रिसिटी बोर्ड ने जो शानदार काम किया है, उसको यह कहलवाने का मौका न मिले कि आप इस बारे में आगे कुछ नहीं कर सकें, क्योंकि आपके पास बिजली नहीं है। मैं एक बात अपने इलैक्ट्रिसिटी बोर्ड से और कहना चाहता हूं। मैं यह बात पहले भी कह चुका हूं और अब फिर

दोहराता हूं और जब तक यह चीज नहीं हो जाती तब तक दोहराता रहूंगा, क्योंकि हाउस एक ऐसी जगह है जहां हम अपनी डिमांड को बिना झिझक के दोहरा सकते हैं। जब हम गावों में जाते हैं, तो क्या देखते हैं। खास तौर पर जो पिछड़े हुए तबके हैं, हरिजन बैकवड क्लासिज के लोग हैं, या जिनके पास एक–आध एकड़ जमीन है, जब हम उनके घरों में जाते हैं तो किसी के घर में बिजली नहीं मिलती। जब हम उनसे यह पूछते है कि आप बिजली क्यों नहीं लगाते, तो वे कहते हैं कि जो पहले खर्चा होता है सौ–दो सौ रूपए का, हम वह बर्दाश्त नहीं कर सकते। मैं उनसे यह अर्ज करूंगा कि जिनके पास कोई साधन नहीं है, उन्हें जिस प्रकार ऐग्रीकल्चर के लिए तकावी लोन देते हैं, उसी तरह से इसके लिए बिजली बोर्ड लोन दे। जिनकी घर में कोई मुलाजिम हैं, वे तो लगा सकते हैं, लेकिन दूसरे पिछड़े हुए तबके के लोगों की, इसके लिए मदद करनी चाहिए। चाहे बोर्ड कर्जा लेकर थोड़ी से थोड़ी रकम उन्हें कुनैक्शन लगवाने के लिए दे, चाहे एक महीने में एक लाख रूपया तकावी की तरह दे और किश्तों में वसूल कर लें लेकिन उसे इस बारे में जरूर कदम उठाना चाहिए। अगर इतना भी कर दें और दो, चार या पांच साल में एक दफा उनके कुनैक्शन लोन देकर लगवा दें, और उसे किश्तों में वसूल कर ले, तो यह बड़ी अच्छी बात होगी, और वे भी आजकल की जिन्दगी का कुछ फायदा उठा सकेंगे। यह बात मैंने थोड़ी सी सफीयर से बाहर जाकर कही है .....

Deputy Speaker: The honourable Member should speak on the resolution please.

श्री जगजीत सिंह टिक्का: अभी मौका है और बिजली बोर्ड के कर्मचारी यहां बैठे हैं .....

Deputy Speaker: But this is not in order.

श्री जगजीत सिंह टिक्का: उनको यह कहना मैं अपना फर्ज समझता हूं और मैंने यह आपकी इजाजत से कहा है .....

Deputy Speaker: Please speak on the resolution

श्री जगजीत सिंह टिक्का: मैं और कुछ इससे बाहर नहीं बोलूंगा। यह एक ऐसी चीज थी, जो मेरी मजबूरी थी और इस पर मैं बोल चुका हूं। मैं एक बार फिर अपनी सरकार से यह प्रार्थना करूंगा कि वह भारत सरकार से यह कहे की हमें ज्यादा फन्डज दिए जाएं ताकि हम अपनी इलैक्ट्रिसिटी की डिमांड को पूरा कर सकें। जब तक हमें पूरा पैसा नहीं मिलता, हमारे पास अपनी बिजली पैदा नहीं होगी। इसीलिए भारत सरकार को यह प्रार्थना की जाए कि वह हमें दूसरे प्रोजैक्टों में एक खुले दिन से बिजली दे, ताकि हरियाणा का नाम जो हिन्दुस्तान ही नहीं बल्कि दुदियां में भी चमक रहा है, वह इसी तरह बना रहे और आगे के लिए फलता–फूलता रहे। धन्यवाद।

Deputy Speaker: Motion moved –

This House recommends to the State Government to approach the Government of India to allocate adequate funds to the State of Haryana for increasing the power generation. In the life of present day world, power plays a great role in every sphere such as Agriculture, Industry, Health, Trade etc. etc. Therefore generation of power, to the extent that it can satisfy complete needs of all sectors is very necessary. Haryana State was progressing in Agriculture and Industry in an exemplary way but this year the shortage of powr has brought down the production in Agriculture and Industry to a great extent which also affected the employment of labour. Therefore adequate provision of funds for power generation is necessary and till Haryana State is able to produce power to the full satisfaction of its power need, the Government of India may allcate power from other States so that the tempo of progress is not affected in Haryana.

चौ. मेहर चन्द (बडौपल): डिप्टी स्पीकर साहिबा, ऐसा इम्पौर्टैंट रैज्योल्यूशन हाउस के सामने आया हो और हाजरी की कैफियत यह हो जो हम देख रहे हैं, तो मुझे इस पर बड़ा अफसोस है। हरियाणा के अन्दर जो इम्पौर्टैंट चीजें हैं, उनकी तरफ पूरा ध्यान क्यों नहीं दिया जाता। यह इतना इम्पौर्टैंट रैज्योल्यूशन है कि इस पर भी हाजरी बहुत कम हो, तो मुझे अफसोस के साथ दु:खी भी होता है। मै। यह कहे बगैर भी नहीं रह सकता कि इतना इम्पौर्टैंट रैज्योल्यूशन डिसकस हो रहा है और मिनिस्टर कन्सर्न्ड भी हाउस में मौजूद नहीं हैं। चलो, यह उनकी

अपनी मर्जी है। डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं तो यहां से शुरू करूंगा :–

''साजे हया शिकस्ता है आजकल

दिल टूटे हुए हैं आजकल।''

आखिर ऐसा क्यों है? यह इस वास्ते है कि पानी पूरा नहीं है, बिजली पूरी नहीं है। इस वास्ते हमारे दिल भी टूटे हुए हैं। इस वास्ते हमारा जिन्दगी का साज भी खस्ता हाल है। मैं यह कहूंगा कि यह दोनों नैशनल इम्पौर्टैन्स के इशु हैं। इसलिए हमारी हरियाणा सरकार को इसके लिए अपनी सारी ताकत लगानी चाहिए और सैन्ट्रल गवर्नमैंट से वह यह कहे कि ये जो दो नैशनल इशूज हैं, कम से कम इन दोनो इशुज के लिए तो उसे लिबरली मदद करनी चाहिए। हरियाणा के अन्दर ऐक्सपर्टस की कमी नहीं है। यहां पर अफसर बेहतरीन से बेहतरीन हैं। अगर कमी है तो सिर्फ एक बात की है वह है फन्डज की। जब हम दूसरी स्टेटस के लिए भी अनाज पैदा करते हैं तो गवर्नमैंट आफ इंडिया का यह फर्ज हो जाता है कि वह हरियाणा सरकार की फाइनैशियल मदद करे (इस समय सभापतियों की सूची में से एक सदस्य चौ. ईश्वर सिंह पदासीन हुए) जहां तक बिजली का ताल्लुक है, आजकल हालत यह है – जैसे कि मेरे एक कोलीग ने अभी फरमाया, हमारी इलैक्ट्रिसिटी की अवलेबिलिटी केवल 41 लाख यूनिट पर–डे की है। यह कम क्यों है? मैं इस चीज पर रोशनी डालना चाहता हूं।

हरियाणा सरकार को इसके लिए ब्लेम नहीं किया जा सकता। इस चीज पर हरियाणा सरकार का कन्ट्रोल नहीं है 25 लाख यूनिट बिजली तो हमें भाखड़ा से कम मिलती है। वह क्यों मिलती है? भाखड़ा कम्पलैक्स का जो वाटर लैवल है, वह 110 फीट फाल कर गया है, इसलिए कम मिलती है। ऐसी वजूहात हैं, जिनकी वजह से हरियाणा सरकार को ब्लेम करने के लिए मैं तैयार नहीं हूं। मैं यह जरूर कहूंगा कि इस कमी को पूरा करने के लिए हरियाणा सरकार सैन्ट्रल गवर्नमैंट को एप्रोच करे कि वह हमें फाइनैशियल असिस्टैन्स दे ताकि हम अपने पावर हाउस बना सकें। इसके साथ ही एक बात मैं यह भी करूंगा कि बिजली का औपर पानी का आपस में बहुत गहरा ताल्लुक है। मैं यह कहे बगैर भी नहीं रह सकता कि रिवर्ज जो हैं, वे किसी एक स्टेट की मोनोपली नहीं हैं। रिवर्ज जो हैं, वे पूरे देश की नैशनल वैल्थ हैं, वे किसी एक स्टेट की मोनोपली नहीं हैं। रिवर्ज जो हैं, वे पूरे देश की नैशनल वैल्थ हैं। क्या वजह है कि हमें आजतक भी रावी–ब्यास का हिस्सा नहीं मिला? पंजाब जिसको हम भाई कहते हैं, मेरे ख्याल में हम रोज भाई कहते हैं और यही नहीं हम उसको बड़ा भाई भी कह चुके लेकिन आजतक भी हमारा पानी का हिस्सा जो हमें रावी–ब्यास से मिलता था, वह नहीं मिला। क्या वह यह समझते हैं, कि रावी–ब्यास या सतलुज केवल उन्हीं के दरिया हैं और बाकी मुल्क का उन पर कोई हक नहीं है?

मैं हरियाणा सरकार से विनती करूंगा कि उसे दरियाओं के पानी के बारे में जल्दी फैसला करवाना चाहिए। इससे हमें एक सुविधा मिलेगी और वह सुविधा यह होगी कि ऐग्रीकल्चर पर बिजली का प्रैशर कम होगा और इस प्रकार जितनी बिजली हम बचा सकेंगे उसे हम इंडस्ट्रीज की तरफ डाईवर्ट कर देंगे और इस तरह से हमारी स्टेट फ्लोरिश करेगी। हमारी बिजली की मौजूदा रिक्वायरमैंट 75 लाख यूनिट है। इस समय 35 लाख यूनिट ऐग्रीकल्चर को चाहिए 30 लाख यूनिट इंडस्ट्रीज को चाहिए और 10 लाख यूनिट डोमैस्टिक और कमर्शियल कन्जम्पशन के लिए चाहिए। इस प्रकार 75 लाख यूनिट बिजली की आज हमें आवश्यकता है और इस 75 लाख यूनिट को पूरा करने के लिए हमें साधन जुटाने पड़ेंगे, क्योंकि हम फार आल टाइम्ज भाखड़ा की बिजली पर डिपैन्ड नहीं कर सकते। भाखड़ा की बिजली से हमें यह पता चल गया है कि कुदरत दूसरा मोड़ भी ले सकती है, इसलिए हमें थर्मल प्लांट्स की बहुत जरूरत है। इस वक्त बिजली बोर्ड के पास दो इम्पौर्टैंट स्कीमें इन हैड है। एक स्कीम जो फरीदाबाद की है उसके लिए मैं खासतौर से कहूंगा, मैं कह तो नहीं सकता लेकिन जहां तक मेरी नालिज है, फरीदाबाद में दो यूनिट्स बनने हैं, उनमें एक शायद इस महीने में कमिशन हो जाए। इसके कमिशन करने में काफी हरडल्ज आती हैं। कहने को तो लोग कह देते हैं कि बिजली बोर्ड ने एक भी थर्मल प्लांग नहीं लगाया। मैं जब बिजली बोर्ड का मैम्बर था, मैं देखता था कि कितनी जबरदस्त ऐफर्ट करनी पड़ती थी। कहीं मशीनरी का आर्डर

दिया जा रहा है, कहीं टैक्नीकल मैम्बर को दौड़ना पड़ता है, कहीं चेयरमैन भाग रहा है इस प्रकार काफी दौड़–धूप करनी पड़ती है। मैं कहूंगा कि बोर्ड की इस प्रकार की दिक्कतों को सरकार हल करे। दूसरा जो यूनिट है वह 60 मैगावाट का है यानी ददस लाख यूनिट पर–डे का है। हो सकता है कि उस यूनिट में कुछ काम शुरू हो चुका हो, लेकिन वह यूनिट तब पूरा होगा, जब कम से कम उसकी कम्पलीशन के लिए दस–बारह करोड़ रूपया हो। हरियाणा सरकार को सैन्ट्रल गवर्नमैंट को कहना चाहिए कि वह यह रूपया दे क्योंकि इन प्रोजैक्टस को चलाने के लिए हरियाणा सरकार रूपया कहां से दे। मैं बता देना चाहता हूं कि इलैक्ट्रिसिटी न सिर्फ हरियाणा की इकानमी को बल्कि सारे देश की इकानामी को डिवैल्प करने में एक अहम रोल अदा करती है। मैं बिजली बोर्ड को दाद देता हूं कि जिसने हरियाणा के अन्दर इतना बड़ा काम किया है। मेरे साथी बेशक क्रिटिसाइज करें, लेकिन जो सच्चाई है, जो हकीकत है उसे कहने में मैं कोई गुरेज नहीं करूंगा। हरियाणा की इकानामी को डिवैल्प करने में बिजली बोर्ड ने एक अहम रोल प्ले किया है। आंकड़े यह बताते है ं कि 1968 से लेकर 1974 तब बिजली बोर्ड से इरीगेटिड एरिया में जो इजाफा हुआ है वह 12 लाख एकड़ है। इस 12 लाख एकड़ की बढ़ौत्तरी में बिजली बोर्ड की पावर और टयूबवैल्ज दोनों शामिल हैं। इरीगेशन के भी बहुत बड़े प्रोजैक्टस हैं। इरीगेशन वालों को एक चैनल बनानी थी, लेकिन हम उनको कैसे कह दें कि वह चैनल बना दें, क्योंकि उनके रास्ते में भी काफी हरडल्ज हैं। इसके

लिए पानी का निर्णय होना चाहिए कि इतने क्यूसिकस पानी आएगा और उसी हिसाब से वह चैनल बनाई जाएगी। इसका फैसला करना सरकार की डयूटी है। मै। कह रहा था कि 12 लाख एकड़ का इजाफा हुआ है और इरीगेशन की नहरों से 6 लाख 52 हजार एकड़ का इजाफा हुआ है। इससे अन्दाला लगाया जा सकता है कि कितनी तरक्की हुई है। इसके अलावा हम बिजली की सप्लाई को कैसे पूरा कर सकते हैं। जैसा कि मैने पहले बताया कि इस साल की हमारी बिजली की सप्लाई को कैसे पूरा कर सकते हैं। जैसा कि मैंने पहले बताया कि इस साल की हमारी बिजली की रिक्वायरमैंट 75 लाख यूनिट है और अगले साल यह रिक्वारयमैं 100 लाख यूनिट टच एक जाएगी और उससे अगले साभ 120 लाख यूनिट टच करेगी और हमारी प्रोडक्शन इन प्लांटों के लगने के बाद 70–75 लाख यूनिट से ज्यादा नहीं हो सकती यानी फरीदाबाद का पहले फेज कमिशन होने के बाद इतनी बिजली की प्रोडक्शन होगी। इस वास्त कुछ न कुछ बढौत्तरी होगी, लेकिन असली बढौत्तरी तब होगी, जबकि हमारा पानीपत का वह यूनिट कमिशन हो जाएगा, जिसकी प्रोडक्शन 35 लाख यूनिट बिजली होगी। अगर हम आपको कामयाब कर देंगे तो हम इस स्टेज पर पहुंच सकते हैं कि हम अपनी इंडस्ट्रीज को रन कर सकते हैं, ऐग्रीकल्चर को बिजली दे सकते हैं लेकिन उसके साथ कंडीशन यह है कि हरियाणा सरकार गवर्नमैंट आफ इंडिया से अपना शेयर ले। जब हरियाणा सरकार किसी काम में ढील नहीं करती तो इस शेयर लेने के काम में क्यों ढील करें। सरकार

केन्द्रीय सरकार को कहे वह हमारा शेयर क्यों नहीं देती। हरियाणा अनाज सिर्फ अपने लिए ही अनाज पैदा नहीं करता, यह दूसरों के लिए भी अनाज पैदा करता है। मैं कहता हूं कि यह 35 लाख यूनिट का प्लांट है और इसके लिए बहुत रूपए की जरूरत है। मेरा अपना मनगढ़न्त ऐस्टीमेट जो है वह है कि 35 लाख के यूनिट के लिए 68 करोड़ रूपए की जरूरत पडेगी। एक्सपर्ट तो इसको लम्बा ले जाऐगे। मैं अपनी सरकार से कहूंगा कि वह भारत सरकार से कहे कि आठ करोड़ रूपए इस साल में दे और 30 करोड़ उससे नेक्सट ईयर और 30 करोड़ उससे नैक्सट ईयर। अगर पानीपत का प्लांट पूरा करना है तो इस तरह से यह पूरा करना पड़ेगा। यह हरियणा सरकार का एक लाजवाब काम होगा, बिजली की कमी को पूरा करने का। जिस दिन बिजली और पानी की कमियां पूरी हो जाएंगी मैं समझता हूं कि मेरे जैसे आदमी का असैम्बली में आने का मकसद पूरा हो जाएगा। इसके अलावा चेयरमैंन साहब, एक और प्रोजैक्ट है जो कि हरियाणा को पूरा करना है और वह प्रोजैक्ट है वैस्टर्न जमुना कैनाल। उससे हमारी जो प्रोडक्शन होगी वह सात लाख यूनिट पर–डे के करीब होगी और मेरे ख्याल में उसके लिए भी प्रस्तावा करना चाहिए कि इसके लिए हमारी सहायता करें। हमें

11.00 बजे

फन्डज चाहिए। पानीपत के लिए हमें 68 करोड़ रूपया दे दें, जिसकी ब्रेकअप इस प्रकार से हो सकती है 8 करोड़ पहले इसी

साल, 30 करोड़ अगले साल और फिर 30 करोड़ उससे अगले साल। फरीदाबाद की तो कोई समस्या ही नहीं है। उसका काम तो 10 करोड़ रूपए से चल जाएगा और वैसे उस पर पहले भी खर्चा हो चुका है। वैस्टर्न यमुना कैनाल जो 45 मैगावट का जनरेटर लग रहा है उससे हमको 7 लाख यूनिट बिजली रोजाना मिलने वाली है, उसके लिए हमें केवल 13 करोड़ रूपए की आवश्यकता है। इसके लिए हमें सैन्ट्रल गवर्नमैंट से कहना चाहिए क्योंकि हमारे पास कोई साधन नहीं है और यह साल भी जल्दी से जा रहा है। पानीपत के लिए भी साधन हैं, स्टाफ है, काम चल रहा है। अगर सैन्ट्रल गवर्नमैंट ने हमारी इन कामों में पूरी मदद की तो मैं दावे के साथ कह सकता हूं मैं समझूगा कि एक तो मेरा यहां असैम्बली में आना सफल हो गया, दूसरा हमारे हरियाणा में बिजली की क्राइसिज भी खतम हो जाएगी। एक हाइडल प्रोजैक्ट है, इसके लिए तो सब ठीक है कि फन्डज का प्रोवीजान कर रहे हैं, इसके लिए हम सैन्ट्रल गवर्नमैंट से यह कहें कि खुदा के लिए जितने हाइडल प्रोजैक्टस हैं, उनकी ऐलोकेशन हरेक स्टेट को कर दो, कि कितने–कितने यूनिट स्टेट्स को मिलेंगे। किसी डिस्ट्रिक्स को कितनी बिजली देनी है, वह तो रिक्वायरमैंट की बात है, इसके लिए मैं नहीं कहूंगा। आखिर हरियाणा एक यूनिट है और मैं उसको एक ही यूनिट समझकर चलता हूं। इसके इलावा मैं आपको फन्डज की ओवर आल रिक्ववायरमैंट के बारे में बता रहा था, लेकिन प्रोजैक्ट बहुत ज्यादा हैं, एक प्रोजैक्टर हमारे हाथ में है। एडीशनल जररेशन ऐट भाखड़ा भी होगा, जब ब्यास और सतलुज

का पानी भाखड़ा में आ जाएगा उस वक्त हमारे हरियाणा प्राप्त को 10 लाख यूनिट बिजली और मिलेगी दूसरा मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि पौंग डैम पूरा हो चुका है ओर वह पानी देने के लिए पूरा हुआ है, बिजली देने के लिए नहीं हुआ है। लेकिन इसके लिए ब्यास बोर्ड एक लिंक बना रहा है, जोकि करनाल के पास है। आप दिल्ली जाएं, तो रास्ते में करनाल के पास एक बोर्ड लगा हुआ है, जिसके ऊपर 400 किलोवाट सब स्टेशन लिखा हुआ है। वह स्टैप जो लिए जा रहे हैं इसके लिए भी मैं यह कहना चाहता हूं कि बिजली देने में ढील नहीं की जानी चाहिए, क्योंकि इसके बारे में हमें एक बड़ा भारी वहम सा हो गया है। देरी जितनी हो, वहम पैदा करती है। मैं यहां आन दा फ्लोर आफ दी हाउस यह कहना चाहता हूं कि मैं उनमें से नहीं हूं जो गलत ब्यानी करते हैं, मैं तो स्पश्ट कहने वाला आदमी हूं। मैं तो कम से कम अपने बारे में कह सकता हूं कि चाहे मैं अगली बार यहां चुनकर आऊंगा या न आऊं, मैं गलत ब्यानी नहीं करूंगा, हमने पब्लिक के साथ बहुत सारे वायदे कर रखे हैं, हमें उन वायदो को पूरा करना होगा। हमने पब्लिक के साथ बहुत सारे वायदे कर रखे हैं, हमें उन वायदों को पूरा करना होगा। हमने पब्लिक को कह रखा है कि एक–एक खूंट में पानी आएगा, हमें यह इम्पलीमैंट करना पड़ेगा। इस सारे काम को करने के लिए हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी तैयार हैं, हमारे आई.पी.एम. साहब तैयार हैं, मैं उनका नाम लिए बगैर नहीं रह सकता, लेकिन उनके रास्ते में एक बड़ी भारी रूकावट है, अड़चनें हैं, वह है हमारी पड़ौसी स्टेट। जिसको हम

अपना बड़ा भाई समझते हैं वह यह चाहती है कि हरियाणा तरक्की न कर पाए, उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए, बल्कि उनको तो हमारी तरक्की पर गर्व करना चाहिए, लेकिन वह कितनी बाधाएं डालने की कोशिश कर रहे हैं। स्पीकर साहब, अब मैं आपके द्वारा सरकार से यह रिक्वैस्ट करूंगा कि इस मैटर को सैन्ट्रल सरकार से टेक–अप किया जाए, और साथ ही मैं फिर अपने इस रैजोल्यूशन की ताईद करता हूं। चेयरमैंन साहब, मैं अब यह भी कहे बगैर नहीं रह सकता कि दो कपलिट्स मेरे अपने बनाए हुए हैं, किसी ओर के नहीं हैं, इनके द्वारा, हमारी भावना सरकार सैन्ट्रल गवर्नमैंट से कह दे – ''बुझा चिराग जला दे कोई, दर्दे दिल मिटा दे कोई'' – इसके साथ–साथ दूसरी चीज और पेश करना लगा हूं सरकार से प्रार्थना है कि वह सैन्ट्रल गवर्नमैंट तक हमारी यह बात पहुंचा दे, क्योंकि मैं तो मौत के नजदीक हूं –

''बाद अजगर्म इन्क्लाब आया तो क्या आया,

लहद पर कोई बेनकाब आया तो क्या आया।''

श्री के.एन. गुलाटी (फरीदाबाद): चेयरमैन साहब, एक बहुत सुन्दर और अच्छा प्रस्ताव हमारे सामने आज इस सदन में प्रस्तुत हुआ है, जिस पर बहस हो रही है। मैं उस की ताइद मजीद करता हुआ पांच छः मिनट सदन के लूंगा। मैं अपनी हमदर्द सरकार से यह कहूंगा कि बिजली की कमी के कारण हमारे प्रान्त में प्रोडक्शन कम हो जाएगा, इसकी सप्लाई के लिए सैन्ट्रल

सरकार पर जोर देना चाहिए। (इस समय श्री अध्यक्ष पदासीन हुए।) इसके कारण मजदूर अपने वेजिज लूज करते हैं, किसान कनक कम पैदा कर सकते हैं, प्रोडक्शन रूक सकती है और इसी प्रकार से सैन्ट्रल सरकार भी करोड़ों रूपया एक्साइज का लूज करती है, तो इन बातों को ध्यान में रखते हुए स्पीकर साहब, मैं आपकी मार्फत सैन्ट्रल सरकार से अर्ज करूंगा कि वह हमें फौरन मदद दे। चाहे कैश के रूप में दे या बिजली की पावर के रूप में दे। जो प्लांट्स हम लगा रहे हैं, उसके लिए हमें मदद दे या फिर सैन्ट्रल सरकार खुद जनरेशन प्लांट्स लगाकर हमारी मदद करे ताकि जो हरियाणा कई मामलों में तरक्की कर चुका है, इस भारत के अन्दर ही नहीं, बल्कि सारी दुनियां के अन्दर एक छोटी सी स्टेट मशहूर है, कहीं ऐसा न हो कि पावर की क्राइसिज की वजह से पीछे रहा जाये। स्पीकर साहब, हरियाणा सरकार ने जो हरियाणा का नाम ऊंचा किया है, उसको देखते हुए मुझे उम्मीद है कि हरियाणा सरकार सैन्ट्रल सरकार से इस बारे में पूरी तरह जोर से कहेगी कि हमें बिजली की ज्यादा सप्लाई की जाए, ताकि हरियाणा आगे ही आगे तरक्की के पथ पर अग्रसर रहे। इसके इलावा मैं सरकार से यह कहूंगा कि हमारे प्रदेश में फल्डज वगैरहा भी बहुत आते हैं, उनको रोकने के लिए भी सब काम छोड़ कर नाले बनाने का प्रबन्ध तेजी से करना चाहिए ताकि हम फल्डज से बच सकें और वह पानी भी हमारे काम आ सके टोर उस पानी के जरिए से हम बिजली पैदा कर सकें, फलड से नुक्सान भी बच जाए और पावन भी हासिल कर सकें। स्पीकर साहब, मैं यह भी

कहना चाहता हूं कि थर्मल प्लांट बने हैं जैसे बदरपुर में बना है, और भटिंडा में बना है इनके बारे में मैं यह महसूस करता हूं कि इनके बनने के बाद भी कभी वे चलते हैं ओर कभी नहीं चलते। अब फरीदाबाद में भी एक प्लांट लग रहा है, सरकार का वादा था कि वह अप्रैल तक चालू हो जाएगा, लेकिन अभी तक चला नहीं है। इसलिए मैं सरकार से चाहता हूं कि वह देखे कि उसमें कहां पर कमी है। स्पीकर साहब, मैं जल्दी समाप्त करना चाहता हूं इसलिए एक दो बातें ही और कहूंगा। मैं अपने चीफ मिनिस्टर साहब से अर्ज करूंगा कि इन पावर क्राइसिज के दिनौं में उनको सिनेमा के नाइट शो बन्द करवाने चाहिएं ताकि हम पावार बचा सकें। एक बात और कहना चाहता हूं कि हमारे फरीदाबाद में मच्छर इतने हैं कि हमें सर्दियों में भी रात को पंखे चलाने पड़ते हैं, इसलिए सरकार को इन मच्छरों को खतम करने के लिए भी कोई उपाय करना चाहिए ताकि पावर बच सके। चीफ मिनिस्टर साहब से मैं एक अर्ज और करना चाहता हूं कि उन्होंने पहले भी हमारे ऊर मेहरबानी की थी, अब भी करें कि फरीदाबाद में इस साल के लिए टैक्स माफ कर दें, 1973–74 का बेशक ले लें। इन शब्दों के साथ मैं इस रैजोल्यूशन की ताइद करता हूं।

अध्यक्ष द्वारा निरूपण

न्यूजीलैंड से हाउस आफ रिप्रेजैटैटिव्ज के स्पीकर की अध्यक्षता में आए शिश्ट मण्डल के सम्बन्ध में।

Mr. Speaker: I have to make some observation.

Honourable Members, I have great pleasure in information the House that the Parliamentary delegation from New Zealand headed by His Excellency Mr. S.A. Whitehead, Speaker of the House of Representatives is watching the proceedings of our House today (thimping).

His Excellency Mr. S.A. Whitehead ranks third in his country in the order of precedence following the Governor-General and the Prime Minister (thumping). He has been member of Parliament since 1957.

I welcome the distinguished Parliamentarians to this House and our State and convey our greetings to the people, Parliament and Government of New Zealand through their representatives. I may also add taht besides the Honourable Speaker, the delegation consists of three members each from the Government and Opposition sides who ar experts in the fields of banking, education, medicine and surgecy, press reporting, accountancy, dairy and sheep farming etc.

I hope the distinguished guests enjoyed their short stay here and will carry the happy memories of their visit to the capital of Haryana, one of the most beautiful and modern cities of India.

As the honourable Members of this House are having their tea with the visiting delegation, the House will adjourn for half an hour at 11.30 and will again meet at 12 noon.

Sh. Gulab Singh Jain will now speak.

गैर–सरकारी संकल्प

भारत सरकार से बिजली उत्पादन बढ़ाने के लिए हरियाणा राज्य को पर्याप्त निधियां एलोकेट करने तथा आवश्यकतानुसार पूरी बिजली उत्पादन होने तक अन्य राज्यों से बिजली एलोकेट करने के लिए निवेदन करने के सम्बन्ध में (पुनरारम्भ)

Sh. Gulab Singh Jain (Hisar): Mr. Speaker, Sir, this is a very important resolution before the House and, at the outset, I must congratuate my friends, Mr. Jagjit Singh Tikka and Ch. Mehar Chand, for having brought this resolution before this House.

Mr. Speaker, as you know, Haryana, when it came into being, had a very dismal picture of economy. The agriculture was very backward. We were economically very backward. Before 1947 when we were ruled by the British this area was badly ignored and, perhaps, we were being punished for our patriotism and for the part which Haryana played in the first was on Independence in 1857. Mr. Speaker, Sir, it may not be surprising to tell this House that before 1947 there was not even drinking water available in most part of the

State. The topography of the State is very peculiar. On one side ther eis water logged area while on the other we are having sandy dunes and ther eis depression in Gurgaon. And when Haryana came into being in 1966, it was a colossal problem before the State and it was a challenge to the Government to develop the State. I must congratulate my present colleagues in the Government that they made such a big effort to bring the State up and I am proud to state before this House that today Haryana ranks as one of the first States in the country so far as per capita income goes, so far as it present economy is concerned. Sir, the resolution before the House today is about urging the Central Government for providing more funds for development of electricity in the State and the other part of it is that till the day enough electricity is produced in our own State from our own resources, the Central Government should be able to allocate more power from other States and sources to this State so that the tempo of progress generated by the dynamism and vision of our present Chief Minister is not affected. Mr. Speaker, Sir, why we urge the Central Government to have special allocation of funds for the State? Before I stood up, my friend, Ch. Mehar Chand, had very ably placed the point of view of the people of the State before this House. It is because Haryana at the moment is providing the very vital need of the country. We were deficit in foodgrains, our own State was deficit in foodgrains, when if came into being in 1966. But the picture has changed. Why? It is because the people of the State worked had and our agriculturists and laborioius, hard working and our politicians, our friends in the Government, our Chief Minister, who has a dynamic personality, they have made efforts to raise the State and to see how we cna advance

in agriculture, which is the main stay of our country, especially Haryana. As you know, Sir, 80 per cent of our population lives in the villages and depends upon agriculture. When Haryana came into being, its per capita income was 343 while it is 420 today, higher than the national per capita income. The national per capita income is 338. Mr. Speaker, Sir, so far as agriculture is concerned we were importing foodgrains and depending upon the centre when Haryana came into being. But today the picture is otherwise. We have been able to give in the central pool in 1973-74, 5.86 million tonnes of wheat and 3.59 million tonnes of rice and we have also been able to export 25 thousand tonnes of quality rice to foreign countries to earn the much needed foreign exchange. All this, we could achieve within our limited resources of water and power. Mr. Speaker, Sir, we need water because we have very scanty rains. Haryana is not Chirapoonji. In some parts of the State, in winter, the rain fall is 2 cm. and in monsoon it is 100 cms at the most. So, we have to depend upon Irrigation and other means, that is canal water and tubewell water. Even canal water is not sufficiently available, as you know, we do not have a river. We do not have perennial river. We have small rivers like Ghaggar and Markanda and, as my honourable friend, Ch. Mehar Chand, who spoke before me, was saying, we are not even getting due share of water from our adjoining State in the canal water. So, we have to explore our under ground water resources and for that we need electric power. We have been making efforts to urge the Central Government to see to help this State more which has the urge and capacity to rise, to advance and to bring the standard of living of the people up.

The Central Government should see that we have been neglected in the past, we were ignored by the Britishers, we were ignored when we were a part of Punjab and today it is the duty of Central Government to make up the loss which we have suffered so far. Mr. Speaker, Sir, three Five-Year Plans were planned. That was the vision of our late Prime Minister, Pandit Jawahar Lal Nehru. He wanted to bring India to the level of highly industrialised and developed countries of the world. During the last three Five-Year Plans allocations were made for Punjab, of which we were a part for sometime, but most of the funds were spent on the area which is known as Punjab and Haryana was badly ignored. It was for this reason that when electricity in Bhakra complex started generating we were not given sufficient electricity saying we would not consume it and today when we can consume it, we are not getting sufficient electricity. Even our transmission lines were not sufficiently strong enough to carry electricity to our part of the country.

Now, Sir, I wish to place some figures about electric connections before the House. In 1968, one year after Haryana came into being, - I do not have figures for the year 1967 before me-the total electric connections were 349575 out of which tubewell connections were only 27000. What is the position today? It is something remarkable. I would say rremarkably creditable for the State Government, very credtiable for our worthy Chief Minister because today total number of electric connections is 668649 out of which tubewell connections are 117862. It is a matter of pride that our agriculturists produce foodgrains not only to feed themselves but also to feed the country so that we may not

have to import. Mr. Speaker, Sir, as you are well aware that colossal amount is spent on import of foodgrains and countries of the world look at us with rather contempt and say that India is a agricultural country and should still import and beg for food from other countries. It was a matter of shame. This was a challenge which was rightly accepted by our Chief Minister and peasantary of Haryana strived very hard to meet this challenge and they did whatever they could possibly do. It is now for the Central Government to come to the help of Haryana Peasantary to provide sufficient funds so that we have more electricity to feed our tubewells. As I said earlier the topography of our State is very typical and we have in hand a number of schemes for lift irrigation. So it is not that we need electricity for our tubewells alone, but alos for lift irrigation schemes, e.g., Jui Lift Irrigation Scheme, Loharu Lift Irrigation Scheme, Siwani Lift Irrigation Scheme and the biggest one, if I am correct the Jawahar Lal Nehru Lift Irrigation Scheme, which will, when completed, irrigate 289728 acres of chronically drought affected areas of the three districts, Bhiwani, Mohindergarh and Rohtak. All these Lift irrigation shcemes need electricity because we have put up a large number of puming stations. We cannot run those pumping stations with diesel which is very costly. So far in India we have mainly depended upon Hydro electric power. One fact is also very patent that our plannners while planning about electricity made a fatal mistake, in that, they depended very heavily on hydel power whereas in highly developed countries mainstay is not hydel power but it is thermal. In India hydel power is 75% and thermal power is 25% is developed countries, the position is reverse: 30% hydel power and 70% thermal power. But we do not have hydel resources

also. We have to depend upon Himachal Pradesh. They may give us, thyey mya co-operate with us or they may not. It is therefore very necessary that we have our own thermal plants and for that we need funds. That is why the Centre should come to our help because we are producing foodgrains not for ourselves, if we are producing only to feed our own population we would not have needed more water, we would not have needed more tubewells, we would not have needed more irrigation schemes. But today we want to produce to feed the whole of the country.

Mr. Speaker, Sir, as I had said at the outset that most of the part, part of Haryana land is very fertile. The people of Haryana are very laborious. So these two factors are ther eand the only third requirement is that of water and water can come by two means i.e. either by canals or tubewells and for tubewells we need electricity. Unless we have electricity we can't go ahead. Efforts should, therefore, be made to build thermal plants. My further submission, through you and this House tothe worthy Chief Minister is to urge upon the Central Government, to force them to give up the 6th Atomic Power Plant, that should be allotted to Haryana because we deserve it and we have the capacity to use the power. There are States in this Country where there is surplus electric power. That should be allotted to us. Transmission line should be laid speedily for it. So, Mr. Speaker, Sir, with all emphasis at my command Iurge, through this House, our Chief Minister to impress upon the Central Government the urgency of allotting as much funds as we need to complete our various power projects which we have in hand and till the time our power projects are completed they should give us powr

from alternative sources. With these words, I strongly support this resolution. Thank you, Sir.

Ch. Phool Chand (Rohat. S.C.): Sir, I must express my thanks to my M.L.A. brothers who have moved this resolution. It is very timely that we are taking up this matter. Electricity is dominating every sphere of our life. It is very interesting to recall that when we visited States like Maharashtra, Rajasthan, Gujarat and others we met our friends and told them we belong to Haryana State. They hailed us, they immediately expressed "Oh! friends, you are from surplus State, which is most developing State, one of the best States in our country."

Sir, it is 27 years ago when we took our affiars in our hands and we know our shortfalls, deficiencies, scarcities and other matters. Similarly this electricity, as I said earlier, is a very dominant factor, one of the essentials of life. We must augment, we must produce more 'power now particularly in the present times. When we get up in the morning and read in the newspapers that electricity cut is being imposed, it is a kind of bolt from the blue. It is a shock to us and to the industrialists, enterprisers and to ther producers.

Mr. Speaker: The House now adjourns for half an hour.

11.30 बजे

(The Sabha then adjourned for half and hour and reassembled at 12.00 Noon.)

12.00 बजे

Ch. Phool Chand (Rohat): Mr. Speaker, Sir, I now resume my submission. I was making the point that our total requirement of electric power is fifty lakh units.

कृशि मंत्री (चौ. भजन लाल): अब तो हिन्दुस्तानी में बोल लो।

चौ. फूल चन्द (रोहट): जनाब क्या हुक्म है?

Mr. Speaker: As you like.

चौ. फूल चन्द (रोहट): तो जनाब मैं आपकी खिदमत में अर्ज कर रहा था कि हमारी रिक्वायरमैंट तो है 50 लाख यूनिट्स की परन्तु हमें मिलती है केवल 20 लाख यूनिट्स (इस समय सभापतियों की सूची में से एक सदस्यत चौ. ईश्वर सिंह पदासीन हुए)। चेयरमैंन साहब, यह 20 लाख यूनिटस भी हमें पूरे नहीं मिलते। भाखड़ा मैनेजमैंट ने हाल ही में कहा है कि 20 लाख यूनिटस में कट लगाकर वे हमें 15 लाख यूनिटस बिजली देंगे। अब 50 लाख यूनिट्स की रिक्वारमैंट को पूरा करने के लिए 15 लाख यूनिटस बिजली अगर हमें मिले तो चेयरमैंट साहब आप अन्दाजा लगाएं कि कैसे टयूबवैल्ज चलेंगे, कैसे इंडस्ट्रीज चलेंगी, कैसे प्रोडक्शन बढ़ेगी और हमारा वह क्लेम कि सारी कन्टरी में हम सरप्लस स्टेट हैं और बड़े डिवैल्पड है, कहां ठहर सकेगा? इस बात के पेशेनजर आवश्यकता इस चीज की है कि हमें अपना तमाम ध्यान इस बात की ओर लगा देना चाहिए कि हम बिजली कैसे बढ़ाए। कई एक प्लांज बिजली के मुताल्लिक हमारे यहां बनाई गई

थीं लेकिन वे कामयाब नहीं हुई। अब बड़ी भारी मुसीबत है। हमारी पांच साला योजनाएं फेल हो गई, हमारी बिजली की योजना फेल हो गई और दूसरी योजनाएं भी फेल होने लग रही है। इसके लिए हम अपने आपको कर्स करते हैं कि हम हर टारगैट में फेल होते रहे हैं लेकिन इसके वरक्स हमारी जरूरियातें बढ़ने लग रही हैं। तो इस बात को ज्यादा से ज्यादा देखने की जरूरत है।

चेयरमैंन साहब, मैं आपकी खिदमत में अर्ज करूं कि जम्मू–कश्मीर और हिमाचल प्रदेश में पानी के बड़े सोर्स हैं। उन दरियाओं को हम टेम करें। इसमें सैन्टर ही हमारी इमदाद पर आ सकता है। जो साईटस फिट हैं, मौजू है, जहां हाईड्रोलिक पावर पोटैंशियल जैनरेट हो सकता है, वहां हम ज्यादा से ज्यादा पावर हाउसिज लगाएं। चेयरमैंन साहब, कुछ दिन हुए मैंने एक लेख पढ़ा था। बहुत बड़ी जानकारी रखने वाले एक साहब ने अन्दाजा लगाया था कि पानी में इतनी दौलत छुपी हुई है जितनी कि अरब मुमालिक के तेल में नहीं हैं। लेकिन हमारा सारा पानी वेस्ट जा रहा है। यदि अब भी रिक्वायरमैंट के मुताबिक पानी से बिजली पैदा नहीं हुई, तो फिर यह जो हम कहने लग रहे हैं कि हमारी प्रोडक्शन गिर गई है यह और गिरेगी जबकि दूसरी ओर आबादी बढ़ने लग रही है। आबदी बढ़ने के आंकड़े जानकर तो बड़ी हैरानी होती है। अभी यू.एन.ओ. में आबादी के मुताल्लिक एक पेपर पढ़ा गया। उन साहब ने अन्दाजा लगाया है कि हमारी आबादी इस कदर बढ़ रही है कि हमें दस लाख की आबादी वाले शहर की हर

महीने जरूरत है। मेरे ख्याल में दस लाख की आबादी वाला शहर लखनऊ होगा। इतने मकान, इतना कपड़ा, इतने हस्पताल और बच्चों के स्कूल हम किसी तरह भी बिल्ड नहीं कर सकेंगे, अगर स्केयरसिटीज की तरफ ध्यान नहीं दिया गया।

चेयरमैंन साहब, दूसरी स्टेटस से भी आज हमारा तालमेल कुछ कम है। उदाहरण के लिए आप पंजाब को ही ले लें। वे हमारा पूरा शेयर हमें नहीं दे रहे हैं। हमारा शेयर वहां 54 परसैन्ट का है। लेकिन हम हाथ पर हाथ रखे हुए बैठे हैं। हमें अपने हक के लिए लड़ना चाहिए। सैन्टर को मूव करना चाहिए कि हम सरप्लस स्टेट हैं, आपको अनाज देते हैं, हमें हमारा पूरा शेयर दिलाओ। ब्यास–सतलुज लिंक बनने लग रहा है। उसमें हमारा हिस्सा डिटरमिन नहीं हो रहा है। इसी तरह से चेयरमैंन साहब मैं आपके नोटिस में लाना चाहता हूं कि दरिया जमुना पर यू.पी. गवर्नमैंट दो पावर हाउस बनाने लग रही है, लेकिन उनमें भी हमारा शेयर नहीं है। हम इस बारे में भी सो रहे हैं। इसी तरह सन् 1970 में इंडो–पाक ट्रिटी के अनुसार रावी का पानी पाकिस्तान को जाना बन्द हो जाना चाहिए था, परन्तु वह अभी तक भी जा रहा है। – (विघ्न) – उसका भी हमें इन्तजाम करना चाहिए। वह इन्तजाम तब हो सकता है, जब नौर्दरन जोन का एक ग्रिड बने। सर्वे हुआ पड़ा है। तमाम बातें हमारे सामने है, लेकिन सैन्टर हमारी बात को मानने के लिए तैयार नहीं है। मैं चेयनमैंन साहब, आपकी खिदमत में अर्ज करूंगा कि हाईड्रोलिक पोटैशियल

एनरजाइज करने के लिए, वहां बिजली पैदा करने के लिए, जम्मू–काश्मीर, हिमाचल, रावी के पानी और जमुना पर लगने वाले पावर हाउसिंज में से अपना हिस्सा लेने के लिए हमें सैन्टर से पूरी लड़ाई लड़नी चाहिए। अपनी जरूरतों को उनके दिमाग में बैठाना चाहिए।

इसके बाद चेयरमैन साहब, मैं अर्ज करूंगा कि हम थर्मल प्लांट लगाने लग रहे हैं। हाईड्रोलिक पावर में एक बड़ा गैर–यकीनन फैक्टर यह है कि हमें पानी के लिए आसमान की तरफ देखना पड़ता है। प्लान बनाई जाती है कि बरसात होगी तो भाखड़ा में पानी आएगा, बिजली बनेगी, वह हमें मिलेगी और उससे ऐग्रीकल्चरल और इंडस्ट्रियल सैक्टर्ज में काम चलेगा लेकिन जब बिजली नहीं मिलती तो कहा जाता है कि कैचमैंट एरिया में बरसात नहीं हुई। परिणामस्वरूप बड़े–बड़े इलान धरे धराये रह जाते हैं। दूसरी ओर थर्मल प्लांट सर्टन है, मगर थोड़ा मंहगा भी है। लेकिन जो थर्मल प्लांटस भी सरकार लगाता चाहती है, वे भी कैसे लगेंगे? रिजर्व बैंक ने लोन पर कर्व लगा दिया है और उसके अनुसार सरकार को कर्जा नहीं मिलेगा। हमारे थर्मल प्लान्टस आधे–आधे लगे हुए हैं। यदि पैसा नहीं मिलेगा, तो उनका क्या होगा, और हमारी इकोनोमी की क्या हालत होगी, यह एक सोचने की बात है। इसके अलावा इसमें एक जहमत है। जो कोयला लाने के मुकाम है, वे हमारे यहां से आठ–आठ सौ मील दूर हैं। वहां से कोयला लाना भी बहुत महगा पड़ता है। दूसरा सामान भी बड़ा

महंगा है, तो इनको बनाने में भी बड़ी जहमत है। इसका दूर करने के लिए मैं आपके द्वारा चेयरमैंन साहब सरकार से अर्ज करूंगा कि यह जो क्रेडिट कर्व लागू हुआ है, इसे दूर करवाया जाए। चेयरमैंन साहब, यह जो मैंने अर्ज किया है, इसमें हम तमाम आदमी बहुत सीरियस है। सैन्टर इस बात में हमारी सबसे ज्यादा इमदाद कर सकता है। एक स्वप्न, चेयरमैन साहब, जो मैं बराबर अपने दिमांग में रखता वह यह है कि अगर हमें जरूरत के मुताबिक फन्डज मिल जाएं, तो जितनी तरक्की इस समय तक इस स्टेट ने की है उससे सौ गुणा ज्यादा तरक्की हम कर सकते हैं, पैदावार में भी और दस्तकारी में भी। इन शब्दों के साथ, चेयरमैंन साहब, मैं इस रैज्योल्यूशन की पुरजोर ताईद करता हूं और आपके द्वारा सरकार के एक बार फिर निवेदन करता हूं कि जितनी भी स्कीमज पैसे की वजह से हमारी अधूरी पड़ी हैं, उनके बारे में हमें सैन्टर को प्रैस करना चाहिए क्योंकि उनके पूरा होने से न सिर्फ हमें फायदा है, बल्कि सारी कौम का फायदा होगा। अब भी जो अनाज हम पैदा करते हैं, उसे स्वयं ही कन्ज्यूम नहीं करते, बल्कि दिल्ली, बंगाल, महाराष्ट्र और दूसरे सूबों को भेजते हैं। अगर सैन्टर ज्यादा पैसा हमें देगा तो एक बार मैं फिर कहता हूं कि उस से होने वाली प्रोडक ान से न सिर्फ हरियाणा का बल्कि सारी कौम का फयायदा होगा। इन अल्फाज के साथ मैं आपका भाुक्रिया अदा करता हूं।

भााह हकूमत राय (पानीपत): चेयरमैन साहब, आज यह प्रस्ताव बिजली के मुताल्लिक जो मेरे फाजिल साथियों ने सदन में

रखा है, उसकी मैं पुरज4ोर ताईद करता हूं। सबसे पहले मैं आपके द्वारा यह अर्ज करना चाहूंगा कि बिजली एक ऐसा जरिया है, जिसके बिना आज हमारा साधारण से साधारण कार्य नही चल सकता। चेयरमैन साहब, जैसा रैजोल्यू ान मूव करने वाले मेरे साथियों ने बताया, सन् 1968 में हरियाणा में केवल 29 हजार टयूबवैल्ज थे, जिनसे आबपा ाी होती थी और आज जबकि सरकार ने हर गांव में बिजली पहुंचा दी है, उनमें इस कदर इजाफा हुआ है कि सरकार उनकी जरूरतों को पूरा नहीं कर पा रही है।

सन् 1966 के प चात् हरियाणा अनाज के मामले में सरप्लस हो गया। बड़ी खु ाी की बात है कि हरियाणा ने अपनी जरूरत से ज्यादा अनाज पैदा किया और दे ा के दूसरे सूबों को पहुंचाया। लेकिन अब हमारे सामने बड़ा गम्भीर मसला है। जितनी बिजली की खपत हरियाणा में हो रही है और होनी चाहिए उतनी बिजली हमें नहीं मिल रही है। बिजली कम मिलने के कारण हमारी पैदावार का भी काफी नुकसान हो रहा है। इस बात को हमारा सदन भी महसूस करता है, यह बड़ी अच्छी बात है। यह सच्ची बात है कि जहां पर हमारे पास इतने बड़े–बड़े साधन हैं कि हम अपनी बिजली पैदा करे अपनी जरूयिात को पूरा कर सकेंख, इसके लिए भारत सरकार से निवेदन किया जाए कि वह हमें पैसा दे। जैसे हमारा फरीदाबाद का, पानीपत का थर्मल प्लान्ट है, उसके लिए हमें पैसा भारत सराकर की तरफ से मिलना चाहिए, ताकि उनको

हम कम्प्लीट कर सकें। इसमें कोई सन्देह नहीं कि पानीपत में जो थर्मल प्लांट लग रहा है, उस पर बड़े जोरों– ाोर से काम हो रहा है। जैसा कि अभी मेरे दोस्त ने बताया है कि 68 करोड़ की लागत से वह मुकम्मिल होगा और उन्होंने यह खद ाा जाहिर किया कि उसके लिए हमारे प्रान्त के पास इतना पैसा नहीं है। अगर इसमें सैन्ट्रल गवर्नमैंट सहायता करें तो वह पूरा हो सकता है, वरना नहीं। जैसा कि उन्होंने यह भी बताया कि योजना सन् 1979 तक मुकम्मिल होगी। वह भी उस सूरत में हो सकती है जबकि हमें पैसा मिले। फरीदाबाद वाले थर्मल प्लांट के लिए कहा जाता है कि वह भाायद थोड़े दिनों तक चालू हो जएगा, लेकिन उसके साथ जो उसका दूसरा हिस्सा बकाया है और पानीपत का बकाया पड़ा है, उसके लिए काफी सरमाया की आव यकता सरकार को पड़ेगी। हमारे प्रान्त ने थर्मल प्लांट लगाने का प्रबन्ध किया और अब यह खद ाा जाहिर किया गया है कि हमारे पास पैसा नहीं है, इसे मैं अच्छा नहीं समझता। जहां सरकान ने इतने प्रोजैक्ट्स आरम्भ किए हैं, उनको पूरा करने के लिए जरूर कोई न कोई साधन अपनाना होगा। सरकार को उन प्रोजैक्ट्स को मुकम्मल करने के लिए आ वासन देना चाहिए कि ये जल्दी ही मुकम्मल होंगे, इस बारे में बहुत संदेह तो नहीं रखता हूं मुझे तो आ ाा है कि सन् 1979 तक हमारी आबपा ाी कीख इंडस्ट्री की सारी जरूरियात पूरी हो सकेंगी। हां अगर इसके बीच के अर्से में यही बिजली की हालत रही, तो पैदावार में बहुत ज्यादा कमी हो

जाएगी। मैं यह भी जानता हूं कि इसके पीछे एक कारण है कि दो साल से बारि ा का न होना, बिजली की कमी का कारण है।

चेयरमैन साहब कुछ अर्सा पहले जब हरियाणा और पंजाब इकट्ठे थे, तब एक पावर हाउस पटेल पावर हाउस के नाम से चालू हुआ था। वह पावर हाउस हमारे इलाके की जरूरियात उस समय के मुताबिक पूरी करता रहा, लेकिन ज्यों ही हमें भाखड़ा से बिजली मिलने लगी, हम उस पर निर्भर हो गए, तो उस प्लांट को उखाड़ कर राजस्थान में भेज दिया। आज अगर वह प्लांट होता, तो हमारे इस एरिया के लोगों को बिजली देने में बड़ा सहायक होता। हमने सब यह इसलिए किया था कि हमं भाखड़ाडैम से बिजली मिलेगी, इसी भरोसे से उसको वहां से उखाड़ दिया गया था। उस टाईम पर इसकी जरूरत नहीं समझी गई। हमें तो पूरी उम्मीद थी कि जो भाखड़ा डैम पर बिजली पैदा होगी, वही हमारी जरूरत को पूरा कर देगी। बदकिस्मती की बात है कि भाखड़ा में दरिया का पानी नहीं आया। वह इसलिए नहीं आया क्योंकि बारि ा कम हुई। जब दरिया में पानी कम आया तो बिजली कम पैदा हुई। बिजली न मिलने से का तकारों और इंडस्ट्रियलिस्टस को बड़ी दिक्कत हुई। उन्होंने अपने हर मुमकिन जराए से, सरकार की इमदाद से या किसी से कर्जा लेकर अपने टयूबवैल लगाए, इंडस्ट्री भुरू की। जब घर–घर बिजली पहुंच गई तो हर किसान ने चाहे कोई छोटा था चाहे कोई बड़ा था, किसी के पास साधन थे या नहीं, सबने टयूबवैल्ज लगाए, लेकिन अब

उन बेचारों को बिजली नहीं मिलती। किसानों में यह भाव पैदा हुआ कि जितना अनाज मेरे पड़ोसी के पैदा होता है उतना ही हमारे यहां भी हो, एक कम्पीटी ान की भावना आई। इस प्रकार से बिजली की खपत बढ़ती गई और दे ा की पैदावार भी बढ़ती गई, मगर अचानक वह खपत बढ़ती–बढ़ती इस हद तक पहुंच गई कि भाखड़ा ने हमारी बिजली की जरूरियात को पूरा करना बन्द कर दिया। इसके पूरा न होने के मैंने दो कारण बताए हैं एक तो खपत का बढ़ जाना और दूसरे बारि ा का न होना। खपत का बढ़ जाना और दूसरा बारि ा का ने होना। खपत का बढ़ जाना तो बहुत अच्दी बात है। आपस में किसानों मे मुकाबला होने से भी प्रदे ा की पैदावार में बढ़ोतरी हुई है, लेकिन बारि ा न होने के कारण टयूबवैल्ज का पनी काफी नीचे चला गया है। पानी नीचे जाने से किसानों को काफी दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। इस बात को देखने के एिल सरकार ने एक कमेटी बनाई, जिसमें खासतौर से कुरूक्षेत्र, करनाल ओर अम्बाला को भाामिल किया गया। उस कमेटी में महकमे के अफसर थे,, इजीनियर थे। उन्होंने यह कमेटी इसलिए बनाई थी कि यह पानी बारि ा की कमी के कारण नीचे गया है या किसी और कारण से गया है। दूसरे यह देखना भी चाहते थे कि जमींदारों के टयूबवैल्ज कैसे चालू रह सकते हैं। कमेटी ने यह रिपोर्ट दी कि अगर जमींदार अपनी मोटर को 15–20 फुट नीचे ले जाएं तो टयूबवैल्ज पानी दे सकते हैं। अब समस्या यह थी कि जो किसान पहले ही सरकार से या किसी और से कर्जा लेकर टयूबवैल लगा रहे हैं, वे उसको और नीचे

तक ले जाएं तो बहुत ज्यादा खर्चा पड़ जाता है। अब उनके सामने मजबूरी थी। अगर 15–20 फुट मोटर को नीचे तक ले जाएं तो उनकी पानी की कमी पूरी हो सकती है, अब वे बेचारे मजबूरी में उनको नीचे ले गए। अब पानी की कमी तो पूरी हो गई, लेकिन बिजली पूरी नहीं मिली जिसके कारण से उसका खर्चा ही बढ़ा, उसको कोई लाभ नहीं हुआ। मैं यह मानता हूं कि सरकार ने इस बारे में पूरी तरह से सहायता की, सरकार अपने फर्ज से गाफिल नहीं है। सरकार के पास जितने भी साधन थे, वे किसानों और इंडस्ट्रियलिस्टस को दिए, मगर बिजली की बहुत कमी होने के कारण वे कामयाब नहीं हो सके। मैं समझता हूं इसमें किसी का बहुत दोश नहीं है। इस रैजोल्यू ान मं भारत सरकार से यह प्रार्थना की गई है कि वह हमें सहायता दें। मैं तो यह समझता हूं कि जब तक भारत सरकार सहायक नहीं होगी, तब तक हमारा यह पानीपत का थर्मल प्लांट पूरा नहीं होगा। जब तक बिजली खपत के मुताबिक नहीं मिलेगी, तब तक किसान की पैदावार नहीं बढ़ सकती। अगर बारि ा ज्यादा हो, तो भाखड़ा में ज्यादा पानी होगा, तो बिजली ज्यादा पैदा होगी। किसान की जयरत पूरी होगी और इंडस्ट्री को भी ज्यादा बिजली मिल सकेगी। अब यह तो कुदरत की बात है कि बारि ा हो या न हो, मगर हरियाणा सरकार अपने जराए से जो थर्मल प्लांट लगाकर बिजली की कमी पूरी करने जा रही है, वह पूरी होने में कुछ देर लगेगी।

जो थर्मल प्लांट पानीपत में लगने जा रहा है, उसमें बहुत हैवी म ाीनरी, 110–110 मैगावाट की लग रही है। उसकी कम्पली ान तो अपने टाईम के हिसाब से होगी, लेकिन उस दौरान जो अब हमारे सामने तकलीफ है, उसको हल करने का एक ही रास्ता नजर आता है जो इस प्रस्ताव में दिया है कि हमारी हरियाणा सरकार जब तक हमारे वे थर्मल प्लांट मुकम्मल नहीं होते किसी और जरिए से बिजली लेने के लिए सैन्ट्रल गवर्नमैंट से प्रार्थना करें। जिन सूबों में बिजली सरप्लस है, जो अनाज पैदा नहीं करते या जहां पर पानी की कम जरूरत है, वहां से बिजली लेकर हरियाणा को दी जाए, ताकि हरियाणा के जो पैदावार और इंडस्ट्री की और बढ़ते हुए कदम हैं, वे न रूकें। यह रैजोल्यू ान बहुत अच्छा है, अगर हमारी यह बात सैन्ट्रल सराकर तक पहुंच जाए और हमारे चीफ मिनिस्टर साहब जाति तौर पर जाकर उनसे यह रिक्वैस्ट करें, तो हमारी यह मांग जरूर स्वीकार होगी। मैं यह नहीं मान सकता कि हरियाणा सरकार की बात भारत की सरकार न माने, क्योंकि वह यह जानती है, कि हरियाणा वह एक छोटा सा प्रदे ा है, जिसको वजूद में आए बहुत थोड़ा सा अर्सा हुआ है, लेकिन उसने इस थोड़े से अर्से में जितनी तरक्की की है, काबिले तारीफ है और इस तरक्की से उनको इनकार नहीं हो सकता। इसलिए भारत सरकार यह बर्दा त नहीं करेगी, कि हरियाणा के वे कदम जो पैदावार के लिहाज से या इंडस्ट्री के लिहाज से आगे बढ़ते जा रहे हैं, वे बढ़ते–बढ़ते रूक जाएं। हमारी बात उन्हें जरूर स्वीकार होगी, और होनी भी चाहिए। हमने पिछले सालों में काफी

सरप्लस अनाज भारत सरकार के हवाले किया। आज भी हम इस हालत में हैं कि हमारे पास काफी सरप्लस अनाज हो सकता है, अगर इस समय जबकि बीजाई को मौसम है, गन्दम बोने के लिए किसान तैयार खड़ा है, हमें बिजली मिल जाए। मैं यह समझता हूं कि बीजाई का सीजन गुजरता जा रहा है, हम इस मामले में लेट होते जा रहे हैं। आज अगर हम बिजली द्वारा या नहरों द्वारा उन जिलों को फालतू पानी नहीं दे पाते हैं, जो गन्दम पैदा करते हैं, तो मैं समझता हूं कि इससे पैदावार बढ नहीं पाएगी, बल्कि उसमें थोड़ी बहुत कमी जयर हो सकती है। इसलिए मैं अपनी सरकार से यह गुजारि ा करूंगा, जैसे कि हम इस प्रस्ताव के जरिए भारत सरकार से गुजारि ा कर रहे है, कि वह अपने तौर पर कुछ दिनों के लिए किसी न किसी तरीके से प्रबन्ध करके, कुछ फालतू पानी उन जिलों को दे जिनमें गन्दम की बीजाई नहीं हुई है और जो पहले से ही गन्दम पैदा करते आ रहे हैं। मैं एक बार फिर हरियाणा सरकार से अर्ज करूंगा कि वह उन्हें मीजद पानी फौरी तौर पर दे, ताकि हमारे जो पहले से यह इम्मेज बना हुआ हे कि हम इस मामले में सरप्लस हैं, वह बना रहे और हम सरप्लस ही रहें। यह हमारे लिए ज्यादा बेहतरी की बात होगी। इसके साथ ही साथ मैं यह अर्ज करना चाहूंगा कि बिजली के इस संकट में हर आदमी दु:खी है चाहे वह किसान है, चाहे वह मजदूर है, या चाहे वह कराखाने दार है। इसका कारण यह है कि बिजली हमारी जिन्दगी का एक ऐसा जरूरी जुज बन गई है कि इसके बगैर गुजारा नहीं है। इस म ीनरी के युग में बिजली का कम होना,

पैदावार की कमी का एक बहुत बड़ा बायस है। इसलिए मैं अपनी सरकार से इस ओर ध्यान देने की गुजारि ा करूंगा। पिछले दिनों उन्होंने यह फैसला किया था कि 8 दिनों के लिए किसान को पूरे टाईम बिजी दी जाएगी और इंडस्ट्री की बिजली बन्द कर दी जाएगी। मैं उनकी वाकफियत के लिए बड़ी मोदबाना गुजारि ा करूंगा कि इस बात के बावजूद कि आपने यह हुक्म दे दिया कि ऐसा होगा, लेकिन ऐसा हुआ नहीं है। यह बड़े अफसोस की बात है। ऐसा होना चाहिए था। इस मसले में मेरी गुस्ताखी माफ हो, क्योंकि सरकार जब कोई ऐलान करे तो उसे पूरा भी करना चाहिए। (व्यवधान)

सिंचाई एवं विद्युत मंत्री (श्री बनारसी दास गुप्ता): क्या नहीं हुआ ?

भााह हमूमत राय: बिजली के बारे में यह कहा गया था कि बिजली सिर्फ जमींदारों के लिए 8 दिन के लिए रिजर्व कर दी गई है। फैक्ट्रीज को 8 दिन तक बिजली नहीं दी जाएगी। करनाल में सी.एम. साहब ने आपकी (इस समय उपाध्यक्षा पदासीन हुई) मौजूदगी में यह कहा था। आज भी हालत पहले जैसी ही है, कि आल्टरनेटिव डे पर, एक दिन छोड़कर दूसरे दिन, बिजली मिलती है और वह भी रात के 10 बजे से लेकर सुबह 10 बजे तक। फिर अगर यह उम्मीद की जाए कि पैदावार पूरी होगी, तो यह एक बड़ी मु ि कल सी बात है। अगर 22 से 29 तक ऐसा कर देते तो

बीजाई डेढ़–दो गुना ज्यादा हो सकती थी, क्योंकि गन्दम एक ऐसी चीज है, जो बगैर पानी के बोई नहीं जा सकती।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता: आन ए प्वांयट आफ इनफर्मे ान मैडम। मैं आपकी विसातत से आनरेबल मैंबर से मजीद थोड़ी सी इनफर्मे ान चाहता हूं। इनका कहने का मकसद यह हैं कि इंडस्ट्रीज को अब भी बिजली मिल रही है और एग्रीकल्चर के लिए नहीं मिल रही ?

भााह हकूमत राय: मैं यह अर्ज कर रहा हूं कि जमींदारों को बिजली आल्टरनेटिव डेज पर 12 घंटे मिलती है। एक दिन छोड़कर उन्हें बिजली मिलती है ओर वह भी रात के 10 बजे से लेकर दूसरे दिन सुबह 10 बजे तक मिलती है। हमारे पास लेट बीजाई होने लायक वैरायटीज के बीज हैं। इसलिए आज भी अगर किसान को 8 दिन के लिए पूरी बिजली दे दी जाए, तो हम कुछ हद तक बीजाई का नुक्सान पूरा कर सकते हैं।

मैं अन्त में इस प्रस्तवा का समर्थन करता हूं कि भारत सरकार से यह रिक्वैस्ट की जाए कि जहां कहीं से भी बिजली अवेलेबल हो, किसी न किसी तरीके से, इस बीजाई के समय में जमींदार को बिजली सप्लाई करने के लिए कुछ दिनों के लिए दूसरे सूबों से ज्यादा से ज्यादा बिजली लेकर हरियाणा को दी जाए, ताकि हरियाणा जिस तरह पहले आगे बढ़ता रहा है, उसी

तरह आगे बढ़ता रहे। इन भाब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव का एक बार फिर पुरजोर समर्थन करता हूं।

उपाध्यक्षाः चौधरी चांद राम जी, आप बोलिए।

(इस समय कई सदस्य बोलने के लिए खड़े हुए)

उपाध्यक्षाः टाईम थोड़ा रहता है, क्योंकि मिनिस्टर साहब ने 12.35 पर बोलना है।

चौधरी राम लाल वधवाः डिप्टी स्पीकर साहिबा, मेरी एक प्रार्थना है। मैंने एडजर्नमैंट मो ान दिया था, उसके जवाब में मुझे यह कहा गया था कि कल सदन में इस सम्बन्ध में प्रस्ताव आ रहा है और आप उस पर बोल लें, परन्तु अब आप मुझे टाईम ही नहीं दे रहीं।

उपाध्यक्षाः चौधरी चांद राम जी, आप दस मिनट के लिए बोल सकते हैं।

Ch. Ram Lal Wadhwa: The time of the sitting mya be extended.

Deputy Speaker: It is upto the House to extend the time.

सिंचाई एवं विद्युत मंत्री (श्री बनारसी दास गुप्ता): पहले तो बोलने वाला कोई था ही नहीं, हम तो कोई बोलने वाला ढूंढ रहे थे, परन्तु आपमें से कोई भी सदन में हाजिर नहीं था।

चौधरी राम लाल वधवाः हम तो उस वक्त आ गए थे, जब गुलाब सिंह जी बोल रहे थे।

श्री बनारसी दास गुप्ताः मैं तो उस वक्त की बात कर रहा हूं जब हाउस ने दोबारा मींट किया।

चौधरी चांद रामः डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं जल्दी ही खत्म कर दूंगा। मैं दस मिनट से भी कम टाईम में खत्म कर दूंगा।

उपाध्यक्षाः ठीक है आप बोलिए।

चौधरी चांद राम (बबैन–अनुसूचित जाति): इस रैजोल्यू ान में हमे कोई आपति नहीं है कि हरियाणा सरकार को यह सिफारि ा की जाए ि वह भारत सरकार को यह प्रार्थना करे कि वह हमें कोश दे, खजाना दे, पैसा दे ताकि हम अपने स्टेट में बिजली का उत्पादन ज्यादा कर सकें। आज हरियाणा में बिजली की कैसी स्थिति है यह सब को पता है। चीफ मिनिस्टर साहब के ऐलान करने के बावजूद कि 8 दिन तक इंडस्ट्रीज को बिजली नहीं मिलेगी और खेतीबाड़ी करने वालों को बीजाई के लिए बिजली मिलेगी, बिजली नहीं मिल पाई है। इस बारे में मतभेद रूलिंग पार्टी में ही है। (व्यवधान)

श्री बनारसी दास गुप्ताः अगर हम 'न' करें, तब ही तो मतभेद होगा।

चौधरी चांद रामः वे यह कह रहे थे कि इस घोशणा पर अमल नहीं किया गया। (व्यवधान) इस बात का तो आप फैसला कर लो कि उसके मुताबिक बिजली मिली है या नहीं। मैं आपकी लड़ाई नहीं करवाना चाहता। मेरे से पहले बोलने वाले साथी ने एक बात औश्र क्लभ। उन्होंने अभी यह कहा कि अगर चीफ मिनिस्टर साहब जाति तौर पर कोि ा ा करें, तो फन्डज भी मिल सकते हैं, पैसा भी मिल सकता है, तो इसका मतलब यह हुआ कि या तो चीफ मिनिस्टर साहब ने जाति तौर पर कोि ा ा की ही नहीं, और की है तो क्या कारण है भारत सरकार इकसे लिए मानी नहीं है .....

यह हमारे लिए एक मुइम्मा है कि रूलिंग पार्टी यह कहती है कि जाति तौर पर यह कोि ा ा करते तो पैसा मिल जाता। 1966 के कम्पोजिट पंजाब के जब हम पंजाब का हिस्सा थे, उस वक्त के आंकड़े हैं, ये आंकड़े मैंने स्टेटिस्टीकल ऐब्स्ट्रैक्ट आफ हरियाणा से लिए हैं। उस वक्त टोटल पर कैपिटा कन्जैम्प ान 107.60 थी। वह इंडिया में हाइऐस्ट थी, सबसे ज्यादा थी। बिजली की जनरे ान में भी कम नहीं थे। पापूले ान के हिसाब से लगाएं तो उसमें पर–थउजैन्ड के हिसाब से जनरे ान 144.265 दिया हुआ है। उस वक्त हमारी पोजी ान यह थी। हम सारी कंटरी में टाप पर थे। उस समय 4–5 महीने पंडित भगवत दयाल का राज्य रहा, उनके बाद राव बीरेन्द्र सिंह की हकूमत आई और फिर राश्ट्रपति की हकूमत आई, और आज पिछले छः साल से

चीफ मिनिस्टर चौधरी बंसी लाल का राज्य देख रहे हैं, जो मैं समझता हूं कि अपने आपको एक मजबूत चीफ मिनिस्टर गिनते हैं। मेरा कहना यह है कि मजबूती का फायदा पुलिस से पिटवाने, लोगों को दबाने में नहीं होना चाहिए। मजबूती का फायदा लोगों के कल्याण में लगाना चाहिए। जम्हूरियत में वही मजबूत है, जो अपनी भाक्ति लोगों के कल्याण में लगाता है। वरना पुलिस की मजबूती क्या है ? उनके पास चार आने की गोली है, उसे उनसे चलवा दो। अगर आज सारा वि लेशण करें कि पिछले छह सालों में हम कहां पहुंचे हैं तो आज हालत यह है कि, सारा रिकार्ड मौजूद है, हम रोज अखबारों में पढ़ रहे है, कहीं इंडस्ट्री को आठ दिन के लिए बिजली बन्द है, कहीं दो लाख ले–आफ हो गए। कहीं किसान कह रहे हैं कि बोने के लिए बिजली नहीं मिलती। अगर पूछा जाता है तो कह देते हैं कि नीचे से पानी निकाल रहे हैं, उसको 60 हजार यूनिट बिजली की लाईन दी है। कभी कहा जाता है कि लिफ्ट इरीगे ान की नहरें जवाहर लाल नेहरू कैनाल इंदिरा कैनाल चक्रवर्ती कैनाल बनाई जा रही हैं, उनके लिए बिजली चाहिए। आज आई.सी.एस. अफसरों के नाम पर योजनाएं बनाई जा रही हैं ओर वहां बिजी दी जा रही है। आज सारी स्टेट के अन्दर बिजली की कमी है। डिप्टी स्पीकर साहिबा, दूरदि ता तो इसी में है कि अगर चीज थोड़ी है तो उससे ज्यादा से ज्यादा उठाया जाए। परिवार का मुख्या भी अगर परिवार का ख्याल रखकर चलता है तो वही अच्छा होता है। यह नहीं कि जो मुख्या हो वह किसी खास जगह या खास आदमी को फायदा पहुचाए।

जो अफसर हैं वे भी बेचारे क्या करें ? कल ही हमने देखा कि पुलिस वालों के हाथों में काले झंडे पकड़ा दिए .....

सिंचाई एवं विद्युत मंत्री (श्री बनारसी दास गुप्ता): आन ए प्वायंट आफ आर्डर, इस प्रस्ताव पर बोलते हुए कोई सम्मानित सदस्य यह बोल सकता है कि पुलिस के हाथ में काले झंडे थै, पुलिस से पिटवाए, ला एन्ड आर्डर ठीक नहीं है। इस पर मैं आपकी व्यवस्था चाहता हूं ? (व्यवधान) इन बातों का इस प्रस्ताव से क्या सम्बन्ध है ?

चौधरी राम लाल वधवा: आन ए प्वायंट आफ आर्डर, डिप्टी स्पीकर साहिबा, इन बातों का सम्बन्ध बनता है। आर्थिक व्यवस्था को सुधारने के मुकाबले में ये क्या कर रहे हैं, यह बताना पड़ेगा। (व्यवधान)

Deputy Speaker: It is not your duty. You cannot decide whether he is speaking on the resolution and whether he is speaking wrongly or rightly. It is for me to decide.

चौधरी चांद राम: डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं प्रस्ताव पर ही बोल रहा हूं ....

Deputy Speaker: You please speak on the resolution. You were not speaking on the resolution earlier.

चौधरी चांद राम: डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं उसी बात पर आ जाता हूं। मैं कह रहा था कि पंडित भगवत दयाल के

जमाने को उठा लीजिए, राव वीरेन्द्र सिंह के जमाने को उठा लीजिए, उस वक्त यह महसूस किया गया कि पानी से जो बिजली पैदा होगी, वह कम पड़ेगी क्योंकि पानी से जो बिजली पैदा होती है, उसमें कई रूकावटें आती हैं, जैसे हो सकता है कि बरसात कम हो, तो बिजली कम पैदा होगी। मौसम का क्या भरोसा है। उस वक्त यह सोचा गया कि हाथ में एक चीज ली जाए कि थर्मल प्लांट से बिजली पैदा की जाए। हमारें दे ा में काफी कोयला है। आज तेल की भी दे ा में खोज की जा रही है। आज तेल की मंहगाई के कारण यह सोचा जा रहा है कि कोयले से तेल पैदा किया जाए। आप दूसरे मुल्कों जैसे योगोस्लाविया, चैकोस्लोवाकिया को देखिये वहां थर्मल बिजली पैदा की जाती है। उनके यहां दरिया नहीं हैं, परन्तु उन्होंने थर्मल बिजली पैदा की। उस वक्त हमने फरीदाबाद, पानीपत और यमुनानगर में थर्मल प्लान्ट्स मन्जूर किए थे कि इन तीनों को प्रॉयरिटी दी जाएगी, लेकिन इस सरकार ने इन प्लांट्स को डिले किया या बनाए ही नहीं (घंटी) इसलिए मैं कहता हूं कि इन्होंने यह क्राइम किया है। आज की सरकार ने हरियाणा की जनता के साथ क्रम किया है। इसलिए मैं आपसे कहता हूं कि आज भी देर नहीं हुई है। आप तीन महीने के अन्दर नहर बना सकते हैं, पुल बना सकते हैं तो थर्मल प्लांट का काम क्यों नहीं हो सकता ? इन भाब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

(इस समय कई सदस्य बोलने के लिए खड़े हुए)

चौधरी राम लाल वधवाः डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं सिर्फ दस मिनट बोलना चाहता हूं .....

चौधरी पीर चन्दः मुझे भी डिप्टी स्पीकर साहिबा, दो मिनट दीजिए .....

Deputy Speaker: If the hon. Minister can spare some time, I can give it to the other members.

श्री बनारसी दास गुप्ताः अच्दा जी, दो चार मिनट के लिए दौलता साहब बोल लें।

चौधरी राम लाल वधवाः मेरी एडजर्नमैंट मो ान भी डिस अलाऊ कर दी गई और कहा गया कि इस प्रस्ताव पर बोलने के लिए मुझे मौका दिया जाएगा। परन्तु अगर मुझे बोलने के लिए टाईम नहीं दिया जा रहा है तो मैं एज ए प्रोटैस्ट वाक आउट करता हूं।

चौधरी पीर चन्दः डिप्टी स्पीकर साहिबा, अगर मुझे भी टाईम नहीं मिलता है तो मैं भी वाक आउट करता हूं।

(इस समय चौधरी राम लाल वधवा और चौधरी पीर चन्द वाक आउट कर गए)

चौधरी प्रताप सिंह दौलता (बेरी): डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं आपका ध्यान इस अमर की तरफ दिलाना चाहता हूं कि यह एक नै ानल प्रौबलूम है। पिछले दिनों एक किताब निकली है,

सारे जरनलिस्ट यह जानते हैं। उसमें लिखा है कि 1981 में जब हमारी आबादी बढ़ जाएगी तो सबसे ज्यादा कमी दुनियां में बिजली की होगी और उस समय इस नै ानल प्रोबलम का सालू ान मैं कहता हूं कि वही होगा जो हरियाणा ने किया है। इस काम में हरियाणा ने लीड दी है। उस किताब में लिखा है कि जब यह सवाल पैदा होगा कि बिजली अनाज पैदा करने के लिए दी जाए या इंडस्ट्री के लिए दी जाए, क्योंकि इंडस्ट्री भी बहुत जरूरी है, तो दिलेर हकूमतें यह फैसला करेंगी कि कौन सी चीज को प्रायरिटी दी जाए। मैं कहता हूं कि इस काम में हरियाणा ने लीड दी है और एक हफ्ते के लिए इंडस्ट्रीज की बिजली बन्द कर दी है और एग्रीकलचर को फर्स्ट प्रैफैंस दी है। यह दूसरी बात है कि एग्रीकल्चररिस्ट्स को भी बिजली कम मिल रही है। ऐसा करके हरियाणा ने हिन्दुस्तान के अन्दर लोड दी है। इसके लिए मैं खासतौर पर कन्सर्न्ड मिनिस्अर श्री बनारसी दास को बधाई देना चाहता हूं क्योंकि अगर कोई जमींदार मिनिस्टर होता तो यह कहा जाता कि जमींदारों को फेवर करने के लिए ऐसा कर रहा है।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, मेरा दूसरा प्वायंट यह है कि हम इमीजिएट लांग टर्म के लिए जो मांग रहे है।, सैन्टर से , वह हम कोई 'खैरात' नहीं मांग रहे वह तो हम डिजर्व करते हैं। चौधरी चांद राम जी ने अपने ख्यालात के मुताबिक जो उनके ख्याल से जरूरी है, अपनी राय दे दी लेकिन मेरा एक ही आर्गूमैंट है कि यह स्टेट जोकि सैन्टर के लिए कभी प्रौबलम नहीं रही है, वह

स्टेट जो कि ऐग्रीकल्चर के लिए जुटी हुई है, इंडस्ट्रीज में जुटी हुई है, कन्स्ट्रक ान के कामों में जुटी हुई है, जिस स्टेट में फासिस्ट अपना कदम नहीं जमा सकते, हम उन्हें चैलेंज से कहते है किसी रूप में, किसी भाक्ल में, वह आना चाहें, आएं, हम दलेरी से फासिस्टों का मुकाबला कर रहे हैं। जहां पर इतना पीसफुल डिवैल्पमैंट हो, उस स्टेट का सैन्टर के रैवेन्यू पर ज्यादा हक है बनिस्बत उस स्टेट के, जो अपनी एनर्जी जाया करते हैं, जो अपनी असैंबलियों को तोड़ते हैं, जिनको कोई काम नहीं, कोई काज नहीं, बच्चों को स्कूलों के कालेजों के बाहर ले जा रहे हैं। उनकी खराब मिट्टी कर रहे हैं। उनके मुकाबले में उस स्टेट को कंस्ट्रक्टिव कामों के जितना भी फन्ड सैन्ट्रल सरकार दे, उतना थेड़ा हैं, यह 'खैरात' नहीं, उसमें मुल्क की लीड का सवाल है, मैंने बातें तो डिप्टी स्पीकर साहिबा और भी कहनी थीं, क्योंकि मैं प्रौमिज का पक्का हूं, ढाई दो मिनट मिले, आध एक बाकी हैं, इसके आगे मैं यह अर्ज करूं कि जहां तक ताल्लुक है कर्व करने का, इसके लिए भी हरियाणा गवर्नमैंट को फैसला करना ही पड़ेगा कि जो लग्जूरियस गुडज के लिए फरीदाबाद और दूसरी जगहों पर लाइसेंस देते हैं, या किसी और जगह पर भी देते हैं, वह इंडस्ट्रीज तो बेसिकनीडज के लिए नहीं हैं, उसको तो आप बे ज्ञक परमानैन्टली इलैक्ट्रिसिटी देनी बन्द कर दें लेकिन डिवैल्पमैंट के कामों के लिए इसकी सप्लाई ज्यादा कर दें। इसके बाद मैं एक ही कुटे ान देकर बैठ जाना चाहता हूं। जो कामरेड लैनिन ने बिजली की रा ानिंग के बारे में रूस में बात की उस

वक्त उन्होंने यह कहा था कि कम्युनिस्ट लिट्रेचर के मुताबिक भी यह है कि बिजली और पीपल्ज डैमोक्रेसी साथ–साथ चलती है। डिप्टी स्पीकर साहिबा, जहां बिजली नहीं वहां पीपल्ज डैमोक्रेसी सरवाइव नहीं कर सकती। तो मेरी अर्ज यह है कि बिजली का करन्ट दाने पैदा करने वाले के लिए रिजर्व हो, दाने वालों से बच जाए तो बे ाक इंडस्ट्रीज के लिए दें। लग्जरीज इडस्ट्रीज के लिए हमको कर्व करना ही पड़ेगा। सैन्ट्रल सरकार को आज नहीं कल, कल नहीं परसों इसके लिए कुछ न कुछ करना ही पड़ेगा।

राव दलीप सिंह (कनीना): डिप्टी स्पीकर साहिबा, यह जो प्रस्ताव यहां पर जेरे गौर हैं, मैं इसकी तह दिल से ताईद करता हूं। आज हम हरियाणा प्रान्त में खेती की पैदावार के लिए इंडस्ट्रीज को बढ़ावा देने के लिए और दूसरे तरीक्की के कामों के लिए बिजली की मांग कर रहे हैं, इसमें दो राए नहीं है। मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि हरियाणा में, भारत वर्श में एक सैक ान ऐसा है, जोकि अमीरों की जिन्दगी बसर करना चाहते हैं, बिजली से अपने कमरों को ठण्डा रखनाा चाहते हैं, अपने कमरों को गर्म रखना चाहते हैं, उन्हें पंखों की हवा भी चाहिए, हीटर भी चाहिए, उन्हें रैफरीजीरेटर चलाने के एिल बिजली चाहिए। डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं इन से ईश्र्या नहीं रख्ता मगर मैं इतना जरूर कहूंगा कि वे लोग अपने सीने पर हाथ रखकर देखें। कुछ ऐसे भी वर्ग भारतवर्श में हैं, हरियाणा में हैं, जिनको बिजली की जरूरत है, केवल खु ाहाल रहने के लिए नहीं बल्कि भूख से बचने के

लिए बिजली की जरूरत है। बैकवर्ड एरियाज में डिप्टी स्पीकर साहिबा, ऐसे–ऐसे किसान हैं, जिन्होनें बैंकों से पनी जमीन को गिरवी रखकर कर्जा लिया हुआ है। अपने जेवरात रखकर कर्जा लिया हुआ है और वह इतना हैवी ब्याज देते हैं। अगर आज उन्हें बिजली न मिलेगी, तो ने वे अपने ऊपर जो कर्जा है, उसको वापिस कर सकेंगे, और न ही वह अपनी रहन जमीनें छुड़ा सकेंगे। तो मैं यह कहूंगा कि यह बिजली बैकवर्ड एरियाज के लिए बहुत जरूरी है, ऐसे आदमियों के लिए जरूरी है, जो अपने आपको भूख से बचाना चाहते हैं, जो अपने आपको कहत से बचाना चाहते हैं, जो कहत के साथ लड़ना चाहते हैं, जो अपने घरों को उजड़ने से बचाने के लिए बिजली चाहते हैं मैं केवल इन्हीं भाब्दों के साथ सरकार से कहूंगा कि हमें सैन्ट्रल गवर्नमैंट से कहना चाहिए कि इसके लिए ज्यादा से ज्यादा फण्डज दें, ज्यादा से ज्यादा पावर दें, ताकि हम ऐसे लोगों को बचा सकें, जो बिजली के न मिलने से बहुत दुखी हैं।

सिंचाई एवं विद्युत मंत्री (श्री बनारसी दास गुप्ता): उपाध्यक्ष महोदया, आज एक बहुत ही महत्वपूर्ण गैर–सरकारी प्रस्ताव पर चर्चा चल रही है, इसके लिए मेरे दोस्तों ने बड़े अच्छे, रचनात्मक तथा उपयोगी सुझाव पे ा किए हैं, इसमें कोई सन्देह की बात नहीं है कि आज के युग में किसी भी प्रदे ा या दे ा के विकास के लिए या उसकी खु ाहाली के कलए, जो सबसे बड़ा साधन हो सकता है, वह बिजली हैं बिजली का सबसे ज्यादा

उत्पादन बढ़ाने के लिए, उसका उपयोग करने के लिए हमको अपने प्रदे ा के अंदर सब प्रबन्ध करने होंगे और मैं यह बात बड़े फख्र के साथ ओर बड़े गर्व के साथ कह सकता हूं कि हरियाणा सरकार ने 1968 के प चात् इस बात को पूरी तरह से पहचाना है कि बिजली के बिना प्रदे ा को आगे ले जाना ऐसा ही होगा जैसे बालू रेत से तेल निकालने का प्रयत्न करना। अतः सरकार ने यह नि चय किया कि बिजली का ज्यादा से ज्यादा फैलाव किया जाए और यहां तक फैलाव किया जाए कि जिससे गरीब से गरीब लोग इसका फायदा उठा सकें। मेरे बहुत सारे दोस्त इस बात की नुक्ताचीनी करते हैं कि तमाम देहातों के अन्दर हरियाणा सरकार ने जो बिजली फैलाई, उसमें वेस्टेज हुई, बहुत कुछ गड़बड़ हुई, वे लोग यह भी एतराज करते थे कि यदि सरकार के पास पूरी पावर नहीं थी, तो क्या जरूरत थी, गांवों–गांवों में बिजली पहुंचाने की और खम्भे लगाने की। मैं उनसे यह कहना चाहता हूं कि बिजली का उपयोग करना किसी एक वर्ग की मनोपली नहीं है, कि हम भाहरी लोगों को ही केवल बिजली देते रहे। जैसे राव दलीप सिंह जी ने कहा कि कुछ लोग बिजली का उपयोग अपने कमरों को ठण्डा तथा गर्म करने के लिए करते हैं। वे इसलिए बिजली का उपयोग करते हैं कि उनके घरों में रैफ्रीजरेटर चलते रहें, तो इस प्रकार से जो सुख व लग्जरी के साधन हैं, उन सब को ही हम बिजली जुटाएं यह कोई उचित नहीं है, यह कोई न्याय संगत बात नहीं है – (विघ्न) – चौधरी चांद राम जी, मुझे तो आप किसी भी वर्ग में भाामिल कर सकते हैं, यह कोई व्यक्तिगत बात

नहीं है, इसलिए मैं यह निवेदन कर रहा था कि यह बिजली का उपयोग देहातों में बसने वालों किसान भी कर सकते हैं, खेतों में टयूबवैल चलाकर पानी दे सकते हैं, फसलों को पैदा करने के लिए उनको भी बिजली मिलनी चाहिए ओर इसीलिए हरियाणा सरकार ने भात–प्रति ात रूरल इलैक्ट्रिफिके ान की है। परन्तु हमें इस बात का खेद है कि इस वर्श वर्शा बहुत ही कम हुई है। प्रकृति के ऊपर किसी का कोई बस नहीं है। इस वर्श खासतौर से दुर्भाग्य की बात यह है कि पहाड़ों पर जो भाखड़ा का कैचमैंट एरिया है, उसमें भी बड़ी कम वर्शा हुई है। भाायद पिछले 20–30 सालों में इतनी कम वर्शा पहाड़ों पर कभी नहीं हुई, जितनी कि इस वर्श कम हुई है, उसका नतीजा यह हुआ कि गोबिन्द सागर के अन्दर, पिछले साल इन्हीं दिनों में 1675 फुट पानी था और इस वर्श 1565.46 फुट पानी गोबिन्द सागर में है अर्थात् 109 फुट पानी पिछले साल की तुलना में इस वर्श गोबिन्द सागर में कम है। उपाध्यक्ष महोदया, आप जानती हैं कि हमारा हरियाणा प्रदे ज्ञ पानी से पैदा होने वाली बिजली पर ज्यादा निर्भर करता है। भाखड़ा में बिजली पैदा होने की बात गोबिन्द सागर के पानी के स्तर पर निर्भर करती है तो गोबिन्द सागर में पानी स्तर 109 फुट नीचा होने के कारण बिजली की पैदावार वहां बहुत कम हो रही है, इसीलिए हमारे हिस्से में भी बिजली कम आती है। इसके इलावा आज भी गोबिन्द सागर के अन्दर पानी का इन–फलो 4121 क्यूसिक है, जबकि पछले साल इन्हीं दिनों में 8162 क्यूसिक था। तो आप खुद अन्दाजा लगा सकते हैं, उपाध्यक्ष महोदया कि

कितना कम इन–फलो गाबिन्द सागर के अन्दर है ? जब इन फलो कम होगा तो पानी भी कम रिलीज होगा और अगर पीन कम रिलीज होगा तो बिजली उत्पादन भी कम होगा पिछले दिनों उपाध्यक्ष महोदया, हमारी केन्द्र सरकार जो ऊर्जा मंत्री श्री पंत जी हैं, वे भाखड़ा पर आए थे, मैं उनके साथ वहां गया। मैंने देखा कि भाखड़ा के दोंनेा किनारों पर लैफ्ट साइड पर और राइट साईड पर 5–5 यूनिट बिजली पैदा करने के लिए लगे गए हुए हैं। हमने ये दोनों स्टे ान देखे, सिर्फ एक–एक यूनिट्स दोनों स्टे ानों पर काम कर रहे थे, बाकी चार–चार आइडल खड़े हुए थे।

मैंने वहां इंजीनियरों से पूछा तो उन्होंने बतलाया कि पानी का रिलीज कम होता है इसलिए हम केवल एक यूनिट ही चला पाते हैं, सब नहीं चला पाते। उसका नतीजा यह है कि आज हमें भाखडा़ से कम बिजली मिल रही है। उपाध्यक्ष महोदया जैसा कि पूर्व वक्ताओं ने अभी सदन के सामने बतलाया कि हमारी प्रतिदिन 75 लाख यूनटि बिजली की जरूरत है जिसमें से 35 लाख यूनिटस तो हमें खेती के लिए चाहिए, 30 लाख यूनिटस उदयोग धन्धों के लिए चाहिए और 10 लाख यूनिटस हमें जनरल परपज के लिए चाहिए जिसमें कामर्ियल और डौमेस्टिक भी आ जाता है। इसके विपरीत जो बिजली आज हमें मिलती है वह हैं भाखड़ा कम्लेक्स से 20 लाख यूनिटस। उपाध्यक्ष महोदया, मैं आपको एक बात और बता दूं कि अभी पिछले दिनों भाखड़ा मैनेजमैंट बोर्ड की

मीटिंग हुई जिसमें उन्होंनें यह नि चय किया है कि 15 दिसम्बर से हम बिजली की जनरे ान और कम कर रहे है यानी एक सौ लाख यूनिट की बजाए 80 लाख यूनिटस प्रतिदिन पैदा करेंगे। उसका नतीजा क्या होगा ? हमारा हिस्सा और कम हो जाएगा। 15 दिसम्बर के बाद हमें 20 लाख यूनिटस की बजाए सिर्फ 14 लाख यूनिटस मिलेगी। पंजाब को आजकल वहां से 30 लाख यूनिटस डेली मिल रही है। 15 दिसम्बर के बाद उनको भी 20 लाख यूनिट मिलेंगे। तो कुल मिलाकर आज हमें 41 लाख यूनिटस बिजली मिलती है तो 75 लाख यूनिटस के मुकाबले में 41 लाख यूनिटस से कैसे काम चल सकता है ? आप अन्दाजा लगा सकते हैं कि आज हमारे प्रदे ा में बिजली का कितना बड़ा भारी संकट है ?

(इस समय श्री अध्यक्ष पदासीन हुए)

चौधरी चांद रामः इसलिए तो हम पूछते हैं कि सोते क्यों रहे ?

श्री बनारसी दास गुप्ताः सोते तो आप रहे हैं, आपके हाथ मे 20 साल यह काम रहा है। मैं आपको बताऊंगा ..... (विघ्न) ....

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके सामने निवेदन करना चाहता हूं कि जिस वक्त की यह बात करते हैं उस वक्त कितने उद्योग धन्धे थे कितने ट्यबवैल्ज थे इन्हौंने बीस साल में अपनी हकूमत

के अन्दर बीस हजार ट्यूबवैल्ज को बिजली दी। (Interruption by Ch. Chand Ram)

Mr. Speaker: No interruption like this.

श्री बनारसी दास गुप्ताः अध्यक्ष महोदय, मैं केवल यह बात निवेदन करना चाहता हूं कि जब सत्ता इनके हाथ में थी, ये मिनिस्टर भी रहे, डिप्टी चीफ मिनिस्टर भी रहे, एम.एल.ए. भी रहे और डिप्टी मिनिस्टर भी रहे। उन दिनों हालात यह थे कि बिजली सिर्फ उन्हीं लोगों को मिलती थी जो भाहरों में बसते थे या जो पंखा चला कर सोते थे। या ये कारखानों वालों से साज–बाज करके उनको बिजली देते थे। मैं इनको बताना चाहता हूं कि हमने उस गांव के अन्दर बिजली भेजी है जहां के लोग कभी ख्याल भी नहीं करते थे कि यहां बिजली आएगी। आज हरियाणा प्रान्त तमाम हिन्दुस्तान में सबसे आग है, जिसके गांव–गांव में आज बिजली मौजूद है। मैं आपके द्वारा इन भाइयों को बतलाना चाहता हूं कि पिछले दिनों तमाम हिन्दुस्तान के इरीगे ान ऐंड पावर मिनिस्टरों की कानफ्रैंस दिल्ली के अन्दर हुई, मुझे सब मिनिस्टर्ज मिले, उन्होंने मुझे बतलाया कि तुम बड़े भले वक्त के अन्दर सारे देहातों में बिजली ले गए। अगर आज हम इलैक्ट्रिफिके ान करना चाहें तो बहुत मु कल बात है, क्योंकि एक तो कीमतें बहुत बढ़ गई हैं और दूसरे सामान मार्किट के अन्दर अवेलेबल नहीं है। कई बार ये लोग बड़े चीखते हैं, बड़े इल्जाम लगाते हैं और गांवों में जाकर जलसे करते हैं कि बिजली लगाने में इतना लूटकर सरकार खा

गई। तो मैं उनको बतनाना चाहता हूं कि तमाम हरियाणा के गांव–गांव में बिजली पहुंचाने के लिए 47 करोड़ रूए की बचत कर दी और दो साल पहले बिजली लगाने से जो ट्यूबवैल चले उनसे एग्रीकल्चर में कितना फायदा हुआ, वह अलग। फिर भी, ये लेाग हमारे ऊपर इल्जाम लगाते है। आज वही काम करने के लिए हम 60 करोड़ या 80 करोड़ भी खर्च करें, तब भी वह काम न होता, क्योंकि आज सामान नहीं मिलता है। अभी मेरे भाई राव दलीप सिंह जी ने कहा कि गरीब किसानों ने अपने जेवर गिरवी रखकर पैसा लिया और नलकूप बनाए है लेकिन उनको कुनैक ान नहीं मिले, यह ठीक बात है, क्योंकि बाजार में सामान ही नहीं मिलता। फिर भी हमारी पूरी कोि ा ा है कि हम ज्यादा से ज्यादा किसानों को खेती के लिए कुनैक ान दें। अगर आज हम रूरल इलैक्ट्रिफिके ान करते तो क्या चौधरी चांद राम के पास कोई कारखाना लगा हुआ है, जहां से हम सामान लेते। ये आज हमारी नुक्ताचीनी करते हैं, मैं इनको बतलाना चाहता हूं कि बिजली के क्षेत्र के अन्दर जितना भाानदार रिकार्ड हरियाणा ने स्थापित किया है, उतना दुनिया के अन्दर किसी ने नहीं किया – (तालियां) – (विघ्न) – इसके अलावा स्पीकर साहब, जैसा कि अभी मैंने आपके सामने निवेदन किया कि हमें 75 लाख यूनिटस की डेली जरूरत है, लेकिन मिलती है हमें 40 लाख यूनिटस। और ज्यादा बिजली प्राप्त करने के लिए हमारे बिजली बोर्ड के अधिकारी, उसके चेयरमैन, सरकारी अधिकारी और हमारे मुख्य मंत्री जी खुद इतनी दिलचस्पी लेते हैं कि जहां कहीं से भी हमें किसी तरह पावर मिल

जाए वह हासिल की जाए। राणा प्रताप सागर नाम का जो परमाणु भाक्ति संयंत्र लगा हुआ है, उसमें हमारा कोई हिस्सा नहीं है, लेकिन फिर भी अब तक हमने वहां से 382 लाख यूनिटस बिजली प्राप्त की है। इसी तरह बदरपुर और इन्द्रप्रस्त से हमने 365 लाख यूनिटस अपने हिस्से से ज्यादा प्राप्त किए हैं। इसके अलावा हम पूरी कोि ा ा करते रहते हैं कि जहां से भी हम बिजली प्राप्त कर सकें, वहां से प्राप्त करें और अपने किसानों केा उद्योग धन्धों वालों को सबको बिजली दें। अभी पिछले दिनों हमारे सामने एक बड़ा भारी संकट आया। रबी सोईंग सीजन चल रहा था, लेकिन बारि ा नहीं हुई मौनसून फेल हो गया। किसान बेचारा चीख रहा था कि अगर मुझे बिजली मिल जाए, तो मैं गेहूं बीज लूं। हमने एक नि चय किया कि आठ दिन तक तमाम हरियाणा के उद्योग धन्धों को बन्द करके सिर्फ किसानों को बिजली दी जाए और उसके ऊपर हमने अमल भी किया। सिर्फ कारखानों ही नहीं, हमने यह भी नि चय किया कि पांच बजे से साढ़े सात बजे तक तमाम मार्किट की बिजली बन्द की जाए, ताकि किसी तरह से किसानों को बिजली अधिक दी जा सके। कराखानों के मालिक बड़े–बड़े उद्योगपति जिन के कि लम्बे हाथ है, वे कहीं पहुंच सकते हैं, एजीटे ान भी हो सकता था, लेकिन हमने प्रवाह नहीं की हालांकि फैक्ट्रीज के उत्पादन से सरकार को भी टैक्स के रूप में आमदनी होती हैं, हमने उस घाटे को बर्दा त किया, हमने एजीटे ान के खतरे का सामना किया, लेकिन हमने किसान को बिजली दी। इसलिए दी कि सामान से पहले हमें रोटी चाहिए। अभी थोड़े

दिनों की बात है सूरजपुर की सीमेंट फैक्ट्री के मालिक मेरे पास आए उन्होंने मुझे कहा कि सीमेंट बड़ी जरूरी चीज है, लेकिन आप सीमेंट बनाने के लिए भी बिजली नहीं देते, हमारा कारखाना बन्द पड़ा है। मैंने उनसे कहा कि यह ठीक है कि सीमंट जरूरी चीज है, लेकिन आप यह बताएं कि हमें पहले सीमेंट चाहिए या रोटी ? सीमेंट के बिना हम साल भर रह सकते हैं लेकिन रोटी के बिना नहीं रह सकते। इतनी बात सुनकर वे मान गए कि ठीक है रोटी पहले जरूरी है। तो हमने एक इतना बोल्ड डिसीजन लिया, किसान को बिजली दी जा सके।

Mr. Speaker: The House stands adjourned till 2.00 P.M. on Monday the 2nd December, 1974.

13.00 बजे

(The Sabha then adjourned till 2.00 P.M. on Monday the 2nd December, 1974.)